MSS No. 440 Subject Purana

Name of MSS Jaimun Purab Ashamegh

Author

Period Folios 344

Script Devnagiri Source Bala Sahai Shastri, Alwar, Rajasthan

Missing Folios



जैमिनी अश्व मेध्य पुराण, सीस राम द्वारा १४ माघ, १८८५ वि० लिपित ॥
१७२ पत्रक ॥ ल० भ० ११ पं० प्र० पृ०

ह० लि०

440

जैमिनीय अश्वमेध
भाषा (पद्य)
(मनीरामकृत)



॥श्रीगणेशायनमः॥श्रीपरमात्मनेनमः॥अथजैमुनपुराणअस्वमेधलिख्य
ते॥ ॥विरध चौपई॥मनीरांमगुरचरनवंदि संतननसिरनाऊं॥साधक्रपाजो
करहु हरषिहरिकेगुनगाऊं॥गवरीनंदसुमरिसारदासुमरिसिहांऊं॥मात
पितापदनवुंआपनईहमनाऊं॥दयादिष्टिकविकरहुमेजुमतिकोवडुमं
दा॥सवकीअग्यापायकरहुआनंदसवछंदा॥२॥एमननाहिसुमरिकिनले
हसकलतिनकियोपसारा॥छितिअकासअपअग्निपवनताकेआधारा॥
विधितिनअग्यापायतिनसवब्रह्मंडा॥सप्तदीपअरखंधमेरगिरअरनव
षंडा॥३॥ब्रह्माइंद्रमहेसमेससवहीसुरदेवा॥सारदनारदसुमरिथके
पायोनहिभेवा॥चौदहभुवनत्रिलोकफिरतहैताकीआना॥चतुरासीच
हुंषांनिसकलपूरनभगवांना॥४॥तहांप्रवलभयेअसुरअमुदीअग्याटा
री॥सुरसंतनदुषदेषिभएतवहरिअवतारी॥धृतधरिमीसरीरखंधसो

जै०ग्र० वेद उधारे ॥ कछिव धार धरि दुहूं संषासुर मारे ॥ ५ ॥ धरि कूरम मन्द्र वनाय
पीठि मंद्राचल धार्यौ ॥ फनपति नेता कियो मेरु सौं संथ्यन रवार्यौ ॥ धुनि
धरि सूकर रूप पैठि पाताल विदारी ॥ असुर मारि हिरण्याछि दाढ धरि क्षित
नी धारी ॥ ६ ॥ भक्ति पैज तिन करी तिहां नरसिंघ वपु धार्यौ ॥ जन प्रहलाद
उवारि हां कि हिरनाकुस मार्यौ ॥ फिरि वांवन वपु धारि [illegible] तहि सो छ
नवार्यौ ॥ वलि छलि धरिणि तातालि राज कौ कारि जमार्यौ ॥ ७ ॥ व [illegible] भार
त वग्रवनि देषि भृगपति वपु धारे ॥ छत्री छय करि तिहां ग्रवनि को भार उ
तारे ॥ प्रगट भयो रघुवंस भयो दसरथ ग्रह रामा ॥ रावणादि सव मारि सुरके
सारे कामा ॥ ८ ॥ प्रगट भये जदुवंस दुष्ट कंसासुर मार्यौ ॥ द्विज सराप कौ पा
रि श्राप जदुवंस उधार्यौ ॥ वुद्ध रूप तिन धारि जग [illegible] न के काजा ॥ अपनी
मति उनमान न चले हैं सव ही राजा ॥ ९ ॥ फिरि कलि [illegible] मांहि प्रगटि हैं दु

1
2

छनरेसा ॥ धरि है कलकीरूप दुष्ट कौं रहै न लेसा ॥ ऐसे प्रभु कौ गाय पाय है
जो नर देहा ॥ सीष सिराइ जाय छाडि सब विषै सनेहा ॥ १० ॥ ऐसे प्रभु कौं से
इ कियौ तिन भक्ति सनेहा ॥ प्रगटि देव की कुषि गए जसुमति नंद ग्रेहा ॥ वि
ष न करन कौं कंस दुष्ट पूतना पठाई ॥ पान पयोधर करत पूतना हू गति पाई
॥ ११ ॥ बाल रूप श्रीकृष्ण देषि सकटासुर मार्यो ॥ त्रिणावर्त वछ अरिष्ट वि
ना सुर धरनि पछार्यो ॥ भुज बल वरनै कवन इंद्र कौ गर्व निवार्यो ॥ [illegible]
षि लई ब्रज सघ रनि पांन गोवर्धन धार्यो ॥ १२ ॥ वछ हरन विधि कियै ऐसे
ही परगट कीने ॥ वेहि वछ वे हि बाल जाहि मातन सुष दीने ॥ षड. वड.
लेव ड. लेव जाय केसी तहां मारे ॥ दावानल करि पांन सकल ब्रज बाल उ
बारे ॥ १३ ॥ जमलार्जुन [illegible] तारि त्रणाव्रत कौं गति दीनी ॥ दुष्टनि बारन भए
निकंदन सब ब्रज कीनी ॥ एक काली सिर निर्तकी [illegible] फिरि ठांम पठायो ॥

जै० २
4

विद्याधरकेगर्वदेषितहांविषोउपायो ॥१४॥ कंसकुटलमनकपटतहांग्र
रूपठये ॥ सुनतउठेमुसकायजायतिनकेसंगधाये ॥ हत्योकुवली-
यापीरतहांमष्टकमलमारे ॥ हरिचाणेपारउधारिकेसगहिकंसपछा
रे ॥१५॥ करतकुलसोंहेततहांकुवजागतिपाई ॥ उग्रसेनवसुदेवदेव
कीवंदिछुडाई ॥ ऐसेप्रभुकौंविसरिकहोकेसीगतितेरी ॥ एमनमूढ
अजानसीषसुनिसंतनकेरी ॥१६॥ भएस्वारथीआपआयअर्जुनर
थहांक्यो ॥ जेजोधनकेगर्वछारसोसवकरिराष्यो ॥ द्रुपदसुताकीपे
जपारितहांचीरवधास्यो ॥ करुनामयकरपकरिजायदुसासनमा
स्यो ॥ पांडवदीनसरापतहांदुर्वासाआए ॥ भक्तिहेततैकालतवैमन
मेउठिधाए ॥ साकपत्रतहांपायसवनकीयहगतिकीनी ॥ भयोम्र-
आनउदरआसिकासवमिलिदीनी ॥१७॥ ऐसेप्रभुकौंविसरिमूढ

नरकंसुषपावै॥ चिंतामणि तजि न हां देषि कोडी कौं धावै॥ भये
भारथ कुरषेत देऊ रिके सुत राष॥ तोरि गयंद घंटि जाय तिन उपरि ना
षै॥ १९॥ जजोधन कौ गर्व देषि पांडव वलदीनु॥ भक्ति हेत कै काजि
आयसि लि भारथ कीनु॥ जब कीनो असमेद पांडसुत असमु करायो॥
अर्जुन रछक सेन सहत जा संगि पठायो॥ २०॥ अर्जुन ... भयो भार
... कै ध्यान विचारयो॥ जहां तहां तन काल भक्ति ... जसा ...॥
यह लोसमुझि अजान जात है मन विषादेहि॥ राषि ... सो ... मप्रन
है भक्ति सहि॥ २१॥ दोहा॥ बषता वा लिक दास सों वा त्यो अधिक स
नेह॥ वे अहित वे वैसन व ... क जीव दो देह॥ २२॥ तहां ... एक रु
षि थोक हो भि ... तिहास॥ जे मुनि कृत असमेद कौ ... वालक
दास॥ २३॥ समनि मैं के नहि संसकृत वाचन कौं ... ॥ वो ले वा

जै०
२
6

लरुशासन: यह भाषा करिलेहु ॥ २४ ॥ भक्ति हेतु रघु कारने करियेयह उपगार ॥ जे मुनि कृत ग्रम भेद कों बरनौ करि विस्तार ॥ २५ ॥ मम मति ग्रल्प ग्र जान हूं कैसें बरन्यों जाय ॥ गुरगनेस सारद तिहु ग्रब मो हि करहु सहाय ॥ २६ ॥ कवित्त ॥ चरनन को चेरो हूं ग्रधेरो मेरो इ हिं कीरो कहत हो करजोरे ही यदेहु लासकी ॥ जे मुनि कृत ग्रसमे रमाषा व लने रै मानत मैं हुं ग्रास एक तुम्हारे ग्रकास की ॥ जैसैं व नगायो जैसें रीजिये वता इ मोहि तो हाये कला जते रे चरनन के वासकी ॥ मोसे मूढ चरन की ये है केते मात तुम दैबो ज्यों सहाय कीनी कवि काली दासकी ॥ २७ ॥ चौपई ॥ ग्रब तु सुनु कथा सुर ज्ञाना ॥ कहूं कथा मो मति उनमाना ॥ महा भारथ के पर्व ग्रने का ॥ जन मे जय नृप किरो च ए ॥ सभा जोरि वैठे नृपत्त हां ॥ ग्रहोत व वे की जे मुनि जहां ॥ २८ ॥ जनमेजै नृप कियो ड

न्हास ॥ जैमुनि कौं एछौ इतिहास ॥ श्रोता जनमेजै नरपाल ॥ वक्ता जैमुनि करतक हाल ॥ २९ ॥ जनमेजय उवाच ॥ जैमुनि कथा कहौ समझाय ॥ हमरे वडे जुधिष्टिर राय ॥ राज पाय तिन लह्यो संतोष ॥ अरका विधि तिन मे द्यो दोष ॥ ३० ॥ सब भ्रातन मिलि कै जस लियो ॥ वडो जग्य अस मे धाकियो ॥ सो यह कथा कहो समझाय ॥ मेरे मन के संसै जाय ॥ ३१ ॥ जैमुनिरुवाच ॥ विरध चौपई ॥ सुनु जनमेजय राजा या प्रसंग तौ होय ॥ तुम्हारे पुरन काजा ॥ सभा जोरि कै राय ॥ जुधिष्टिर व्यास बुलाए ॥ समै पाय के तहां वेगि व्यास जु सिधाए ॥ राजासन मुषि आय व्यास की अस्तुति कीनी ॥ पानि जोरि पाय लागि वहुरि परिकरमा दीनी ॥ राजासन मुष होय व्यास कं आसन दीनू ॥ सन्मुष ही कर जोरि राय पर वपूछेन कीन्ह ॥ ३२ ॥ राजोवाच ॥ करि भारथ कुरषेत हम परलोक विगारे ॥ भयावं दश्रादि गुरदेवो

7

जै०
५
8

सबहीमारे। तिनकौपापकौनविधिकटिहै। कहोगुसांईयहप्रसंगतु
मकहोमोहिनितचिंताधाही। ३४। अबसुधरैयहलोक। लोकपरलोकीर
तिहोई। मनकेमिटैसंदेह। कहोकिनगाथासोई। विषमकरणद्रोणविन
यहमरजादकरांउं। अतिअगाधअपराध। जांनिमैंवहोतडरांउं। ३५।
अडिल। राजकाजसबछाडिअरनिमैजायहूं। यसुषसंपतिदेषिम
हदुषपायहूं। अबैअ..समझायकहौकैसीकरूं। करौतनपस्याता
पमैनकिनसोंडरौं। ३६। दोहा। बातकरतपंडपुत्रकेदेषिसजलभ
येनैन। वचनराजसौंकहतहैव्यासपर्मसुषदैन। ३७। व्यासउवाच।
सोरठा। अहोजुधिष्ठररराय। मनमैंचिंताजिनकरहु। द्रैहौंधर्मबताय
मिटैसकलअपराधतुव। ३८। दोहा। करौजगपअसमेदरूपहोयसुफ
लसबकाम। आगेत्रेताकेविषैजगपकियाश्रीराम। ३९। चौपई। अब

यह जग्य करो हो राजा ॥ ताते होय तुम्हारो काजा ॥ कीरति होय बहोत जग मांही ॥ अरु जुग जुग यह कथा चलाही ॥ ४० ॥ तुम्हारे भईया वंध कहां वै ॥ लेहु बुलाय कहे मै आवै ॥ मुनि के वचन ब्यास के ऐन ॥ बहोरि राज बोलत है वैन ॥ ४१ ॥ राजोवाच ॥ सोरठा ॥ दरब नमेरे आहि ॥ कहो जग्य के सैं बने ॥ देहुं डंड नहि काहि ॥ पिरजा की रछ्या करे ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ ब्यास परम सुष दैन को बोले वचन प्रवीन ॥ कहि उपाय अस मेध को नृप को अति सुषदीन ॥ ४३ ॥ ब्यास उवाच ॥ चौपई ॥ सुनहु राज मारुत जिग्य किये ॥ कितो यक हेम दिजन कों दियो ॥ कितो यक असो रह्यो का कहिए ॥ जा कंचन को रा जा ग्रहीऐ ॥ ४४ ॥ जुधिष्ट्र उवाच ॥ चौपई ॥ वह कंचन विप्रन को कहिए ॥ ता को क हो कोन विधि लहिए ॥ ब्रह्म अंस कहो के सैं लेहुं ॥ उद्दि कीउ दिक फेरि कहा देहु ॥ ४५ ॥ ब्यास उवाच ॥ चौ० ॥ सुनहु राजा एक वचन हमारो ॥

जै० यहभासंसयमेटनहारो॥ प्रिथीसकलविप्रनकौंदई॥ विप्रनपैरक्ष्याहि
५ भई॥ ४६॥ सोकंचनतुमलेऊमगाई॥ असमेधाजग्यकरियेराई॥ श्रीपरस
१० रांमविप्रनभूदई॥ नोफिरिफेरिकौंनलिषिलई॥ ४७॥ जोकोईवस्तथनी
विनरहै॥ सोवहसकलराजकीकहै॥ तवयहसुनेंव्यासकेवैना॥ राजा
जीउरउपज्योचैना॥ ४८॥ जैमुनियोवाच॥ तवयहवातराजमनधरी॥
वहुरिव्याससौंचूरुउरकरी॥ राजोवाच॥ कसैजग्यहोयसोकहौ॥ मेरेमन
संदेहहिदहौ॥ ४९॥ वरनीविप्रकितेककीजै॥ कौनवरनकोघोरालीजै॥
व्यासोवाच॥ वोलेव्याससुनहुराजा॥ सवअसमेधवनाउंसाजा॥ ५०॥
वरनीवीसहजारवनावो॥ सावकारनएकघोरालावो॥ अरदछिना
कोसुनियोंवात॥ एकविप्रकेदीजेहाथ॥ ५१॥ एकएकघोराएकएक
हाथी॥ एकएकरथदहहउभसाथि॥ एकसहस्रगाउतहांदीजे॥ सव

समीपकंचनकीकीजै ॥ ५२ ॥ सेरअढाइसरत्नसमरपै ॥ कंचनभारअ
ढाईअरपै ॥ इतनौदानएककौदीजै ॥ याविधिसबकीपूजाकीजै ॥ ५३ ॥
दोहा ॥ ता दिनअस्वकैंछाडिएकरिएइतनौंदान ॥ भोजनविधिवहो
भांतिसौंकरिएवहोसनमान ॥ ५४ ॥ चौपई ॥ सेतवरनकौघोराकहि
ए ॥ पीरीश्ङ्छजासकौलहिए ॥ अरुनकांनकेलहौनुरंगा ॥ सावकरनके
कहिऐरंगा ॥ ५५ ॥ चैतमासमावस्याहोई ॥ जादिनअस्वकौंछाडेसोई ॥
वरसएकलौंफेराकरै ॥ जहांतहांपीछेलागेफिरै ॥ ५६ ॥ वातीलादि
करतहैतहां ॥ एकहजारगऊदेजहां ॥ जोजाकीरछ्याकौंफिरै ॥ सोअ
सिधारवरतकौधरै ॥ ५७ ॥ राजोवाच ॥ केसोअसिधाराव्रतकहिए ॥ का
विधिकरैकोनविधिरहीए ॥ व्यासउवाच ॥ त्रियापुरषएकठेपोढै ॥ ता
उपरिउपरैनावोढै ॥ ५८ ॥ काढिषड्गदोउनविचधरई ॥ विषयकां

जै० ६ 12

मनामननहिंकरई॥ याविधिवरसदिनालौंरहिऐ॥ सोवह्असिधाराव्रतकहिऐ॥५९॥ कनकपत्रगस्वकेसिरकीजे॥ तैमेग्रपनोजमलीषदीजे॥ याविधिग्रारंभकरऊनरेस॥ फिरिहैघोरादेसविदेस॥६०॥ जोकोईन्प्रपतिपकरैताहि॥ जासोंघोरालेऊछिनाहि॥ ग्रोरडंडताकेसिरकरै॥ याविधिपीछेलागेफिरै॥६१॥ सफलग्रवनियांजीतीजाय॥ सोनदकेसोजग्यकराय॥ विजभीषमकोयीतेयाहि॥ केमारुतनन्यजीतीताहि॥६२॥ ग्रैसेजग्यएकसतकीनें॥ नववनजायइंइपदलीनें॥ सवप्रथमीकोजीतीजाय॥ सोईजग्यकरतहेराय॥६३॥ जुधिष्टरउवाच॥ सोरठा॥ ग्रजुव्याससुनिलेय॥ दर्वनहीघोरानही॥ नहीसहायककोय॥ विनाएकश्रीकृस्नजी॥६४॥ ग्रजुव्यासकेसैजिग्यहोई॥ ग्रसग्ररदरवनदीषैदोई॥ ग्रोरसहाइककोउनाही॥ भीमथकेहैमारथमाही॥६५॥

करनपुत्रकहीएहषकेत॥ वालकहैबेरहेअचेत॥ एकघड़ीका
कोसुनमानु॥ मेघवरनवालकहीजानु॥६६॥ श्रीकृस्नकपासुभार
थजीते॥ सोछेरहेदारिकानचीते॥ कृस्नदारिकाकहिएइरि॥ हम
हूतिनकैनहीहजूरि॥६७॥ तवतहांराजाभीमवुलायो॥ भीमसें
निसंमतोउपायो॥ राजोवाच॥ हैहोभ्रातमेएछोंतोही॥ कहोकोन
विधियहजगिहोही॥६८॥ काविधिकटैहमारेपाप॥ याचिंतामेस
वदिनजात॥ भीमसेनउवाच॥ भीमसेनउठिवोलेराय॥ कुंनकंतुम
जगिउपाय॥६९॥ जुधिष्टरउवाच॥ वहोतदर्वचाहितहैभाई॥ कैसेपू
रनजगिकराई॥ अरजेपूरनजगिनहोई॥ तोवहोहासिकरतसवको
ई॥७०॥ सोरठा॥ जितोहमारोराज॥ तितेमाहिदीसैनही॥ सावकरन
सोवाज॥ दर्वनहीवहोहमधरन॥७१॥ नहीकृस्नयाठांव॥ इत्तीसिधि

13

जै० सवहीसकल। लैतक्रस्नकौनाव। कदैकोटिग्रआघतहां।। ७२।। चौपई
6 जोश्रीक्रस्नसमीपहिहोई। तोदेषैकहीएकहासोई। विनाक्रस्नज
14 गिकैसेंहोय। यहहीसैवूझौकिनकोय।। ७३।। कवित्त।। भीमसेनोवाच।।
ग्रर्जुनकोरथहांक्योराजजूतुम्हारैकाजतुम्हारेहीकाजिहरिभार
थमैभिरेहैं। वेदेहीक्रस्नग्रवसहायजगिमाहिकरेंग्रेसेजगिव
नकैग्रनेकउरिधरेहैं। नायककहूभुगतारूजगिकेश्रीक्रस्नदेवति
नकैभरोसैदेषोकेतेकाजसरेहैं। द्वारिकानइरिहेद्रोपदीकीवेरदे
षोग्रंवरधरायोग्रायकैतेंठरकरेहै।। ७४।। दोहा।। भीमसेनकेवचन
उपज्योउरमैचैन। तहांरायप्रछैनकरैवक्रविग्यासमुवैन।। ७५।। रा
जोवाच।। दोहा।। सावकरनममदेसमैनहीसकोनविचार। कहौव्या
ससमझायकेंसकहवेकीवार।। ७६।। दो०।। कवननग्रघोरारहेग्रर

15

कहियतकोदेस ॥ कहौकृपाकरिब्यासजूकेसोनाभनरेस ॥ ७७ ॥ ब्यासउवाच ॥ अरिल ॥ कहीब्याससुनिवात धर्मसुतधरनिहो ॥ मैंकीनें
निर्धार सबनतेभिनिहौ ॥ यहग्रसुमेधाजगि करैकल्यानकौं ॥ सो
तुमसूं मोहिसकलविधांनकौं ॥ ७८ ॥ चौपई ॥ भद्रावतीनग्रकौनां
म ॥ जौवनासराजाकोठांव ॥ दसक्षोहनीसेनहैताकैं ॥ सावकरनक
हियतहैजाकें ॥ ७९ ॥ क्षोहनीप्रमान ॥ नौहजारकीहियतहोहाथी ॥
एकनागकेसौरथसाथी ॥ एकग्ररथसंगिसौअसवारा ॥ एकवाजसौ
पायकलारा ॥ ८० ॥ क्षोहनिएकइतौपरवान ॥ सौदसजौवनासकैथा
न ॥ भद्रावतीनग्रकेईसा ॥ सौसबराजनमाहिजगीसा ॥ ८१ ॥ दसक्षोह
नीरहतहैनहां ॥ इरिदेसमैधाराजहा ॥ सावकरनकौंपवननआवै
ओरबातकीकहाचलावै ॥ ८२ ॥ कानथनहिंतिकोहैनाही ॥ साव

जै० करनयोंहैदलमांही॥सावकरनकोकहीनरेसा॥यामेनहीरूठको
८ लेसा॥८३॥दोहा॥वलरा‌षतहोपंडसुनकोजेजगितउपाय॥यहै
16 जुधिष्टररायसोकहीव्याससमुझाय॥८४॥इतिश्रीमहाभारथेअ
स्वमेधकेपर्वेवर्ननेजैमुनिकृतजगिआगमनोनामअष्टमोध्याय
॥१॥ ॥जैमुनियोवाच॥चौ०॥फिरिजैमुनिकहतहोसाय॥सु
नैकथाकहूसमजाय॥तवतोभीमसेनयोंवोले॥नीकेवचनहियेषो
केबोले॥१॥छंदमोतीदाम॥भीमसेनोवाच॥बोलेहैंभीमसुनुन
रपति॥हूंलायदूंघोराकहतहूंसति॥राजाजोवनासमहावलवंत॥
वडेवडेजोधाहूंओरकहंत॥२॥भुजावललेंहूंसुनुमहाराज॥लेसाव
करनसुधारहूंकाज॥तनकहूसोचकरोजिनराय॥नचिंतरहोजेगु
पालसहाय॥३॥परमेसुरहेतवरोकछुकोय॥सोवातगवस्यग्रचा

नकहोय॥ औरहमैकोएोकहासौंहेत॥ हमभजनराषनहारसुचेत॥ ४॥
हकोदरवातकहीमुनिराय॥ वैनेगीश्रीकृष्णकरैगेसहाय॥ राजाएक
मेरीसुनुकंुनवात॥ नाग्रहविप्रभोजननाहिकरात॥ ५॥ ताकेग्रहवे
दपठैनहिकोय॥ तहांभगवंतकीपूजानहोय॥ करैहरिवासरकोनव
रत॥ उदिकदियेग्रहमाहिधरत॥ ६॥ अतीतकीपूजानकोयकराय॥ न
एजिहैकोइगरीवनीगाय॥ इतेकोदुयाजगएजैनकोय॥ यह सवजो
शेषसुलागिहैमोहि॥ ७॥ यहव्रतग्यामैलीनिहैराय॥ जैराजाकुवा
जहिदेऊनहिआय॥ भीमकीवातसुनीयहराव॥ तहांतवफेरिऊकि
योकहाव॥ ८॥ राजोवाच॥ अडिल॥ सावकरनकौंभीमअग्यानिवकहत
हौ॥ आपजोरहीजावकसेनासहतहौ॥ जोवनासवहौजोरकहतनहेराव
रे॥ तहांनकोईकऊलगतहैदावरे॥ ९॥ अडिल॥ महाकठिनहैगातवी

सुनि लीजिये ॥ जहां सेन है वो होत तहां कहा कीजिये ॥ मम इछ्छ तातइ वहोत रहगी जीव मैं ॥ कहत ग्र के ले जानि पराई सीव मैं ॥ १० ॥ दोहा ॥ यह कथा जे मुनि कहे जन मे जे सुनि लेहु ॥ तब तहां बोले करन मुत मुनी कथा तिन एहु ॥ ११ ॥ ब्रषकेतो वाच ॥ कवित ॥ कहे ब्रषकेत तुम सुनु भीमसेन मेरी मेइ मरो तुम्हारे संग चलो काज मारिहूं ॥ जो वनामराज को मेले हीं वाजतु मग्रागे देषो तुम आगे ना की के तो सेन मारिहूं ॥ भीम बोले पुत्र तुम साची कही सव जानि बाल करु ब्रषकेत के मे तो हिय धारिहूं ॥ भारथ मे करन हम मारे हे तुम्हारे पिता ताते तोहि देषि मेरे लज्या वरि धारिहूं ॥ १२ ॥ दोहा ॥ पुत्र वती जे लगत हो ब्रषकेत मुनि वात ॥ वालक सा तेरी लषत देषत तोहि लजात ॥ १३ ॥ ब्रषकेत उवाच ॥ छंद चोपई ॥ जो हो भीम तुम पुत्र हमारे ॥ करन कुटिल हे तात तुम्हारे ॥ करन कुबुधि

पिता

कीयोउपाय ॥ यनुमहिच्छाडि परसेना जाय ॥१४॥ सोसंग्राम विषेहम
हयो ॥ उनको दोषसकल लागयो ॥ तुम हिच्छाडि परसेना गए ॥
जरजोधन के सेवक भए ॥ १५ ॥ द्रोपति चीर देषित हां हस्यो ॥ कूरस
न्नायत हा उपर कस्यो ॥ बैठे ग्रारि की सभा मझाई ॥ दुसासन वरजेत हां
नाई ॥ १६ ॥ ग्ररवैराठकी छेरी गाय ॥ एकसहस्त्र वनके संगिजाय ॥ ते
सवकरे पापति हिठाम ॥ सुन मुषजूरु कीयो संग्राम ॥ १७ ॥ तुम हि प
ताप तहां वे गए ॥ सुरलोक वैकुंठ हि लए ॥ सो ग्र पजस ग्रजहूय ह
चले ॥ सो मै ग्रव सिमेटि हूं भले ॥ १८ ॥ जो वनासकी सेना मारौ ॥ कारन
किए ग्रपजस हि निवारो ॥ सेन समं इ मथं मो हाथि ॥ लेहुं वाजन तु
म्हारी हाथि ॥ १९ ॥ दोहा ॥ त्रषकेतन गे से कही भीमसेन सौं ग्राय ॥ फि
रि जैमुनि रिषि कहत है सुनि जनमेजयराय ॥ २० ॥ जैमुनिरुवाच ॥

जै० १०। 20

॥दोहा॥ वृषकेतनके वचनसुनि कही वृकोदर एहु॥ अहो घटोतक
लिअतमयह गाथा सुनि लेहु॥२१॥भीमसेनउवाच॥चौ०॥ दुलेघ
डु का पिता तुम्हारे॥ तिनव है। कारिजकिये हमारे॥ वनतो अपनी
पीठि चढाए॥ गंधमादनपर्वतले आए॥२२॥ लै गए तहां के रिजिहां
लाए वहोत भांतिके दुःष मिटाये॥ तातें तुम यह अज्ञाल हो॥ राजा
पीछै ठठेरहो॥२३॥ वृषकेतन अरहम कों जांही॥ सोव करन तो ल्यों ले
आहि॥ मेघवरन तव वोले वैना॥ सुनत वचन उर उपज्यो चैना॥२४॥
मेघवरनोवाच॥ चोपाई॥ अहो गुसांई जो तुम चीन्ही॥ मेघवरन सुन
लीहि कीन्ही॥ दर्वे सोही जो दान हि दीजे॥ जल सो सकल पवित्र हि की
जे॥२५॥ सो ही पुत्र सुं कारिज सारै॥ मात पिता की रछ्या करै॥ सेवा करि
सुभ संगति रहै॥ सो सपुत्र सव को उकहै॥२६॥ श्री रामचंद्र की संगति भ

ई॥ रजलगिसिन्नामोछिकौगई॥ भद्रावतीनग्रकौंफिलिए॥ जहांभी
वमोऊलेचलिए॥२७॥ व्रषकेतऊतहांकरिहैं॥ हममहिपीछिपरि
घौराधरिहैं॥ ग्रवहिराजपैग्रज्ञालीजे॥ ग्रवहीसीघ्रपयानुकीजे॥
२८॥ भीमसेनोवाच॥ दोहा॥ भीमसेननिनवयोंकहीपुत्रधनिहैतोहि॥
चलऊसंगिघटवततुमकहीसकलविधिमोहि॥२९॥ चोपई॥ हम
तुमव्रषकेतलिऊचले॥ भद्रावतीनग्रकौंपिले॥ भद्रावतीपरायो
देस॥ तहांजायकरिहैंपरवेस॥३०॥ जैमुनियोवाच॥ दोहा॥ तवजे
मुनिन्रपसोंकथाकहसकलसमझाय॥ मेघवरनव्रषकेतकीसुन
तभीमहरषाय॥३१॥ ग्रैसेवचनवालकनकहे॥ भीमसेनवहौह
षेतभहे॥ ग्रैसोमतोतवेउनिदीयो॥ ग्ररग्रपनेग्रहग्रावनकियो॥३२॥
व्यासराजसोंग्रायसलीनं॥ निजग्राश्रमकोंग्रावनकीनं॥ व्यासमुं

जै०अ०१ ११ 22

निविचारनलागै ॥ जुरिकैराव जुधिष्ठर आगै ॥ २३ ॥ जिनसकल आपदा इरिग माई ॥ तेदुरि द्वारिकालगनै नाई ॥ श्री कृष्ण बिनाकहो कोन सहाई ॥ ऐसै सब ही चिंत कराई ॥ २४ ॥ जैमुनिउवाच ॥ राजा कृष्ण ध्यान मन धारे ॥ तिन आगै वहो कारिज सारे ॥ अहो त्रलोकी नाथ गुसांई ॥ कृष्ण देव तुम्हरी सरनाई ॥ २५ ॥ द्रुपद सुता की रछ्या करी ॥ दुसासन आगै उवरी ॥ ऐसै मेरी रछ्या करो ॥ मोमन की चिंता सब हरो ॥ २६ ॥ सुमरन ध्यान यौं लागो ॥ कृष्ण द्वारिका सउठि भागो ॥ आपन भए पंडपुर मांही ॥ द्वारपाल सौं बोलसुनाही ॥ २७ ॥ द्वारपाल राजा ढिग आयो ॥ श्री कृष्ण आय बोनाय सुनायो ॥ द्वारपाल राजा सैं कही ॥ श्री गोपाल आए हैं सही ॥ २८ ॥ सुनत तहित हो सकल उठि धाये ॥ श्री कृष्ण देव के दरसन पाये ॥ कर दंडवत तब हो तन मन हरषे ॥ मन कुसुम पेअंसुतवर

षे॥४९॥ तवतहांभीतरकौंलैआए॥ कनकसिंघासनपैपधराए
एजाकरिअचिरजकौंभए॥ देषीअर्धरात्रिआगए॥५०॥ द्रोपतीउ
वाच॥ चौपई॥ तहां द्रोपतिहसियोंकह्यौ॥ अहोपंडवकहांअचिर
जभयो॥ अजोंधनवनमाहिपठाए॥ अर्धरात्रिदुरवासाआए॥५१
अर्धरात्रिश्रीक्रस्नपधारे॥ आयतुम्हारेकाजिसारे॥ तवकक्रुगा
ढभक्तमैपरे॥ तवहरिआयसहाइकरै॥५२॥ जैमुनियोवाच॥ चौ०
जैमुनिजनमेजयसंकहै॥ राजासुनितिनकेसुषयहै॥ तहांअस्तुति
द्रोपतीकरी॥ श्रीगोविंदहीएमैधरी॥५३॥ सुनतवीनतीपूरनभए॥
पंडवजनकेसवदुषदहे॥ राजजुधिष्टरसवसुषलह्यौ॥ तवतहांव
चनक्रस्नसोंकह्यौ॥५४॥ जुधिष्टरउवाच॥ विरयचौपई॥ अहोक्र
स्नजुध्यानतुम्हारोअवहीकीनु॥ सुफलभयोममकाजआयतुम

जै०अ० १२ 24

दरसन दीनु ॥ अहौ त्रलोकीनाथ अवै हम यह विचारी ॥ जगि असुमेधा
करन कौं अंछ्या भई हमारी ॥ ४५ ॥ श्रीकस्नोवाच ॥ विधि चौपई ॥ क
हत क्रस्न सुनु बात जुधिष्ठर सुनियो लोई ॥ कठिन जगि असमेद कहौ कै
सो विधि होई ॥ यहै मतौ तुमै कवन दयो सो कहौ नरेसा ॥ ने मति केव
होहीन वुधि कौ कहुन लेसा ॥ ४६ ॥ भीमसेन यह कही हो यह मेरै म
न आवै ॥ सो वै देषो राय वात मैं कछू न पावै ॥ भीमसेन नो राय देषो व
ऊ षाय हि जांनै ॥ जाके राष्ठि सनारि मतै कौ कहा पिछानै ॥ ४७ ॥ मदार
हे सुमरारि नाहि कैहो को वुधि आवै ॥ अर्जुन ऊकी सुन ऊं मतै की वात
न पावै ॥ अरयो रेकी र [illegible] त कहौ को नेपै होई ॥ राक्षस गंध्रव देव मनिष
पकरै जे कोई ॥ ४८ ॥ इतेन सौ रछ्या करि है असकी जै कोई ॥ सुनि ऊं जुधि
ष्टर राय जगि तव करि है सोई ॥ त्रेता जुग कै विषै राम असमेधा कीनु ॥

अस्वकी रछ्या करनत हो हनवंत संगि दीनु ॥ ४९ ॥ महाबली हनवंत जा
सपै रछि न होइ ॥ स्वारथ वीर लै गये अश्व जानत सव कोई ॥ ताते श्रृष्ठज
राय अश्व रछ्या को करि है ॥ महाकठिन यह वात नइ तो संसय जिय परि
है ॥ ५० ॥ अरु जानत हौ राय अर्जुन रछ्या कौ जेहै ॥ जे कोइ इन द्वीप क
रि साधि हो मीत वढै है ॥ को इम महावली जो जाय अस्व कों अपने ग्रेह ॥
वार वार यह रहत कहुं मो मन संदेह ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ कथा कृष्ण जो सें
कही सुनहु युधिष्ठर राय ॥ महाकठिन अस्वमेध जगि ताकौ कौन उपा
य ॥ ५२ ॥ इति श्रीमहाभारथे अस्वमेदके पर्व वनने श्रीकृस्न युधि
ष्ठर संवादे जैमुनिकृत जैमुनि राजजनमेजय संवादे तृतीयो
ध्यायः ॥ ३ ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ दोहा ॥ यही कथा जैमुनि कही
सुनहु राजपरवीन ॥ भीमसेन मुनि कै कथा हरि कौं उत्तर दीन ॥ १ ॥

जै०भ्व० १२ 26

भीमसेनोवाच॥ सवया॥ सांची श्री कृस्न कही तुम ऐसी जु ऐसी ही बात कहे हम मन माने॥ कीनी है या तंनेक की मोहन वेद वसो सम लोक हरा जो जाने॥ सो सब बात है आप ही मेर तुम्हारे ही पेटि त्रिलोक समाने॥ ब्रह्मादि ईश्वरादि ब्रह्मंड सबै जर मात समंद्र है वर तोने॥ २॥ दोहा॥ पर्वत आदि सुमेर है सब ब्रह्मंड समाय॥ ऐसो कोपे है सो प्रभु ह महि वि तात्य॥ ३॥ तुम जकहीं किया रहसी भीमसेन के मोन॥ एवी कही गुपाल तुम न्रप जो मोत सकोंन॥ ४॥ जो मो तीताकी सुनारानि नपैसिर ताज॥ स सुर तुम्हारे जांव वंत राहि सजन को राज॥ ५॥ मछ कछ तुम ही भए भए वाराह सरूप॥ वांवन वपु तुम ही धर्यो तुम ही हो जदुभूप॥ ६॥ एतो नीके लगत है तुम ही को महाराज॥ और को नकी सक्ति पनु जिनकी ए एसा ज॥ ७॥

तुमजकहीसोभईः रहनसुसरकै सम॥ सोकैसेजानेकहोंः कहाप्र
तेकोनाम॥ ८॥ छीरसिंधतेउपजीः कमलाकरिपरगाम॥ सो प्र द्
धंगागवरीः नहांतुम्हारोवास॥ ९॥ सोरठा॥ सोतुमकहीमुरारि॥ सो
तुमहीमेहैसवै॥ ओगेरलसंथमारि॥ कितेरानजीलेप्रनु॥ १०॥ चौ
पई॥ तातेजगिकरिएजगनायक॥ भुक्तातुमहीहोहसहायक॥ अ
समेधाजगिहोहहमारे॥ आपश्चानकआयपधारे॥ ११॥ अ और ति
तुमदरसनदयो॥ सोसवजगिनकौफलभयो॥ तातैवातसवैहमल
ही॥ हमारोजगिहोयहैसही॥ १२॥ ज्योंप्यासोपुरषवहुतडुषपावे॥
जंतुजाकौकोउपानीलावे॥ अटकोगउकीचमैअैसे॥ देषिधनीनिरवा
रेजेसे॥ १३॥ अैसेहीहमआनिसम्हारे॥ सोचदोषसवगएहमारे॥ य
हीकथाजेमुनिरिषकहे॥ जनमेजेमुनिकेमुषलहे॥ १४॥ श्रीकृस्न

जै०
१८
28

उवाच ॥ छपै ॥ भीमसेन के वचन सुनत हरि अति सुष मानेय ॥ कही भी
म तुम धनि आप पुनि कृस्न बषानेय ॥ हम सुष पायो अब सि तुम्हारे ब
चन सुनत सब ॥ सो तुम हूं एक वेद उठो मिलि भेटि मोहि अब ॥ वचन
सुनत परसंन भए उ सुष पायो मम बहोत हिय ॥ वृकोदर बूझै तुम हि
क्यों सुमेर राजा करिय ॥ १५ ॥ चौपई ॥ क्यों अस भेद करत है राजा ॥ जो ते
क हैं तुम्हारै काजा ॥ अरजानत हम भार थकीए ॥ ताको दोष आप
सिर लिए ॥ १६ ॥ भई या संग सहोदर मारे ॥ भीषम द्रोण करन दै सारे ॥ सो
यह जानि भयो संताप ॥ गुरजन मारि कही हम पाप ॥ १७ ॥ एसव पाप
कटन कै नाय ॥ तातैं कीजै जग्य उपाय ॥ पाप हमारे हाथि ही दीजै ॥ म
न के सोच दूरि करि लीजै ॥ १८ ॥ भीमसेनोवाच ॥ महाराज तुम थोरे दी
जे ॥ सोतन हां अनत गुनों करि लीजे ॥ पाप कहा तुम्हे देवा लायक ॥ दी

जे पुनि तुम्ह सुष दायक ॥ १९ ॥ दीजे पुनि व हैं त सुष होय ॥ पाप लेस कछु रहै न कोय ॥ जगि न के फल तुम्ह हि मुरारी ॥ हम हि टहल वा ग्य ग्याकारी ॥ २० ॥ तुम हि जगि के नायक स्वामी ॥ कृस्न भीम ए वाते भई ॥ २१ तुम हि सकल के अंतर जामी ॥ जैमुनि उवाच ॥ जनमेजय सं जैमुन कही ॥ कृस्न भीम ए वातै भई ॥ २१ ॥ राति भई भोजन कों गए ॥ पंडवकृस्न एं ठे भए ॥ रजनी गई वीहांन भयो ॥ भीमसेन को ग्राय सद यो ॥ २२ ॥ दोहा ॥ भीमसेन के संग भए: मेघवरन हंषकेत ॥ चले नग्र भद्रा वती: सावकरन कै हेत ॥ २३ ॥ चौपई ॥ नमसकार तिन इंद्र मिलि कीनु ॥ कृस्न युधिष्ठर ग्राय स दीनु ॥ ग्य ग्या लेनमाते पैं गए ॥ कुंती मालई वासे दए ॥ २४ ॥ ए ल ड वा जो नी कै राषे ॥ षाय ग्य घा य माते यों भाषे ॥ मे टिथ नं जैय सों यह कहीयो ॥ राजा कीर छ्या मैं रहीयो ॥ २५ ॥ श्री कृस्न

29

जै० १५ 30

देवकोमुषहमदेष्यो ॥ महाप्रसंनजोंनिहमपेष्यो ॥ तातेंग्रबमद्रा वतीजैकु ॥ जोवनासघोरालेग्रेकु ॥ २६ ॥ दोहा ॥ श्रीगोबंदअनाथपतेः सुनकुराजनुमएह ॥ भीमकहीयावातमेः कछुवनकरकुसनेह ॥ २७ ॥ चलेभीममद्रावतीःतजिहथनापुरगाव ॥ दिवससम्रमारगलगेः नवपकुंचेतिहिठाम ॥ २८ ॥ छंदभुजंगी ॥ चलेभीममद्रावतीनग्र धाये ॥ लगेसप्तदिनमाझितिहिठामआये ॥ तहांदेषिश्रीनग्रमन वहोनहर्षे ॥ तिकुंचित्रकोपुत्रीहोयनिर्षे ॥ २९ ॥ देषिनग्रकेद्वा रकीवंदमालं ॥ लगेहीरजोंहारमुकतानजालं ॥ कहुंकनकेक लसवधामधामं ॥ कहुंकुमकेचोतराकरिकामं ॥ ३० ॥ तहांदेषि जुवनासकेनिजग्रवासा मनुग्रापहीकीएहैश्रीनिवासा ॥ कहुं रतनमनिजटितजोहारपरषे ॥ तहांधातकेदर्पकहोकोननिरषे

॥३१॥ कहूं देषिमदमस्तमातंगघूमे॥ कहुं देषिमल्लमस्तअषाड झूमे॥ कहुं देषिऐरायनिसानवजै॥ मनुआयअषाढकेइंद्रगजै॥ ३२॥ याेदेषिकैनअसुषवहोनपाए॥ नवैकननेकेपुत्रसौंयाेकहाए॥ भीमसेनोवाच॥ अहोहषकेतरीयजामवीत॥ अवकहाकरिहैसकोहोनचीते॥ ३३॥ पेषियेपुत्रअववाजआवंत॥ जावाजकैसंगिवहोजोधध्यावंत॥ देषिसोहनीएकरक्षिपालआए॥ वडवडेवल्लवंतराजापठाए॥ ३४॥ अरदेषियेवाजकौंराजराषंत॥ योंकृपननिजवित्तकोंनाहिराषंत॥ योंपुत्रपैमानजलवारिपीवंत॥ योंराजइहवाजिकोंदेषिजीवंत॥ ३५॥ तोल्योंतहांपर्वतनजायलुकिहूं॥ नवेआइहैवाजतवआयझुकिहूं॥ तुमआइयोदोउंजनमोपीछें॥ तातेइहिभाविविचारइछें॥ ३६॥ दोहा॥ याविधिघोरासायहैःक

31

रिए यह विचार ॥ बाट भीम देषन लगे ॥ अनुसाल की बार ॥ ३६ ॥
इति श्री महाभारते अश्वमेध के पर्व वर्नने जैमुनि राजा जनमेजै संवादे जैमुनि कृत भीम वाक्य नो नाम त्रतीयोध्याय ॥ ३ ॥ ॥
जैमुनियोवाच ॥ जैमुनि रिषि यों कहत है ॥ सुनहु नरेसुर राय ॥ हषकेत तहां भीम कौ ॥ संन्याद नवताय ॥ १ ॥ हषकेतोवाच ॥ छंद बेषरी ॥ हषकेत कही भीमसं ॥ सुनि भीम भुजारे ॥ हम दोय सोहनी देषि है ॥ आए असवारे ॥ दल दमसो हन्निराव कै ॥ कहियन है सारे ॥ सावकरन कै संगिकौं ॥ ता मैं दोय धारे ॥ २ ॥ दोय सोहने मे भीमसे तिं ॥ तुम अग्या पाउं ॥ हषकेतन मम नाम कहि जैमारि भगाउं ॥ तनसैं गंगादर ससैं ॥ सब ही अग्य भगैं ॥ जै सैं एसब भागि हैं ॥ देषाम मग्गे ॥ ३ ॥ जैपों सूरिज उद्योत सूं ॥ अंधकार मिटे ही ॥ जै सें एसब भागि हैं ॥ जो जलमधि

काई॥ज्यों मुनि[illegible]गोविंदके: वीरेदुषजाई॥ ग्रैसेए[illegible]भागि हैः श्रीकृ
स्नसहाई॥४॥सावधांनकिन होहजू: आरंभ जुधकीजे॥जाविधियोरा
आयहे: सोही विधिलीजे॥ए देषेमंग गवाजिके: वडुसेनाआई॥ अवमो
हि आइसदीजिए: ज्यों जुझकराई॥५॥देषो मातंमतंगआएमदझारे॥
मद गंधकैकारनैः वहौंभवरभवारे॥चकवाचकवीवारधारवहोवो
लसुनावे॥एजलमछीउछलेः असअगमजनावे॥६॥देषोवहौंतउ
तावरैः तिनमेंअसवआवै॥चइं वीरसेनावहीतः ताकेसंगिआवै॥ये
नुडुगधसोवरनहैः असकोकिनपेषे॥वहोनचलतहैभीमसेनः आव
नकिनदेषो॥७॥देषोआगेसरसनीसानपरारे॥सुनडुअवेकिनकान
दैवडुघमनगारे॥ग्रैसीसेनाआयहैः असरछिकमारे॥हमजानत
हैयासहीजुवनासपधारे॥८॥सावकरनकेसंगजुमहाजोधपधारे

जै॰ख॰
७
34

आगे जुधजीते वहीत ताइ छिक आए ॥ ते आगे आगे चलत आव
त है देषा ॥ अवहि भयो दोयजाम दिन नीके करि पेषा ॥ ९ ॥ अवले
जै पीवन आय है वहु संगि तुरंगा ॥ तिनकी गतिलषि है हमै ते आ
वत संगा ॥ कै नाचत आवत तुरंग के आवत जुटै ॥ के वरहास वधे
व होत जैसे सर छुटै ॥ १० ॥ छंद वेषरी ॥ अनेक चाल जलि है तुरंग ॥
ते साव करन के आय संग ॥ ते पीवन पांनी सव मंझारि ॥ तुम देषन
हौ कंूं न अवनि हारि ॥ ११ ॥ तिनकी पद जतत लि पीवत है तोय ॥ पीव
त पानी आहट न होय ॥ ए ब्रषकेत के सुनत वैन ॥ तव कहत वनै यो भी
मसैंन ॥ १२ ॥ भीमसेनोवाच ॥ सुन कंू वात तुम ब्रषकेत ॥ हम आए है
अस्व लेन हेत ॥ मो हि ह्यां न हि रीसत करन वाज ॥ वहु वाधि राषि
है धरहि राज ॥ १३ ॥ कहु भाव करन पीछे जहोय ॥ हम वाज लहे वि

निफिरिहैनकोय॥ जैंा श्री कृष्णभक्ति विनिमुक्ति नांहि॥ ऐसें ही ह
मत्रस्व होन जांहि॥१४॥ जैंा महादेव पूजें न कोय॥ जैंा ऐसें ही स
तहीन होय॥ ऐसे ही हमत्रसवै नक हांउ॥ हथनापुर कें सैमुष
दिषाउ॥१५॥ तव भीमसेन मुनि वृषकेत॥ अस्त्र आवन देषिवनाय
हेत॥ वृषकेतउवाच॥ अहो भीम आयो हे राज॥ तिनकें संगि देषो
व हीत साज॥१६॥ जापी छै हैं वल वंतजोध॥ ए आवत हैं सव करत मो
द॥ आए अमुपर चवरहोत॥ स्वेत छत्र मनुसूर्य जोति॥१७॥ अवित चं
दन करिश्जिताहि॥ अर अग्रधूपत हांहोत आय॥ इन अंतरी छै आये
हे राज॥ तुम देऊ कम सव मरिहे काज॥१८॥ मेघवनोवाच॥ मे ह
तिहो राज अर करिऊं राहि॥ अस्व लेजाऊं पर्वत मझारि॥ नहां मे
घवरन वल देषिवंक॥ कहिं भी व पुत्र जावो निसंक॥१९॥ चौपई॥

35

जै॰स्व॰
१८
36

मेघवरनकौंअगयादई॥जावेपुत्रकौजहोमई॥देषतमेघछायकै
पस्यो॥सवजोधनआगेअस्वहस्यो॥२०॥हहेकारसेनमैभयो॥देषो
वाजकौंनलैगयो॥जवतहांजोधकहैतहैआय॥हमआगेअसुकोलै
जाय॥२१॥यहीविचारकरतसवरहे॥होरसैरिदिसोदिसवहे॥मेघव
रनपैधोरापेष्यो॥मारगजानअकासहिदेष्यो॥२२॥देषतजानसेनए
वध्याए॥मेघवरनकौंवानचलाए॥जोधनमिलिसावकवहौ [illegible]
मारगजानदसोंदिसरोके॥२३॥हृषकेतउवाच॥हृषकेतभीमसोंक
ही॥मेघवरनधंनियेसही॥देषोकौनवरनकीवात॥सवमेंअसुह
रिलीएजात॥२४॥सोरठा॥हृषकेतहीदेह॥मेघवरनएधनिहै॥सु
नऊभीमअवएह॥सवमैवरहासाहसौ॥२५॥पीछैजोधाअनेकमि
लेजातहैनाहिसगि॥मेघवरनहैएकमैअवजैहंदुसरो॥२६॥

छंदषटपद॥ एवातैकहीव्रषकेतधनवानसवारै॥ लैआवधपंडु
चेतहांजहांजोधहकारे॥ अपुरदइनपीछेलगेसंकरजुधाए॥ यो
देष्योसुतकरकेजोधनपरिआए॥ समारोव्रषबोलेतहांअबेजोध
ठाढेरहौ॥ मैआयोजुधमोजकरिअसुसावकरनमोपैलहो॥ ३७॥
व्रषकेतकेवचनसुनिःसवअस्विरजकीयो॥ धनिजुवावएदेतहैःध
[illegible]कौहीयो॥ कहैकोनकेपुत्रहौःएकहतसूसव॥ व्रषनिकटआ
एतहांःलगेजुजकरनसव॥ घेरिएव्रषरविमेघजोंःजुजकरनतहांः
आइए॥ छाइएनभसायकसरसःजोधजोधपरिआइए॥ ३८॥ मनसम
ज्ञायेव्रषकेतःअपनेमनमांही॥ जोवनहीथिरदेहमैःदेहीथिरनांही॥
धनसंपतिजोवनसरसःसवरहैनकोई॥ जोयाजगजीवैसदाःजसराखैः
सोई॥ जसलहिएदहिएसकलःयहीसकलपंडितकहै॥ जाकौजस

जैऽन्य हैजगतमैः सोमरैसदाजीवतरहै॥ २९॥ चौपई॥ जो [illegible] जसहैजग माही॥ जीवतहीवेमरेकहाहो॥ [illegible] ॥ जीतिसक [illegible] जस [illegible] दैऊ॥ ३०॥ भीमसेनोवाच॥ दोहा॥ भीमसेनयोंकह तहैः सुनऊ ह्वषतुमवात॥ महारथीहै [illegible] सवःतुमहिपधादैजात॥ ३१॥ अडिल॥ भीमसेनकेवचनसुन ह्वषतुनिलीजिए॥ महारथीस जो [illegible] जुधकीजिए॥ तुमसम [illegible] माहि [illegible] होयहै॥ पु [illegible] सुफलतुम्हारोहोयहै॥ ३२॥ दोहा॥ परदछिनादैभीमकी क रिदंडवनप्रनाम॥ धनकवानसरसालिकैं चलेकरनसंग्राम॥ ३३॥ छंदभुजंगी॥ पुनिजायकेस [illegible] जुधकरनलगे॥ [illegible] तेकायरनआरल [illegible] भगे॥ सवदेषिहैजोधह्वषकेतजाए॥ वऊह्वषकेऊपरैजोध धाए॥ ३४॥ कितेव्रषकेऊपरैवानमारे॥ तेव्रषनिजवानसौंकारिडारे॥

ऋषवाननिजोधनहोतमारे॥औरनामसोंनागगहिगहिपछारे॥३५॥
म[illegible]वाजमैगाजसेनामंझाई॥तहांलोहूकीनावनदीवहाई॥तहांदेखी
रंगामजुवनासकआए॥जहांपेषिजोधानवहोपरेपाए॥३६॥लोम
नासउवाच॥तुवनासकहीऋषसोंरलीजे॥तुमचढौयारथपरिजु
[illegible]कीजै॥तुमचढौरथमैतवजुद्धहोइ॥यहवातकरीसमरसवकहे
[illegible]॥३७॥दोहा॥वहोरिकहीतुमधनिहो:पूछत[illegible]हेंदेस॥पायया
देफिरतहो:कौंनपराएदेस॥३८॥तुमजकोनकेपुत्रहो:कहातुम्हारो
नाम॥कौंआएपरदेसमे:कहांतुम्हारोठांम॥३९॥ऋषकेतोवाच॥ऋ
षकहौराजासुन[illegible]वैहमेकुलवंस॥कासिभसुरिजकहैं:ममपित
जिनकोअंस॥४०॥चौपई॥कासिभकेसुतसुरिजभए॥ताकेपुत्रकरन
सवकहे॥सोकहिअतहैपिताहमारे॥तेवैभारथमांहिसंघारे॥४१॥

जै॰अ॰ दोहा ॥ हमहि करन के पुत्र हैं हृषकेत मम नाम ॥ हमहि तुम्हारो अश्व सु
२० हस्यो हथनापुर है ग्राम ॥ ४२ ॥ राय जुधिष्टर जगि मै आए हैं सब राज ॥ अश्व
40 सुमेधा जगि के निमित्त हस्यो तुम्हारो बाज ॥ ४३ ॥ इति श्रीमहाभारथे अश्व
मेधके पर्वे वर्ननो जैमुनि कृत जैमुनि राजा जनमेजै संवादे जोधाव
र्ननो नाम चतुर्थो ध्यायः ॥ ४ ॥ जैमुनि उवाच ॥ सोरठा ॥ जैमुनि रि
षकहि ग्रेन जनमेजै राजा मन कु ॥ जोवनास एवैन ॥ हृषकेत सो क
हत है ॥ १ ॥ जोवनास उवाच ॥ सोरठा ॥ जोवनास कही बात ॥ हृषकेत
तुम धन्य हो ॥ बालक हो तुम घात ॥ पहल चोर मैं नाक रूं ॥ २ ॥ चौपई ॥
पहलै तो तुम गहो हथ्यारा ॥ पीछे देषो हाथ हमारा ॥ बालक समा हम दे
षैं तोही ॥ तातैं पहल चोट नहि होई ॥ ३ ॥ हृषकेत उवाच ॥ छंद षटपदः ॥
हृषकेत कहि राजः आज यामै नहि काई ॥ एक बार है पित्ता पुत्र एकै हू होई ॥

पिताहमारैपुत्रःपुत्रलैपिताहिमारै । महासमरकेधर्मेःपछिकोइनाहिन
पारै । यहवैरनहिलघुरूद्धकीःजोवनासमुनिलीजीए ॥ हषकेतकहैरा
जासुनिःपहलचोटतुमकीजिए ॥ ४ ॥ वहोतपुत्रहैरायतुम्हारैःसहीजानै
वडेकहावतराजग्राजितुमसवहीमानै ॥ श्रीकस्नदरसनतेविमुषसति
कहियतहैसोई ॥ हमनितिप्रतिश्रीकस्नदेवकोदरसनहोई ॥ तुमवि
षसरागोविंदसहमनितिप्रतिदरसनलहै ॥ जोषनासवलहीनहोह
षकेतग्रैसंकहै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मोसमरततौवलनहीःजोवनासतुवमां
हि ॥ तातैहमनिरवलनसोंकैसंजुजकरांहि ॥ ६ ॥ छंदवैषरी ॥ तवजोव
नासततहांकरिनिधान ॥ हषर्डपरिमुकेपंचवान ॥ तहांहषकेतग्रःईनग्रं
च ॥ ग्रधफरहीकाटेवानपंच ॥ ७ ॥ तहांतीनवांनहषमुकिएह ॥ तहांरा
जधनषकहिजह ॥ धनकराजतहांलियोहेग्रैर ॥ फिरिवांननकीन्हेंसो

गोर ॥ ८ ॥ वडु सैं हषउ परिमाहि वांन ॥ जुवनास चलाए आन आन ॥
हष वांन चलाए हैं अपार ॥ सव सेन माहि भयो अंधकार ॥ ९ ॥ सव सेन
माहि सूझै न कोय ॥ तहां आप आपल षत हि सोय ॥ जुवनास कहै तस
व जो धर्म्म रूप ॥ हषकेत वनायो रोद्र रूप ॥ १० ॥ नवराज सो कियो पावक अगि
नि ॥ अंधकार मेटि पेषे गिगंनि ॥ हषकेत चलायो वरनवान ॥ तहां घ
नेरे अगिनि केतेज मान ॥ ११ ॥ नव जोवनास रथ चढे हैं आन ॥ तहिं फे
रि चलायो म्रितिवांन ॥ नवरू कोपवन कीन्हैं उसार ॥ तहां वानन कीनु
अंधकार ॥ १२ ॥ सव सेन मोहि भयो अंधकार ॥ तहां हषकेत कीनुं विचा
र ॥ हषकेत चलाए इंद्र वान ॥ नव इंद्र सकति सों दुरे हैं आंन ॥ १३ ॥ नव
हषकेत राजा विसारि ॥ मरछा कीनी वहीं वांन मारि ॥ तहां परे सेन मैं व
षकेत ॥ वऊ वान मारि कीनु अचेत ॥ १४ ॥ जैमुनियोवाच ॥ छंद भुजंगी ॥

तवैहृषकौंदेषिकेभीमधाये॥तहांहाथ्थलेगदावहीजोरआये॥जोधा
नकेतेनहाथीगिराए॥कितेऔरअसवारउंचेउडाए॥१५॥उडेभीम
केओरिजोधानगेसें॥मनोंवायबघ्रकेपाततैसें॥कितेभीमजोधा
नगहिगहिपछारे॥कितेगदाकीधीकसोंजोधमारे॥१६॥कितेपांन॰
सोंफिचिहैफेरिहाथी॥मनुपवनकेपातज्योंजायसाथी॥कितेभीम॰
जोधानगहिगहिउडाए॥तेफिरतआकाससेंमरनपाए॥१७॥आवतें
भीमसवसेनमारी॥जुवनासकेपुत्रसौंरोरिपारी॥तहांसुनतहीविग्र
सवेगिधाये॥जुवनासकेपुत्रजुद्धकरनआये॥१८॥सुवेगउवाच॥
सोरठा॥कहांजायहौभीमःजोधमारिघोराहहौ॥आयेपराईछीव॥
आनकछुतेकहतहौ॥१९॥छंदषटपद॥इतनीकहतसुवेगःभीमपै
गदापछारी॥भीमसेनिलठझेलिःगदापैगदाउतारी॥फिरिसंभारि

जै० २२ १ 44

केउठौ: बांह गहि भीम पछारौ ॥ भीम सेन तन हांगिरि परो: सुवेग हाथी हलकारो ॥ मारि डुं ली अनुवनास सुत सुवेग औसे संक हो ॥ उठे भीम इन नी सुनत सु हाथी सू हाथी दयो ॥ २० ॥ उठे जोध पर जोध: दोउ न मिलि-वाथन वथे ॥ देत हील ज्यूं पील हाथ गहि हाथन हथे ॥ देत धीक व हो धीक जोर जंगि लोटपलोटे ॥ मन हुं महा मल्लभिडे जोर न मनाहि न घटे ॥ साधि है जोर वेउ सारिषे: ग्रनिग्र व निर्ग्रसंग्रो रे ॥ जैमुनि कहै राजा सुनु: जोध जोध दोउ पेरे ॥ २१ ॥ जैमुनिरुवाच ॥ अहो राजा वृषकेतन वे मुरछा संजगे ॥ जोवनास कौं देषि वडु रिसमर कौं लागे ॥ पंच वान गहि सो कि राजा अनुवनासहिं मारे ॥ वृषवान के तेज जाय घरमहि पछावे ॥ देषियराजमूरछित भए अबकेतत हां आइए ॥ गहि ईउ पैरै ना आपकाहिं पं पा पवन उ जाइए ॥ २२ ॥ चौपई ॥ वृषकेत पुनि औसे कही ॥ श्री कृष्ण धा

नमेरैउरसही ॥ ताकोपुनिराजकौंहोई ॥ ज्यूमूरछासोंउठिहेलोई ॥ २३ ॥
नवराआमूरछासोंजागे ॥ हंषकेतसंजेरनलागे ॥ जोवनासोवाच ॥ तुम
होममआननकेदाता ॥ जाननहैसबहीयहबाता ॥ २४ ॥ आधोराजहम
पैलीजे ॥ अवममपुरनपयानोंकीजे ॥ तुमहोहिदयोआंनकोदांन ॥ ताते
तुममोआंनसमान ॥ २५ ॥ कंबसुवेगभीमनहांभरे ॥ सोईजोथामुरछापाय
रे ॥ हंषकेतअरराजसिधाए ॥ भीमसुवेगपरेहीपाए ॥ २६ ॥ दोहा ॥ भीम
सेनरसुवेगतहांःगएहंषअगार ॥ करियथाईजलपानदैःलीनैवकुरि
जगाय ॥ २७ ॥ इतिश्रीमहारथेअसमेदकेपर्ववर्ननजैमुनिजनमेजे
यसंवादेसुवेगमुरछतनोनामपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ॥ जैमुनिउवाच ॥
चौपई ॥ यहीकथाजैमुनिकहदीन ॥ जनमेजेमुनिएपूर्वीन ॥ भीमसेन
ठिगिआएराई ॥ वहोतभांतिअस्तुतिकरांही ॥ १ ॥ जोवनासउवाच ॥

जै०।।स०

ई क्तीन्यपावधारो ॥ जोहमकीएदोसनिवारो ॥ नवअपनैंग्रहकों
२२ लै चलो ॥ मित्रमित्रकहिकैं हिलिमिले ॥ २ ॥ अरएककरोहमारोम
46 लो ॥ भीलसनिकटहमैलेचलो ॥ राजजुधिष्टरलपलेचलिए ॥ यहै
मनोरथवनसौमिलिए ॥ ३ ॥ धनमेराजयेंभाषे ॥ तोकसरेवआगे
लैराषे ॥ नवलहांआनिफिरायेहाथी ॥ वैठेभीवराजएकसाथी ॥ ४ ॥ वै
ठिसुवेगऔरहबकेत ॥ एकनागचढिकीनोंहेत ॥ ऐसेचलेनग्रमेंआए
अतिआनंदेषिसुषपाए ॥ ५ ॥ मद्रावतीराजकीरानी ॥ वनकुंमनमे
जैसीआनी ॥ देषिआवतसुनमुषचली ॥ बहोअस्तुतिकरतहीमिली ॥
६ ॥ कंचनथारआरतीकीने ॥ वहोतभांतिआदरसोंलीने ॥ वहोतभां
तिपांवडेविछाए ॥ याविधिनिजमंदिरपधराए ॥ ७ ॥ वहोतभांतिके
भोजनकीए ॥ जैमतसवैवहोतसुषदीए ॥ वहोतसुषनहींमूपोढाए ॥

करिवहोप्रहवहीतसुषपाए॥८॥यहीकथाजैमुनितवकहै॥जन
मेजैमुनिकेसुषलहै॥राजाअपनेइतवुलाए॥सुनतवाततमन्नेउ
ठिधाए॥ ९॥कैहैराजऐसीमुनिलीजै॥भद्रावतीछ्छोरादीजै॥स
वलोगनसऐसैकही॥हथनापुरलोंचलीहैसही॥१०॥मुनिकेसक
लभलीकरिजानी॥अरराजाकीअग्यामांनी॥दिनतीसरेपयानुकी
नूं॥साजवाजसवहीसंगलीनूं॥११॥चलिहैराजसवैसंगरांनी॥अस
हरसकीवांछ्छाआंनी॥औरराजकेवेटाचले॥जोधजुवांनसवैहि
लिमिले॥१२॥अरसवचलेनग्रकेलोग॥अपनीवसइलिएसंजोग॥
श्रीकृस्नदेवदरसनकैकाजा॥पिरजासहतचलेहैराजा॥१३॥च
लिहैवहोतवजावतवाजा॥करिहैसवैमनोरथकाजा॥धर्मपुत्रको
दरसनपैहै॥गंगान्हायमहासुषलेहै॥१४॥राजाकोकरिहैसुनमांन॥

47

जै०स्व० २७ 48

अरु श्रीगंगाको असनान॥ ऐसै करइ सबै ही ध्याए॥ चलतै चलत नाग
पुर आए॥१५॥दोहा॥ गएे नागपुर के निकट: राजसहत सब सैंन॥ पहि
लजुधिष्टरपैगएः भीमभयाईदैन॥१६॥भीमसेनोवाच॥ छंदभुजंगी॥
तबभीमधर्म पुत्रके पाय लगो॥ तबमेटियि धर्मपुत्र आनंद जगो॥ कह्यि धर्म
पुत्र भ्राता तुम भले आए॥ मम सकल आनंद सुष आजि पाए॥७॥भी
मसेनोवाच॥ तब भीम कही वात जु बनासआए॥ औरनग्रके लोग
सब संजि आए॥ निजनाविसुनआदि सब है सहे ते॥ सब जोध सेनास
हत औरके ते॥ ८॥ हेषके तहे संगि है मे ग्रवरनं॥ संगिही वाजु है सावं
करनं॥राजोवाच॥ तब राज कही भीम वहां करो टहलं॥ जु बनासडे
रा करौ वडे महलं॥१९॥ और सब नग्र क विरोण वित्तं॥ और मग छाडि ऐ
अत्र अत्रं॥ और सब नग्र आनंद करियं॥ धाम धाम जावही कलस धरियं॥

॥२०॥ औरवहीवरनवाजारछायं॥ औरअनहदवाजेवजायं॥ औरव
हीवांधइवंद्रमालं॥ वारिसोमितवहीकनकजालं॥२१॥ जुवनास
कौसुनमुवेरायआयं॥ वहीभांतिसुनमानकरिमिलेहैआयं॥ धर्मसु
तआनिजुवनासमिलियं॥ गहिहाथमेहाथनिजमहेलचलियं॥२२॥
वहेआपहीआपमनुहारकिरियं॥ कहिराजमोआजिसवकाजसरि
यं॥ कहैराजहमभ्रातहैपंचजैसें॥ जुवनासुहमजानिहैतुमहिऐसे
॥२३॥ कहीजांनिसुवेगयहुषकेतं॥ एदेषिममभ्रातवहोतहेतं॥ जेमु
निकहतहैसुनकुराई॥ भद्रावतीजायद्रोपतीमिलाई॥२४॥ जुवनास
सोंवोलिएराजवैनं॥ लहैराजकेवेनसुषपरमचैनं॥ कहीधन्यजुवना
सतुमपाउधारे॥ तुमआयकैंसकलममकाजसारे॥२५॥ दोहा॥ ऐसो
मनआनंदकरि मिलेरायराजांन॥ जेमुनिराजनसौंकहै आगेकरोवषांन॥

यो।

49

॥२६॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेधके पर्वे वर्नने जैमुनि जनमेजै संवादे राजा जोवनास्व आगमनो नाम षष्ठमो ध्याय:॥ ६॥ ॥ जैमुनियोवाच॥ दोहा॥ जनमेजय सौं कहत हैं ग्रहो राज मुनि लेह॥ जोवनास अरथ में मुल: कही वात तिन एह॥ १॥ जुधिष्टर उवाच॥ सुनु अुवनास सति ही कहनू॥ तुम्ह दरस हमे ही लहनूं॥ कीने नग्र पवित्र हमारे॥ भलै ही राज पाव तुम धारे॥ २॥ जोवनास उवाच॥ राजा जुधिष्ट सुनियौ वात॥ तुम देषत हम भये सुनात॥ जौ याघ रिन्ह पज्हूं हम आए॥ तो कृस्न देव कौ दरस न पाए॥ ३॥ तातें गिनत धनि दिन मेरे॥ भए दरस श्री गोविंद केरे॥ तुम तौ धनि जुधिष्टर कहहो॥ नित श्री कृस्न देव दरसै है हो॥ ४॥ रानी भद्रावती उवाच॥ फिरि बोली भद्रावती रांनी॥ द्रोपद सुत सौं वात वषांनी॥ करि अंजुलि तवीनती करी॥ धंनि यह दिन आजि की घरी॥ ५॥ हलनौ वडो हमारो कह्यो॥

तौ श्रीकृस्नदरसनहमलहौ॥ यहीकथाजैमुनिरिषकही॥ जनमेजै
सुनिलीजैयही॥ ६॥ तवतहांराजजुधिष्टरवोले॥ जोवनासमांझंतर
षोले॥ हमतुमधनिहोउंहीराजा॥ श्रीकृस्नदरसकरिसारेकाजा॥ ७॥
हमतुमदोउधनिकहाए॥ श्रीकृस्नदेवकेदरसनपाए॥ फिरिराजा
पूछतहैव्यास॥ सकलधर्मकौकरिपरगास॥ ८॥ युधिष्टरउवाच॥
॥ हो व्यासजूधर्मवतावौ॥ वर्णआश्रमनिकेसमकावौ॥ दिजसंसा
रसोकनहिडारै॥ तौपरलोककौनविधिसारै॥ ९॥ लोकमाहिक्यौंकीर
तिहोई॥ कहौकृपाकरिएछैंसोई॥ सुनिराजाकेकोमलवैना॥ वो
लेव्यासकृपाकेऐना॥ १०॥ व्यासोवाच॥ सुनऊंराजविप्रनकेधर्मो॥
सास्त्रजांनिकरैसुभकर्मो॥ तेपरलोकसुधारैकोई॥ श्ररयाजगकी
रतिवहोहोई॥ ११॥ परनिंदाकौअतिभयमानै॥ परिकेकाजसुधारिहि

51

जै॰ऽस्व॰
२६
52

जांने॥ परहित अपनौ काज विगारै॥ ते ऐसे परलोक सुधारै॥ १२॥ नादि
न परनिंदा सों रहत न है॥ ते सर्व दान रक अनुगत न है॥ छत्री धर्म चलै हि
जे छत्री॥ पर जा सहत पोषि है धत्री॥ १३॥ और समर मै भाजे नाहीं॥ अ
रु गो द्विज की रछ्या करांही॥ एजा करै होय दातार॥ अर सब धर्म न को
अधिकार॥ १४॥ राषि लेइ जो सरनि हि आवै॥ ए छत्री के धर्म कहावै॥
या प्रकार छत्री जो चलै॥ सो वैकुंठ माहि हित मिलै॥ १५॥ वैस धर्म
कहियत है राजा॥ षेती करै वणिज को साजा॥ गो विप्रन की सेवा करै॥
वर्न धर्म अपनों अनुसरै॥ १६॥ एजा करै धर्म विस्तारै॥ या विधि वैस्य
लोक निस्तारै॥ एतो वैस धर्म हम कहे॥ सूद्र धर्म कहिवे को रहे॥
१७॥ दोहा॥ वर्ण तीन के धर्म मैं दीने तनु महि वनाय॥ आगे सूद्र इ त्रिया
न के: कहुं सकल समझाय॥ १८॥ इति श्री महाभारथे अश्वमेद के

पर्वववर्ननेजैमुनिजनमेजैसंवादेधर्मवर्ननोनामसप्तमोध्याय॥ ७॥ ॥जैमुनियोवाच॥ जैमुनिकहेसुनुनरईसा॥ जनमेजैसुनु धर्मजगीसा॥ वहुरव्याससजधर्मवनावै॥ कर्मसुधर्मसवैसमझावै॥ १॥ व्यासउवाच॥ सइवत्तनहेअपनेधर्मा॥ करैकिरषिसोईनिजकर्मा॥ करिनिजधर्मसुइसुषपावै॥ सोसइहरिभक्तकहावै॥ २॥ अथमहिजननसेवाकरै॥ अपनोकुलधर्महिअनुसरै॥ सोसुइ रैउलोकसुधारै॥ करिहरिभक्तिआपनितारै॥ ३॥ अवेस्त्रीनके धर्मवषानं॥ धर्मअधर्मदोउनपञ्चानं॥ पतिकीवहुविधिसेवाठं नै॥ पतिहीकूपरमेसरजानै॥ ४॥ पतिहीकीअग्यामेरहै॥ भलीवुरीपतिहीकीसहै॥ मनकेवलपतिहीमेराषै॥ दुष्टवचनकवहुनहिभाषै॥ औरनमनमेआनैकोय॥ सेसातियकोवहुजसहोय॥

53

जै०स्य ॥ अरयहलोकलोकपरसुधरै ॥ उपजैजहांसोकुलसुधरै ॥ ६ ॥
नेतौदोउपछकौतारै ॥ याविधिदोउलोकविगारै ॥ अरुनिजपति
सोविमुषजहोई ॥ तौदोउलोकविगारैसोई ॥ ७ ॥ एअस्त्रीनकेधर्म
वषांनै ॥ साधसेवसंगतिनहिआंनै ॥ तेचंडावेरावरीनारी ॥ महा
अघनकीहैअधिकारी ॥ ८ ॥ तेकुलनीचभक्तिसोहोई ॥ तौजानौं
अतिउतिमसोई ॥ त्रियाधर्मेकहतहैंअैसे ॥ तुमहिवताएहैंनृप
जैसे ॥ ९ ॥ जुधिष्ठरउवाच ॥ कहौव्यासएकविधिअैसी ॥ मानवकेल
छमीथिरकैसी ॥ जेवपुरषसदासुषपावै ॥ काहेतेदुषनिकटनआ
वै ॥ १० ॥ अरश्रीकृस्नतिकटश्रीवास ॥ सदारहैसंकरौप्रगास ॥ ष
हपरसंगहछियाराई ॥ हमसौंकहौकथासमझाई ॥ ११ ॥ सोरठा ॥
अहोजुधिष्टरराय ॥ व्याससवचनअैसैंकहै ॥ कहूंकथासमझाय

७७
54

सुनकुसकलनिर्नयकहूं ॥१२॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्वे वर्ननेजैमुनिजनमेजैसंवादेव्यासवाक्यंनाम अष्टमोध्याय ॥८॥

॥व्यासउवाच॥ चौ० ॥ फिरिजैमुनिरिषिबोलेबैना ॥ जनमेजैकौं अतिसुषदैना ॥ बोलेव्यासपरमसुषदाई ॥ सुनकुंधर्मसुतधर्मसहाई ॥१॥ जेश्रीकृस्नदेवकंहूजे ॥ नहकेवलजाननतनहिइजे ॥ कृस्नभक्तिकेवलहैतहां ॥ सदालछमीथिरहैजहां ॥२॥ अरजेठकीसेवाकरिहै ॥ बोलतऊठनाहिसंचरिहै ॥ अरमुषतेउगननहिभाषी ॥ मातपिताकेअग्याकारी ॥३॥ मातपिताकीसेवाकरिहै ॥ मिष्टवचनसबसोंउचरिहै ॥ पतिवरताहैजाकीनारी ॥ परतियजाननतहैमहतारी ॥४॥ अरजेगुरपरमेसुरजानैं ॥ अरगुरजनकीसेवाठांनै ॥ तेनरजैसेकर्मकरावै ॥ जेश्रीकृस्नवेगिहीपावै ॥५॥ तिनहीकेलछमीथिररहै ॥

जै॰ख॰

२८

56

मिरि एकधर्ममनुत्तपयहै॥ जेकोई पुरुषनडागवधावै॥ अरुकों
छाडिधर्मकोंध्यावै॥६॥ अरजोवापीकूपकरावै॥ धनपरमेसुरहेतल
गावै॥ विप्रनकोंग्रहदिएबनाई॥ सबसामग्रीसहतधराई॥७॥
अरसाधनकीसेवाकराई॥ धर्मातनपापनतेडरई॥ ताकैंरहैसदा
श्रीघरमै॥ तेहीसुषीरहैंतयाघरमै॥८॥ अरएकवातसुनोंहोराई॥
जेमुरिषपरचुगलीषाई॥ झूठीसाषिभरतवडोलै॥ अपस्वारथीझूठ
वहीवोलै॥९॥ जुवावेलिषेलिधनषोवै॥ चलतसुमारगकोंनहिजो
वै॥ फोरैतालकाटिवगवाई॥ तीपेकर्मनिगोदनजाई॥१०॥ भुगतैन
केमहाविललाई॥ तेअकर्मीकहासुषपावै॥ तिनग्रहलछमीकवहूं
नहोई॥ अगमैदुषीकहतहैसोई॥११॥ चोरीकरततकतघरआंन॥ औ
रकरतहैमदिरापांन॥ जोकोईपरपुस्तककोंचोरै॥ अरपरवस्तराषि

हेमोरे ॥१२॥ पुंन्यकरतवरजतहेकोई ॥ नरकनेमोदिवसतहेसेई ॥ राजजुधिष्टरसुनियोंलोई ॥ क्रस्नभक्तिविनमुक्तिनहोई ॥१३॥ पुंन्य कीएविनकोसुषपावे ॥ ऐसेंव्यासराजसमझावे ॥ सुनियेवचनमहासुषपावे ॥ रायजुधिष्टरभीमवुलावे ॥१४॥ जुधिष्टरउवाच ॥ अहो भीमद्वारावतिजावो ॥ श्रीक्रस्नदेवकोंह्यांलेआवो ॥ भीमसेनकों ग्याहीनी ॥ तवतहांभीमदंडवतकीनी ॥१५॥ श्रीक्रस्नलेनकोंभीमपठाए ॥ द्वारावतीभीमसनलाए ॥ कहिवसुदेवदेवकीलावो ॥ क्रस्नदेववलदेववुलावो ॥१६॥ रुकमनिसतिभामाजामोती ॥ इनहि आदिरानीसवजुवती ॥ भईयावंधसंगसवआवो ॥ सवकोंभीमलिवाईल्यावो ॥१७॥ निमसकारकरिभीमसिधाए ॥ वेगिनग्रद्वारिकाआए ॥ तोलोंभीमनग्रमेंपैठे ॥ श्रीक्रस्नदेवभोजनकेंबैठे ॥१८॥ रुकमनिस

जै॰ अ॰
२९
58

तिभामानिजहाथा। ठारे वायजी मैं जदुनाथा॥ भीमसेनि आए अंबे
वासि। सत्तिभंमान हाव रजीव वासि॥ १९ ॥ दोहा ॥ भीमसैन कोंप
आइ वोः मत्तिरजना वो कोय। देषो भीमगुपालसोंः कैसी वातैहो
य॥ २०॥ इतिश्री महाभारथे अस्वमेद के पर्व वने ने जैमुनिजनमेजै
संवादे भीमसेनि द्वारिका आगमनो नाम नवमो ध्याय॥ ९॥ ॥जै
मुनियोवाच॥ चौ॰॥ जैमुनि रिषअव कहत हैंः जनमेजै सुन कुंनरेसा॥
अंतै हपुर मैं जायः भीमत तव का यो अवेसा। जीमत तदेषे ह्लस भीमन
व वचन उचारे। अहो ह्लस तुम धंनिः किए अपमान हमारे॥ १॥ तुम
जीमत गोपाल मोहि अन आदर दीनों। मात देवकी मुइ कओ न सत्ति
भंमा कीनों। महा अर्घ भयो धांनः मे पकऊं इं इन वर्षे॥ अंन अके ले
षाऊंः मोहि आवन नहि हर्षे॥ २॥ कवित॥ परलोक कहूं काल किधों भयो

हैबिहालकिधोंमरीदेवकीककइंसन्निभामागईहे ॥ करतहोमान
किधोंमहगोमयाधांनकिधोंकोपिइंइंग्रवनिपैवरषानभईहै ॥ जी
मतग्रकेलोमेरोआदरनकहोनेव ॥ श्रावतग्रचंभोकइंग्रानटेव
लईहै ॥ वेहीतुमवेहीहमआदरनकीवेरदेषो द्वारिकाकीचाल
हमजांनीआजिनईहै ॥ ३ ॥ जैमुनिउवाच ॥ चौ० ॥ भीमसेनकेसुनिए
बैना ॥ पुलकततभएकमलदलनयना ॥ सुधिकेजीमतश्रोरइंमांगे ॥
भीमसेनसोंवातनलागे ॥ ४ ॥ देषोभीमवनीयहफेनी ॥ महास्वाद
इंमृतकोश्रेनी ॥ देषिभीमएवरासुहारे ॥ लागतनीकेवहोतसुधारे ॥
५ ॥ पीवनकठीदिषायदिषाय ॥ देषतभीमवरेवहोषाय ॥ तवतहां
भीमवचनयहसारे ॥ तुमकठीमठाकेपीवनहारे ॥ ६ ॥ तुमकठीम
ठाकोंनीकेंजानें ॥ एवरागरैलागेइबमानें ॥ श्रीगोविंदकहेंततुम

59

जै० ३० 60

पेषो॥ रा[illegible]वहै तबलै तुमदेषा॥७॥ अरयहवहै तनमसालेमनी॥ देखिभीम
[illegible]मेरी[illegible]॥ जीमनहैएकरिकरिवान॥ ज्यों ज्यों भीमकिसानें जान॥ ८॥
सराहिसराहिर गगलगावै॥ श्रीगोव्यंदभीमवहकावै॥ नवतौभीमसे
नयोंकही॥ अहो हलसयोंजानैंसही॥ ९॥ ऐसे तुमकों लषै अहारी॥ सांच
[illegible]है वहन तुम्हारी॥ तुम्हारो जे मन देषो यहै॥ न्यायसहो [illegible]हि
[illegible]॥ १०॥ भीमवचनसुनिकेहसिदई॥ फिरितहांवातदेवकीकही
अबजी मिलेभीमतुजोरे॥ तुमतौहोवहोहितुहमारे॥ ११॥ भीमसेनो
वाच॥ मातानीकेइनहिजिमावो॥ वचेकछूतवमोहिबुलावो॥ इन
कोपेटभरैतवआउं॥ हाथितुम्हारेभोजनपाउं॥ १२॥ तवश्रीकृसनदे
वयोंवोले॥ भीमसेनसंअंतरषोले॥ श्रीकृसनउवाच॥ अहोभीमतु
महोअतिप्यारे॥ पंडवसेकोहितुनहमारे॥ १३॥ ऐसेवचनकृस्नतवकी
मम

ए॥भीम बांह गहि भीतें लाये॥भीमसेन कोप करि धाये॥भोजन लैवे ठैरायो॥१४॥भीमसेन भीम के मारो॥ व है तिल सों मारन लागे॥ व हो करन हम सों आए॥ तुम हि जुधिष्टिर ते हि बुलाए॥१५॥ कहे त्रैलोकीनाथ मुरारी॥ कानी मदा सहाय हमारी॥ तुम्हारी कृपा सों घोरा लाए॥ और राज भोवना सिधाए॥१६॥ ... न विलम न कीजे॥ अधिकारी कों आग्या दीजे॥ श्री गोपाल ... ये की कीनी॥ अधिकारी कों आज्ञा दीनी॥१७॥ वे गिन गारे बंब करावो॥ द्वारावती ढंढोरा फावो॥ बडे बडे सुखिया जो होई॥ चलिए संग रहो मति कोई॥१८॥ चौडोल पालकी सबवारी॥ व हो हस्तिन पर अंबावारी॥ रथ बाहन निब हो साज बनाए॥ वहो उटन पै क सेक आए॥१९॥ श्रीकृष्ण देव तब करत चढाई॥ छिति छपि गई और न ही भाई॥

जै अरु हाथी घोरे मगन नहि पावै । तहां मान सको कहा चलावै ॥२०॥ सब अति

३१ चले द्वारिका लोग । सब हि कुटंब सहज संजोग । घझुरं ईट हाथी

62 वहोलावे । चले नागपुर कौउन मावे ॥२१॥ जहां जहां वेडेरा दए ।

सर सरिता के जल सुकि गए । ऐसी विधि श्रीकृष्ण पधारे । पुरवा

सी संग लीये सारे ॥२२॥ दोहा ॥ लए कृष्ण संगि सेन वऊ: चले नागपु

र जाय । जनमेजै से मुनि कहैः आगे कहूं सुनाय ॥२३॥ इति श्री महाभा

रथे: समेद के पर्वे वर्नने जनमेजै मुनि संवादे श्रीकृष्ण आगमनो

नाम दसमो ध्याय ॥१०॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ चौ० ॥ अहो राजा अब

सुनियै वात । हस्त हस्त हथनापुर जात । पेडे जात चले अभिनासी ।

भीमसेन संठानो हासी ॥१॥ तब तहां मिलन निएकंत वोलिनि । एक

ते लनि आई बोलनि । इन हि हि देषि वहो हासी भई । भीम वात गोपा

लहकही॥ २ ॥ तुम्हारी जानक रतउ गुनगाई ॥ अपनी क्रिया करोसुषदा
ई॥ तवतहां बोले श्रीजदुनायक ॥ अहो भीमए तुमही लायक ॥ ३ ॥ क
हो एक तुम करौ हमारौ ॥ पेटवडौ है भीम तुम्हारौ ॥ एतिक क्रिया आ
पनी करौ ॥ कहौ तुपाल भीम तुम वरौ ॥ ४ ॥ भीमसेनोवाच ॥ कहै भी
म तुम सुनहु मुरारी ॥ मम ग्रह रहै राछिसी नारी ॥ देषत इन हित्ते वे भ
षि जाय ॥ कहौ कृस्न तव कौन उपाय ॥ ५ ॥ तातै इन कौ तुमही वरौ ॥ ह
म संभु काहे को अरौ ॥ एतौ धर्म तुम्हारै चहिए ॥ अन वनती काहे
को कहिए ॥ ६ ॥ तुम्हारे है जामोती रानी ॥ पांनष वावन कौं ए आंनी ॥
ग्रहो कृस्न जू एतुम लायक ॥ अपनी क्रिया करो सुषदायक ॥ ७ ॥ या
विधि ऐसी हांसी करई ॥ मारग चलत महा सुष भरई ॥ मारग चलत
महासुष पायो ॥ चलतें चलत नागपुर आयो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्रीकृस्न व

63

जै०स्व० रिझैं नगुपाला॥ यौं राजा के महल पधारे॥ गजव होत आनंद उरि धारे॥ ३३॥ इह प्रकार आए जदुराई॥ राजा के वहौ वधीव धाई॥ जै जै सबद नग्र मैं भयो॥ दरसन करत महा सुष लयो॥ ३४॥ भयौ नग्र आनंद वहु दरस करत सब जाय॥ धंन्य भाग यह सुभ घरी सकल लषे जदुराय॥ ३५॥

इति श्री महाभारथे अस्वमेद के पर्वे वर्नने जैमुनि जनमेजे संवादे श्रीकस्न नग्र पवित्र नो नाम एकादसोध्याय॥ ११॥ ॥ जैमुनि यो वाच॥ चौपई॥ जैमुनि कहै सुनौं हो राय॥ आगे कथा कहौं समुझाय॥ श्री कृस्न देषि सब ही सुष नरई॥ नग्र लोग वहौ अस्तुति करई॥ १॥ श्री कस्न युधिष्ठिर संगि सिधाए॥ चले देवकी केति गिआए॥ करी राय दंडवत प्रनामा॥ करि अस्तुति सहत सुन माना॥ २॥ कुंती मात देवकी मिली॥ सुष समाधि पूछत है भली॥ द्रोपद सुता महा रस पागी॥ श्री रुकमनि सं

३४

68

बातनलारी॥३॥द्रोपदीउवाच॥अहोरुकमनीतुमसिरमोर॥तुम
सीत्रियानहरिकेऔर॥तुमसीअस्त्रीहैअरधंगा॥तुमहीसोंकहिय
तरसरंगा॥४॥अरकहियतहैंकस्नअकेल॥सोतुमकैसेवस्यकरि
मेले॥यैंवेहरितुम्हरैंवसिनांही॥हितकरिवोलतहैंतहांजांही॥५॥
रुकमनिउवाच॥रुकमनिकहैद्रोपतीरानी॥यहतौवातसतिहि
मजांनी॥तुमभीसहीगकेलीदारा॥तुम्हैंकहियतपंचभरतारा॥
॥६॥पंचनकोमनकैसैंराषो॥सवसोवचनएकसोभाषो॥अरपुनितु
मश्रीकस्नवुलावो॥धन्यतुम्हैइनवातनगावो॥७॥द्रोपतीउवाच॥
हीसकरिवातद्रोपतीकही॥रुकामनिसुनुकहैंतहोसही॥एकलता
नहिदीयोजाय॥तुमपैसुनऊंरुकमनीकाय॥८॥देषोकस्नदेवपन
परी॥जरजोधनकीसभामझारी॥कहोआएममचीरवधायो॥९॥

जै॰ स्व॰
३५
70

त्रिषै चिदुसासन हारो ॥ ९ ॥ दुसासनकी भुजा पिरानी ॥ हरत बसन
थके टन ग्रांनी ॥ अैसे हैं श्री कृस्न मुरारी ॥ सब दिन आवै हमारी
॥ १० ॥ द्वारावती पुरी सौं धाए ॥ अरध रात्रि हम का जै आए ॥ दुरवासा के
आप निवारे ॥ अैसे और बहुत दुष टारे ॥ ११ ॥ हसि हसि अैसी बातें भ
ई ॥ हसि कै और रुकमनी कही ॥ सतिभामा अरु द्रोपती बषांनी ॥
र के हियन जा मोती गांनी ॥ १२ ॥ इनकौं नीके बस्त्र मगावो ॥ आप र
चै सब कौं पहरावो ॥ अरु सब हिन कौं गहना दियो ॥ सनिमानिक
जराव कौ कीयो ॥ १३ ॥ देवकी उवाच ॥ कहत देवकी सुनि हो राजा ॥
हम हि बनावो जगि कौ बाजा ॥ या अंतहपुर माझि मगावो ॥ सब अ
स्त्रीन कौं आनि बनावो ॥ तब घोरे की पूजा कीनी ॥ अरु सब हिन मि
लि रछा दीनी ॥ १४ ॥ सब अस्त्रिन मिलि पूजो बाजा ॥ तब श्रीकृस्न
॥ १५ ॥ तहां युधिष्ठर बाज मगायो ॥ सब अस्त्रीन कौं आनि बनायो ॥ २ ॥

सुकहि है राजा ॥ अहो कृपानिधान सुनि लीजि ॥ कहै राजा आरंभ जगिकौ
जो ॥ १६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अहो राजा अब करकु विचार ॥ अस्व छि
पठवो को लार ॥ तुम अतीत के जो था होई ॥ तुम पठवो अस रछिक
सोई ॥ १७ ॥ वहौ तैं चोर कहियत है इन के ॥ मो सौं नांव सुनु अब तिन
के ॥ लोकपताल राज बलि जानों ॥ लंका मांहि भभीषन मांनों ॥ १८ ॥
इंद्र कहै अमरावती मांही ॥ अर असु के वहो चोर कहांही ॥ महा जो
ध अस कै को संगि धरैं ॥ अरु घोरे की पूजा करैं ॥ १९ ॥ नव राजा अस पु
जा कीनी ॥ करन गोरष वारी चीन्ही ॥ इतने माहि सलि आय पर्यो ॥
सब के माहि जाय अस्व हर्यौ ॥ २० ॥ राजा मन दुखित ताई भई ॥ अब कै
सी विधि करि है दई ॥ लै अस कासि मारि गसलि गयौ ॥ अरु सब हिन
सौं ऐसैं कह्यौ ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ कहत चल्यौ सलि एह ॥ मारग जात

जै०अस्व०

३६

72

अकासमै ॥ अहो सकल मुनि लेहु ॥ सकल भागे घोरा लयो ॥ २२ ॥ इति श्री महाभारथे अस्समेद के पर्वे वर्नने जैमुनि जनमेजै संवादे सलि घोरा हरनो नाम द्वादसोध्याय ॥ १२ ॥ ॥ चौपई ॥ जनमेजै राजा सं.यही ॥ कथा वहौरि जैमुनि रिष कही ॥ राजा बाज सलि लै गयो ॥ हैहै कार जगत मै भयो ॥ १ ॥ तव श्री हलधर राजसो बोले ॥ मीठे वचन हिये सै बोले ॥ अहो राज तं तामति आनं ॥ जीति सलि घोरा अब आनं ॥ २ ॥ श्री हलधर आपनें श्रम गायो ॥ चढि रथ वेगि सलि पै धायो ॥ कहीं पंच जनन संष वजायो ॥ आवध सजी सलि पै धावो ॥ ३ ॥ राज जुधिष्ठर तवयों कही ॥ लए जात घोरा सलि सही ॥ सव पंडव जादव सव देषे ॥ सव हरि रथ चढि किन सलि पेषे ॥ ४ ॥ सव ही महारथी हो भाई ॥ सलि पै वी

73

रालेकुउठाई॥ सलिजीतनवलकोयथगावो। सलिजीतिघोरा
लेग्रावो॥५॥ तवरूकमनितवीरालयो॥ फिरि श्रीकृस्नवनयौ कू
ह्यो॥ प्रदवनिसंगिपंडवकोउजावो॥ कोजैहै [illegible] महिवलावो
॥६॥ ऋषकेतनवग्रैसेकही॥ श्रीगुपालमैजेहूंसही। कृस्नकुकं
मलहितवैसिधारे॥ श्रीसुतजातहिसलिहकारे॥७॥ छंदपट
पद॥ प्रदमनोवाच॥ कहिप्रदवनिजायचोरछोकिनहोई॥ ह
त्योवाजजिहिकाजग्राजिपलभुगतोसोई॥ प्रथमपंचसरसोकि
जायकैसलिहकारे॥ ग्रथपर कारेसलिएकसरप्रदमनिमारे॥
परेप्रदमनिधरनिमैदे[illegible]उनरे॥ दइलानकहिधिकतुव
एकवानलागतगिरे॥८॥ चौपई॥ उतरेरथसंमारीलाता॥ ग्रर
प्रदवनिसोबोलेवाता॥ मेरोपुत्रहोयकेहारे। धरनीपरेदलिके

जैं०स्व० ३८ 76

पर आगे॥ नव श्री हरि मूरछा सों जागे॥ और काहू उत्तर नहि दीयो॥ सतिभामा एक मसलो कीयो॥ २२॥ सोरठा॥ पूछत मनि के तुम लात॥ ...सोल रिका कहूं तेँ॥ कहौ कंत तुम अब बात मलिके मारे भागि हौ॥ २३॥ चौपई॥ पूछत मनि के तुम मारी लाता॥ अपनी कौं न कहौ अब बाता॥ तुम हि सब नमैं वडे कहावो॥ सौ मलिके मारे भाग आगे॥ २४॥ तुम्हारी मुरछा के सं भई॥ तुम कहियत नहो... दई॥ काहो के मारे नहि मरि है॥ आर को जोर नहि जरि है॥ २५॥ भल मन नहि व... जदुनायक॥ कोहै है तुमे मा दिवे लायक॥ सो तुम अ... सई म कहावो॥ सो काहे को भाग आवो॥ हरि सो सतिभामा यों कहै॥ सुनिके सकल अचंभे... है॥ ह... के कहे मत्या ए वैना मानों अति इंम्रतके ऐना॥ २७॥ दोहा॥ सतिभांमा ... ...ं कह्यो: सुने सकल एवेन॥ हरि उत्तर नाहि न दयो: हसकवल... ...॥ २८॥ इति श्री

77

महाभारथे जनमेजकेपर्वेवनेजैमुनिजनमेजेसंवादेसतिभामा
वाकिसोनाम त्रियादसोध्याय ॥ १३ ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ सोरठा ॥
अहोराजमुनिलेह ॥ जनमेजैजेमुनिकहे ॥ कहूंकथाअबएह ॥ ब्रषकेत
सलिसोंसमर ॥ १ ॥ छंदषटपद ॥ ब्रषकेतअरु सलिसमररोउजायसं
उ ॥ दे उसारिसजोधजोरिसायक वहोछंडे ॥ सब्बबांनब्रषकेतकै सलि
देषतमारे ॥ ब्रषकेतमुरछाभई रथसोधरडारे ॥ मुरछब्रषधरनीपरे
सलिजायजीतेसमर ॥ लयेवाजपंडवांनकै मनहुगिगनलागेअमर
२ ॥ एकमहूरतब्रषकेतमुरछासोंजागे ॥ ज्योंसोवतउठिकायजायफु
निजुधलगे ॥ कहीसम्हारोसलिदेषिजेसोमेआयो ॥ करतवानततं
कालसलिपैवाणचलायो ॥ लगतवानसलिभुवपरोब्रषकेतउठा
योजायकें ॥ हसैवोबाजतिहराजकोसुषसोकरलेगआयकें ॥ ३ ॥ ब्रष

जै०स्व० केतजायतहांहरिकेपायलगे ॥ सलिदियोतहांडारिः कहियहग्रसले
भगे ॥ प० रावरोचोरावरीइछाहोइ ॥ प्रभुतुम्हारोमतोजानिसकेसो
कोई ॥ लएंजातयहवाजकोः ग्ररिग्रकासमारिगग्रस्यो ॥ लख्योदर
समजोरयहः ग्रानेप्रभुग्रागेधस्यो ॥ ८ ॥ नृपकेततुमधनिकहीः
श्रीकृस्नग्रापमुष ॥ तुमविनजीतैकवनः सलितुमदियेभाजमुष ॥
ग्रहोकरनकेपुत्रराजकारिजतुमसास्यो ॥ पकारिसलिपरिलषिग्रा
यहमग्रागेडास्यो ॥ ९ ॥ केतश्रीकृस्नकेवचनसुनजपदगिरेए ॥ भ
योजांमएकतांमनवः सलिमुरछासोंजगिए ॥ ५ ॥ चोपई ॥ तवतहांस
लिमुरछासोंजैगे ॥ नृप केतसोंवातनलागे ॥ नृपकरनधनिपितातु
म्हारे ॥ ग्ररघनिएपंउवजनसारे ॥ ६ ॥ यएकमेरोकारिजसस्यो ॥ श्री
कृस्नदेवकेपायनपस्यो ॥ सोयहभयोप्रसादतुम्हारे ॥ ताितेतुमग्रव

३९
78

मित्रहमारे ॥७॥ एवातैकरिरोउमेटे ॥ मनकेसोकसकलतिनमेटे ॥
हृषकेतुहोसुषदाई ॥ यासंग्राममईमित्राई ॥८॥ हृषकेतोवाच ॥
सुनकृसलिएकवातहमारी ॥ एश्रीकृस्नभक्तिहितकारी ॥ जोगमु
रकेध्याननआवै ॥ सोअनछिनुमदरसनपावे ॥९॥ मल्योवाच ॥ बो
लेहलिसुनुहृषकेतु ॥ देषेकृस्नभक्तिकेहेतु ॥ ऐसेहैगोविंदमुरा
री ॥ देषोभक्तिटेकइनपारी ॥१०॥ ध्रुकौंध्रुवलोकइनदीयो ॥ अमर
नमाहिअटलसोकीयो ॥ द्रोपतीसाकपत्रतुछिपायो ॥ सोहरिहित
करिभोगलगायो ॥११॥ सोहरिऐसेकारिजसारे ॥ दुरवासकेश्राप
निवारे ॥ तुलसीकेवनपातचढाए ॥ देषोइंद्रलोकतिनपाए ॥१२॥
तुममोहिश्रीहरिश्रानिदिषायो ॥ वडेभागमोदरसनपायो ॥ ना
तेतुम्हारोघोराहस्यो ॥ कृस्नदरसकाजैसोमनस्यो ॥१३॥ यहीवातक

79

जै० ४० 80

हिये हरि मेरे ॥ श्री हरि के पायन न रिले ॥ दहो अस्तुति करि सलिजे से ॥ ज्यूं हरि भक्ति करत हैं जैसे ॥ १४ ॥ जुधिष्टर उवाच ॥ फिरि एक बात जुधिष्टर कही ॥ सुनियों सलि कहत हो सही ॥ भया पांच कहत मम केरे ॥ तुम हित कारी हो मेरे ॥ १५ ॥ ऐसी बात कहत सुष पायो ॥ सलि सहनली ये घरि आयो ॥ घरि आनत वहो आदर दीयो ॥ सब मिलि इक ओजो कीयो ॥ १६ ॥ श्री कृष्ण वचन राजा सो कहे ॥ सुनहु युधीष्टर अव तुम ईहै ॥ अव तुम जगि को आरंभ करो ॥ सव सामग्री लैन हां धरो ॥ १७ ॥ भयो भोर नव दत वदत पठाए ॥ राजा सव रिषयंद बुलाए ॥ आए सकल जगि के कांमां ॥ तिन के अवै कहत हैं नांमा ॥ ॥ वासिष्ट अत्रेय रिष चले ॥ कस्यप भारद्वाज ऊमिले ॥ गौतम धौमऋ आए विंभन ॥ विस्वामित्र आदि सव रिषियन ॥ १९ ॥ इन हि आदि सव ही रिष आए ॥ जजिकर

नकोराजबुलाए॥सबजगिकीजहांसौंजमगाई॥कंचनहरसौंभो
मिजुनाई॥२०॥सोसबकरितहांमंडपछायो॥आइसाजतहांसबै
बनायो॥जोविवाहकीसामाकहिए॥सोसबकीनीसोसबलहिए॥
२१॥सोविवाहआचरबनाए॥राजजुधिष्ठरसबचलिआए॥आप
निगठजोरीकरिपैठे॥करिगठजोरमंडपमैंबैठे॥२२॥बहोविप्र
नकीबरनीकरी॥सबहिनकीपूजाअनुसरी॥दरिसंक...
नवछाडयो॥कनकपत्रअसकेसिरमांडयो॥२३॥औरपत्रमेइहलि
षिदीनों॥जेकोइबाजहमारीलीनों॥ताहिजीतिघोरालेआवै॥अर
फिरिताकौंबाधिमगावै॥२४॥अपनीषुसीजहांफिरिवहै॥जनहि
जहांबाजफिरिगैहै॥राजपत्रमैयेलिषिदीनी॥अरघोरकीपूजा
कीनी॥२५॥सावकरननवछाडयो॥राजा॥अरपठएरषवारीकाजा॥

जै०स्व०
८१
82

असुरषवारे अर्जुन चले॥ अरु वनितन लिआदि और चले॥२६॥ सो
राजजु वनाम उआर॥ सावकरन के संग पठाए॥ सव ए चले
हस्तपै आए॥ श्रीहलदेव को दरसन पाए॥२७॥ करि डंडोत
वीनती कीनी॥ श्रीहरजी सुं अग्या लीनी॥ कुंती और देवकी मि
ले॥ नमसकार करि वन कौं चले॥२८॥ माता तिन सौं ऐसें कही॥
अरजन की अग्या मैं रही॥ अर्जुन हू सौं ऐसै भाषी॥ सोच नास
अग्या नु राषी॥२९॥ वे तो वडे वुद्धि हैं राई॥ इनकी अग्या रहियो
भाई॥ राजन सहन धनंजय चले॥ सावकरन को लै पिले॥
३०॥ सावकरन नव आगे भागे॥ अपनी षुसी फिरन है लागे॥
सव सेना कैं आगे जाई॥ पीछैं सेना आवै धाई॥३१॥ चलत चल
त तव मांडु आयो॥ अरवह मांडु देस कहायो॥ जो लघु जा मांडु

के राजा ॥ गए नर्मेद सब करि साजा ॥ ३२ ॥ अस्त्रीन सह नर्मदा
आए ॥ सो लै क्रीडा करन सिधाए ॥ नदी नर्वेदा घोरा गयो ॥ जाय
जहां जल पीवत भयो ॥ ३३ ॥ राजा नील धुज की भाषा ॥ रानी म
न मंजरी नामा ॥ तिन वह घोरा राज दिषायो ॥ ता ग्रीव ष न सो अ
[illegible] गो ॥ ३४ ॥ मदन मंजरी योवाच ॥ देषो राज एक नृपाला ॥ जा
के गरै मुकतन की माला ॥ अरु यह घोरा श्रीयान सूजै ॥ पकरो याहि
राज तुम हूजै ॥ ३५ ॥ गहि राजा घोरे को पेष्यो ॥ कनक पत्र ताके सि
र देष्यो ॥ वा चौ पत्र राज यह कही ॥ राजि जुधिष्टर को है सही ॥ ३६ ॥
या मैं तो उनि यह लिषि दीनों ॥ जे कोई राज हमारो लीनों ॥ ता को जी
ति राज हम लै है ॥ अरु फिरि ता के सिर डंड दै है ॥ ३७ ॥ वा चौ पत्र रा
जा रिसि आयो ॥ नगर माहि लेवाजे पठायो ॥ अरु सब रानी नगर पठाई ॥

जै०अश्व० [illegible] नरथचढिदाढिगाई ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ सेनमहालाढे [illegible] लघु

[illegible] महाराजि ॥ [illegible] जिपठ चोन [illegible] रहे समाके काजि ॥ ३९ ॥ इतिश्री

महाभारथे अस्वमेदके पर्व वर्नने जैमुनिजनमेजे संवादे गा

ङूआगमनो नाम चतुरदसोध्याय ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ यही कथा

नृपराजसो जैमुनिरिषि कहि दी [illegible] ॥ [illegible] राजमुनि [illegible] सबै जन

मे [illegible] परबीन ॥ १ ॥ जैमुनि [illegible] ॥ चौ० ॥ अर्जुन [illegible]

ही ॥ अस्वसेद्धन कौं [illegible] हारे [illegible] ॥ [illegible] धके लग महुदी [illegible] ही ॥ देखो [illegible]

जकौं न ले जाही ॥ [illegible] नव छोरकौं वह [illegible] को ॥ [illegible]

नपेखो ॥ अर्जुनकी आज्ञा लेपिल्यो ॥ [illegible] के [illegible] नचल्यो ॥

२ अथ चौपई ॥ आगेदेषे [illegible] षके तनी लघु जनाडे ॥ [illegible] राजन

सव आएतिन आडे ॥ जाय पहुँचे [illegible] केतगु [illegible] हो वन लागे ॥ लीलघु

[illegible] बरन गहि: ह[illegible] रारि दगे ॥ ४ ॥ वृषलीलधुज उपरै: वडुवा
नन सो के ॥ [illegible] धफर का [illegible] वृषपै ठोके ॥ कोपि नीलधुज
वृषकै: छाती सर मारे ॥ वृषकेतमुरछा भई: नव सलि हकारे ॥ ५ ॥ स
लि समर जाय लगिए: वडु जोध धकाई ॥ लीलधुज की सेन सब सलि
मारि भगाई ॥ तव एक [illegible] नी [illegible] लै: नीलधुज धाए ॥ सकल जोध
[illegible] करि सलि ई परि आए ॥ ६ ॥ सलि राजा नीलधुज: दोउ जुध
मंडे ॥ आप आप मै उमसे: व हो जोध [illegible] रे ॥ सलि के जोधा लीलधुज:
[illegible] आए ॥ [illegible] पित भये: अर्जुन उनि धाए ॥ ७ ॥ महावा
हु [illegible] आगी ॥ के हे जोध ठठेर हौ: माओ किन पगी ॥
भागे न [illegible] रत है: कोटि न गने आए ॥ तव अर्जुन पै लीलधुज: एक
वान चलाए ॥ ८ ॥ देषि सकल से मा ज्वर तें: आन न वडु सुके ॥ महावाहु

85

जै॰ स्व॰
८३
86

तवब्राह्मनके॥ बानअवडमुके॥ घरयोतेजतवअग्निकोः सीतलताहि
नी॥ तबअर्जुनबाअग्निकीः बहुअस्तुतिकीनी॥ ९॥ चौ॰॥ अर्जुन
उवाच॥ अहोअग्निएकसुनहुहमारी॥ तुमसबहिनमेहौअ
धिकारी॥ सबदेवनकेमुषतुमकहिए॥ तुमसंतुष्ट महासुष
लहिए॥ १०॥ तुमसंतुष्टकरनजगमाहे॥ राजजुधिष्ठरमे
सुछाडे॥ नदीघोघरथातुमहीदीयो॥ गांलीवधनुतुमहीदैली
यो॥ ११॥ इतीबाततुमहीतेपाई॥ अबकिनमेरीकरोसहाई॥ अर्जु
नयहअस्तुतिउचारी॥ अग्नितनकमनमैनहीधारी॥ १२॥ लीलध्व
जकीकंन्याब्याही॥ सुमरबोपुरुषरतलगाई॥ जनमेजयमुनि
नयोसनेहा॥ तबजैमुनिसंसयमोरेहा॥ १३॥ जनमेजयउवाच॥
यहतोकथाकहोसमुझाई॥ मोमनकेसंदेहमिटाई॥ लीलधुजकं

कंन्या दई ॥ ग्रानि कौंन विधि वन पै लई ॥ १४ ॥ मुनियोवाच ॥ मु
नि राजा यह गाथा कहूं । तेरे मन संदेह हिरहूं ॥ नीलधुज की जेठी
भामा ॥ ताकौ कहियत ज्वाला नामा ॥ १५ ॥ जा ज्वाला के कंन्या भई ॥
स्वाहा नाम सयानी भई ॥ व्याहन जोगि भई वह वारी ॥ सवन व्याह
की वात विचारी ॥ १६ ॥ स्वाहा समै हिए की षोली ॥ अपनी माता सौं
उठि वोली ॥ अहो मात सांची कहि लोई ॥ मनि षन मै व्याहन नहि
कोई ॥ १७ ॥ मान वसौ मम व्याहन करियौ ॥ सांची कहौ वात उधि
रियौ ॥ देव सबै निह कलंन कौ ॥ एक एक कलंक सवन मै होई ॥ १८ ॥
विन कलंक एक अग्नि कहावै ॥ वन हि कहू कौ कलंक न लावै ॥
एवातै तव कंन्या कही ॥ स्वाहा जाय अग्नि कौ दई ॥ १९ ॥ महा अग्नि
तव व्याहन आए ॥ निज वन मैं द्विज रूप वनाए ॥ राजा निज मंत्री

जै०ग्य० ४४ 88

तौकहौ॥ अग्निनाहिहिसिधुयहसही॥२०॥ मंत्रीकहैसुनौंहोराई॥जे येताद्विसिअग्निकहाई॥तौअपनोनिजरूपवतावै॥तौसवहीके मनमेंआवै॥२१॥द्विजमुषसौंतवज्वालानिकरी॥निकसिवाह रीअतिहीविगसी॥डाढीमूछजरनजिलागी॥औरनग्रमेंज्वा लाजागी॥२२॥अरनगरीकौंजारतभई॥तवराजानेकन्यादई॥ जातिवेतेतवरही॥तवराजापेकंन्यालई॥२३॥नीलधुजतवऔरौं कहै॥नगकौनकेघरमेंरहै॥अहोअग्नियहकन्यालीजे॥अवतो अनतपयानंकीजे॥२४॥नीलधुजतवविनतीकीनी॥स्वाहासही अग्निकौदीनी॥अरुकछुहमहिमाकरौपरै॥तवतुमआयसहाई करौ॥२५॥यहतौवातअग्निकीगाई॥नीलधुजकीक तसहाई॥ता तेअग्निसुसरदलमाही॥अर्जुनअस्तुतिमानीनांही॥२६॥तवअ

89

र्जुन नारायन चीन्हु ॥ करि अस्तुति हरि मैं मन दीन्हु ॥ हरि सुमर न
करि बान चलायो ॥ तब वह बान अगिन कौं धायो ॥ २७ ॥ बान अगिन कौ
जारन लागे ॥ तबै अगिनि अकुलावत भागे ॥ अगिन जाय राजा सों कही ॥
सुनि मो राजक हत है सही ॥ २८ ॥ पंडव नि बाज आनि छोअवही ॥
[illegible]नीत जैहैं नहीक बही ॥ नीलधुज सुनि कै तब धायो ॥ आय वहां
तसंग्राम मचायो ॥ २९ ॥ वृषकेत मुरछा सौं जागे ॥ तब राजा के रथि
उठि लागे ॥ रथ के आरोघो रा मारे ॥ एक बान स्वारथि संघारे ॥ ३० ॥
राजा और अरथ पै चठे ॥ वृषकेत जा हं जाय विठे ॥ वृषकेत नीलधु
ज मारे ॥ मुरछा भई गिरे धर पारे ॥ ३१ ॥ राजा स्वारथी तहां संम्हारे ॥ नी
लधुज कौं रथ पै डारे ॥ तबै स्वारथी धरि घर लै भागे ॥ जात नग्र मै रा
जा जागे ॥ ३२ ॥ तब राजा वह घोरा लीयो ॥ और सो जब हो लीये मिले ॥ ३३

जै०स्व० अर्जुनतवैवहौतसुषपायो॥ लीलधुजसौंहेतलगायो॥ लीलधुज
सेनसमेत॥ चलेसंगिकीनोंवहोहेत॥३४॥ दोहा॥ लीलधुजसे
नासहतचलेबाजसंगजाय॥ नीकैकरिमुनिघोकथाहोजनमेज
सराय॥३५॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्ववर्नेनेजैमुनिजन
मेजयसंवादेलीलधुजपयानोनामपंचदसोध्याय॥१५॥ चौपई॥
यहीकथाजवजैमुनिबोले॥ अहोराजतवघोराफेले॥ दछिनदिसकौं
घोराचले॥ चलेजातसगिसवहीमिले॥१॥ सेनसकलपीछेहीरहे॥
अरुपहारवाजतवगए॥ पर्वतमाफचरनतवलागे॥ चरतेजाय
सिलासोपागे॥२॥ कहौयकजायषुजावतभयो॥ बाजिसिलासो
लाग्योरह्यो॥ सिलातेलोगचरतहैनाही॥ सोअरषीसुरतहांरहांही॥३॥
वनरायएछैकहौगुसाईं॥ बाजहमारोपावतनाही॥ कहौएकला

गिरह्यौवहवाजा।सोतुमहमहिकहौरिषिराजा॥ ४ ॥सोभनउवा
च॥ तबयहकथासोभनरिषिकही॥ अर्जुनसुनऊकहनहुंसही॥
हतौसिलाउदालिकघरनी॥ सोभुगतीअबलौयनकरनी॥ ५ ॥सो
त्रियापतिअग्यानहिमानी॥ सोयहसिलाभईरिषरानी॥ तबरि
षइनकौंदयोसराप॥ सिलाभईसोसहैसंताप॥ ६ ॥ बोलीत्रियाक
हैरिषिराई॥ अबयहदोषकबमिटिजाई॥ तबैउदालिकरिष
यौकही॥ प्रदमनिहाथिउधरिहौसही॥ ७ ॥ परमेस्वरसुतप्रदम
निआवै॥ तिनकेछिएमोषितुमपावै॥ राजजुधिष्टरजगिकेकाः
जा॥ सोवकरनछोडैगेवाजा॥ ८ ॥ सोवहवाजइहांचलिआवै॥
अर्जनअरप्रदमनिसंगिधावै॥ सोतुवछिगिआवैगसुलारा॥
सोतोहिछिएयकरैउधारा॥ ९ ॥ इतनीवातउदालीककही॥ सो

जै०अस्व०
४६
92

त्रियाइहांमिलाइकैरही॥ इतीसुननसोभनकीगाथा॥ प्रदवनिअर्जु
नकीयेगाथा॥१०॥ सोभनरिषिसंगिआयवनाए॥ सावकरनि
मिलआगेपाए॥ अर्जुनप्ररमनिछोईमीली॥ सोत्रियाछुटी
आपनेभली॥११॥ जान्युइनमोउधरनकोयो॥ आसीरवाददी
उनकौंदीयो॥ मिलसोततछिनमानवभई॥ तवेउदालिकलगग
घरिगई॥१२॥ तवसोभनसौंकरेप्रनाम॥ अर्जुनअरप्रदवन
सेनाम॥ ऐसोवाजरहोतहांलागो॥ अपनीषुसीचल्योमनआगे॥
१३॥ अरसेनापीछेसांचली॥ अर्जुनसंगिफोजम ्मिली॥ साव
करनजादेसनआवै॥ जापीछेसवसेनाधावै॥१४॥ दोहा॥ सव
करनसंगिसेनसवःफिरिहैदेसवदेस॥ मारहं धुजकेनगरःजा
कीसुनऊनरेस॥१५॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्ववर्न

नेजैमुनिजनमेजयसंवादेसोभनरिषिस्वरमिलापनोनाम: षोडसोध्याय॥१६॥ ॥जैमुनियोबाच॥दोहा॥ यहीकथानैमु निकही:सुनिजनमेजैराउ॥हंसधुजकेदेसमे:गयोजगिकोवा ज॥१॥चौपई॥फिरियहकथाकहैसमझाय॥अबमुनियोजनमेज यराय॥गयोबाजहंसधुजदेसा॥अबयहगाथासुनहुनरेसा॥२॥ गएलोगहंसधुजजहां॥कहीबाजकीबातेंतहां॥हमरेदेसबाजए कआयो॥सुनहुराजअरउदमनिआयो॥हंसधुजनवयहबिचारी केअर्जुनहरिकेअधिकारी॥४॥नएहयहमवहोदिनजीए॥पेह मररसकवहुनहिकीए॥अवविचारमनमेयहुआनु॥अर्जुनसों चलिकेजुधठानु॥५॥आरक्षाकोंहरिचलिआवे॥नवेहमसकोदर सनपावे॥यहविचारहंसधुजकीनु॥सावकरनकोंतवहरिलीनु॥

93

जै॰ अ॰ स्व॰ ॥ तब अर्जुन मन मैं यह आनी ॥ बाज हसौं हंसधुज जानी ॥ हंसधुज
५७ सब सेना लए ॥ निकसिन अवेस ठे भए ॥ ७ ॥ केतीएक संगि चले सो कहे ॥
९४ अरु केतीयक नग्री मैं रहैं ॥ अकईस हजार महामद हाथी ॥ अरथ
हजार इकैं नरिसाथी ॥ ८ ॥ अरु असवार लाष एक चले ॥ असी सेन
राज संगि पिले ॥ फिरि नग्री कौ सब ही घेरा ॥ हंसधुज तब दियो ढंढे
रा ॥ ९ ॥ को यन ग्र मैं जो धारहै ॥ असी वात राजत बकहे ॥ जाकौं लूटि
करैं सिर डंड ॥ कै तिहि मारि कर है गो षंड ॥ १० ॥ असें राज ढंढोरा दीयो ॥
तब सब जोधा आवन कीयो ॥ तब वे जोध समर कौं चले ॥ अपनी प
हनारि नसौं मिले ॥ ११ ॥ मातावन सौं असें कही ॥ अहो पुत्र तु मल रि
यो सही ॥ हमारी सीष सुनु सब लोई ॥ भार थ मै भागो मति कोई ॥ १२ ॥
श्रीकृस्न ध्यान हिरदै मै धरौ ॥ असे पुत्र जाय जुध करौ ॥ सुनि के

95

सीषतजैसेसबभवना॥ तवैसमरमैकीनुगवना॥१३॥ दोहा॥ आन
वढि देषनलगीःसबैनग्रकीनारि॥ श्रीकृस्नसमरमैआयहैःयह
सबचढिविचारि॥१४॥ चौपई॥ ऐसैसबत्रीयामनमैधारी॥ चढिग
ईअपनेअटाअटारी॥ हंसधुजसुतसुधन्वानामा॥ जासुधन्वाकीवो
लीबामा॥१५॥ अबनाथतुमभारथजावो॥ तवश्रीकृस्नदरसतुम
पावो॥ तवतुमकीजोषवरिहमारी॥ मोहिवुलावोमैबलिहारी॥१६॥
आनकहततहालागीऊरे॥ राजाषवरिकरीतिहिबेर॥ सुधन्वाक
हारह्योकहोभाई॥ मंत्रीसुकहिमोहिवताई॥१७॥ तवराजासंमंत्रीक
ह्यो॥ यहानआयोघरिहीरह्यो॥ तवराजाकेआयुसभयो॥ राजाहुकम
पयादेनुदयो॥१८॥ हंसधुजोवाच॥ अरेपयादेहोघरिजावो॥ सुधन्वा
इहांबांधिलेआवो॥ तौलौसुधनआयभयोठाढौ॥ राजादेषिरिसव

जै०स्त०

८८

96

कुवाचो॥१९॥राजोवाच॥अरिल॥ममअग्यानहिमानी:रहौंडरा
यकै॥राजाकहीरिसायकमारोजायकै॥कायरकवरसमरमेंआ
योनांहिरे॥नांषोतातेतेलकराहीमांहिरे॥२०॥दोहा॥राजाकौ
मंत्रीकुतौसुमतनामहैजास॥सुधन्वाकोवहलैचल्यो:गयोकरा
हीपास॥२१॥सुधन्वोवाच॥अरिल॥सुधनकहीकराहीअवमे
मेटिकै॥रहौंसमरमेंडरपिअग्यामेंमेटिकै॥सांचीकहौंकरहो
वातकेफेलमें॥इतिदिविलैपरयोकतातेतेलमें॥२२॥सो०॥कियोक
रुकोध्यानकदिकराहीमेंपरयो॥कोमोहिराषैआनतुमविनगो
विंदज॥२३॥चौपई॥ज्योंहाथीग्राहतेंछुडाए।ताकीवेरपयादेधा
ए॥अंबरीषकेआएआप॥दुर्वासाकौमेट्यौआप॥२४॥द्रोपतिक
हनामेनवभाषी॥लज्याराजसभामेराषी॥संकटसोंप्रहलादउवारयो॥

भक्तिहेतनरसंघवपुधास्यौ ॥२५॥ अहैांकलजरकहावषानु ॥ तुम
सवहिनकेमनकीजानु ॥ करुनामयकरपकस्यौजाय ॥ अवकिन
मेरीकरौसहाय ॥२६॥ तवसवराजापिरजापेषे ॥ सुधन्वापरोकराही
देषे ॥ संषनामब्राह्मनएकभाष्यौ ॥ सीरोनेलकराहीराष्यौ ॥२७॥ सु
दिजकूंदीचुगलीषाइ ॥ तवसुमंतएककीयोउपाइ ॥ श्रीफलच्यारि
कराहीडारे ॥ देषतसकलजरतहेसारे ॥२८॥ जरतनौएकउछरिकै
दागयौ ॥ श्रीफलसंषमूंडमेलागयौ ॥ ताकेश्रीफललागयोरह्यौ ॥ छग
छगसवहिनमिलिकैकह्यौ ॥२९॥ सुधन्वातवैतेलसोकाढे ॥ सवसे
नामेआनदवाढे ॥ साधसाधसवहीकहउठे ॥ सवकेसुधामेघमनु
वठे ॥३०॥ तववहचुगलषिसानोंपस्यौ ॥ सुधंन्वामेटिकैराडस्यौ ॥
तववादिजकौदेषिपस्यौ ॥ सुधन्वाग्यानहिएमेधस्यौ ॥३१॥ इनतौ

जै०अ०१४ मेरी चुगली षाई॥ सो अब विछ जरत है भाई॥ सो या आप जस ते वहट
४९ स्यो॥ सुधंन्वा कहि दिवराही पठ्यो॥३२॥ पर न सुधनको सी गति भई॥ तेल
98 अनलसीतल ह्वै गई॥ द्विज कौ लेन ववा हरि आए॥ तव राजा दोउ
पहिराए॥३३॥ राजा तवै अंक भरि लीनौ॥ सुधन्वा रथ आरोहन कीनौ॥ सुधन्वा जुध करन कौं चले॥ पीछे ते जोधा वहु पिले॥३४॥ दोहा॥
जो कोउ चुगली खात है॥ ताकी यह गति होय॥ ज्यों भयो द्विज संषवहु॥
बुरी कहै मति कोय॥३५॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेद्धके पर्व वर्न
ने जैमुनि जनमेजय संवादे हंसध्वज जुद्ध पयानो नाम सप्तमो
ध्याय॥१७॥ ॥जैमुनियोवाच॥ सोरठा॥ अव वैसुनो वृतु जनमेजय राजा सुनहु॥ हौं न लख्यो तव जुध॥ सुधन्वा अरजुन के तवो॥१॥
॥छंद दिषरी॥ जैमुनि कहत अव सुनहु राय॥ सुधन्वा संवर मे वि

टहेजाय॥ तवक वरहेकारे हंसधुज॥ वृषकेतसुधनआगपठौहे जुध ॥२॥ वृषकेतलारुसन्नवान॥ सुधनाग्रधफरकाटेनिधान॥ वृषकेत सुधनवहोवांनसोकि॥ तेफिरेहेवानग्रधफरहिरोकि॥३॥ वृष केतकहीस्वारथसधीर॥ हंसधुजलगरथहांकिवीर॥ जैसारथ हांकोवीरमोर॥ लेकुछीनिवाजवहोकरिहोरोर॥४॥ सारथिर थहांकोवकुमरुरा॥ तहांसेनकरीवकुचूरचूर॥ सवसेनमाहि रथचल्योहेजाय॥ हंसधुजलगतवगएहेध्याय॥५॥ हंसधुजबो लेकोनआहि॥ तुमकहोसुधनरमेोननाहि॥ तवसुधनकहीतु मकोनसूर॥ सवफौजफारिआएहजूरि॥६॥ वृषकेतोवाच॥ हमक रनपुत्रवृषकेतनाम॥ हथनापुरकहिएहमहिगांम॥ वृषकेत कहीतुमकवनकेकु॥ हमवृझतहेउत्तरनदेकु॥७॥ सुधनोवाच॥

·99

जै॰ स्व॰
५०
100

हमहंसधुजसुतसुनहुलोय॥ सुधनाजाननसवनामसोय॥ जि
नलयोतुम्हारोकरनवाज॥ सोहंसधुजएमहीराज॥ ८॥ हषके
तसुनतचढ्योवानभक॥ सुधनाकोनुंहूकहूक॥ सुधनारथडुजै
करिग्ररोह॥ हषकेतसुधनसंजुझहोह॥ ९॥ हषकेतरथकाग्रे
सुधंन॥ हषकेतचचेरथग्रौरग्रान॥ तवबहोरिजुझकोनंप्रपा
स॥ हषदेषवानकरिसुधनमार॥ १०॥ तवसुधनपरेमुरछतहो
य॥ सवपेषिपावमंडेनकोय॥ हषकेतभगाईसेनसव॥ सुधनामु
रछोसोजगेतव॥ ११॥ सवहषकेतमारेसंजाय॥ मुरछायहोयध
रपरेहेजाय॥ घटमनिथाएश्रीहंससुत॥ सुधंनामारेहंसधुजए
त॥ १२॥ सवसेनभगाईपरवंति॥ वहोजोधामारेप्रनिग्रनि॥ फि
रिसुधनाजागेहैसुचेत॥ उठिकेललकास्योलेतदेत॥ १३॥ केउ

वांनसोकिफिरिगद्दामुक्त ॥ सबकेरथकीएटुकटुक ॥ फिरिजोधन्न
टेरथग्यानग्यान ॥ जुधकरनलगेवहोमोकिवान ॥ १४ ॥ वहोजुग
कीनुदूरेसनाह ॥ वहोचलेपारलोहूप्रवाह ॥ सबषेतपेषिजेसें
समंध ॥ वहोवारवारउठेकवंध ॥ १५ ॥ दोहा ॥ भयोसमरवहोसेनमें ॥
सुनिजनमेजयराय ॥ फिरिश्रागेजुंकहहतहूं सोसुनुचित्तलाय ॥ १६ ॥
इतिश्रीमहाभारथेश्रसमेदकेपर्वववर्नेनेजैमुनिजनमेजयसंवा
देसुधंन्वाजुधवरनं नोनामःप्रादसोध्याय ॥ १८ ॥ ॥ जैमुनियो
वाच ॥ चोपई ॥ जैमुनिकहीराजसुनिलीजे ॥ कहूंकथानीकेसुनि
लीजे ॥ जनमेजयतवश्रर्जुनश्राए ॥ देषतसुधनामुनमुषधाए ॥ १ ॥
सुधंनोवाच ॥ सोरठा ॥ भीषमकरननरद्रोन ॥ भारथमैजीतेरुते ॥ नात
रजीतेकौन ॥ जोअहलस्वारथीनाकुते ॥ २ ॥ चौपई ॥ भीषमकरणद्रो

जै॰ उ॰ स्व॰
५१
102

नतुमहूए ॥ कृस्न स्वारथी औरथ भए ॥ सो तौ तनक श्रीकृस्न जितौं नै ॥ हमै
जीतिहै ते न वह मन जानै ॥ ३ ॥ छंदषटपद ॥ सुनत सुधन के वचन : धनंज
य क्रोध कियो अब ॥ सो कित्र अग्नि को बान : सेन जारन लागे सब ॥ वारिव
रन को बान सुधन सीतल कीनी वन ॥ गहो चंद्र अर्ध बान धनक काटे
करि निर्गुन ॥ जेह काटि निर्गुन कियो : सुधन सकल सेना मथी ॥ गयो अ
रा मारे तहां : एक बान करि सारथी ॥ ४ ॥ इहि विधि हयो स्वारथी : धनंजय मन
भय आनिय ॥ वाम हस्त गहि बाग : धनक दछिन कर आनिय ॥ धारि कि
स्न को ध्यान : बांन गहि पान कियो जति ॥ भये स्वारथी आय धाय : अरजु
न जादुपति ॥ भए आय स्वारथी : कही बाग मो दीजिए ॥ अर्जुन सम्हारि
यह सम रूप अव : सावधान अब कीजिए ॥ ५ ॥ चौपई ॥ अस्त्र की बाग गु
पाल हदीनी ॥ औरै पांन डंडवत कीनी ॥ कहीं अवे पर तं अपाले ज ॥ ती

नवानसुधनाकेरै कुं ६ देषोबांनअवेमेसारू तीनवानकरिसुध
नामारूं नहिमारौंतौपंडवग्यान देखिचलततहैसवहीवान ७
सुधनोवाच अडिल कहीसुधनमहावाकुबावरेवकतहौ तीन
बांनकरिमोहिमारनकहतहौ सोतुमवाहीबांनकाटिमेडारिहौं
नहिकाटूंतौमोरप्रतग्याहारिहौ ८ जैएकाटूंबांनप्रतिग्यामानि
यो नहिमोजननीकोपुंनिअवेरथाजांनियो सबमेसुधनाअसेक
हीकहांनिरे अतिअर्जुनकरिरोसचलायोबांनरे ९ चौपई प्रथ
मबानअर्जुननवरीये सुधनाकारिदूकदोईकीये दूजोबांनधनंज
यमारौ सुधनाकाटिअधफरैडारौ १० सुधनासायककाटेअैंन
नवजाइपनिवोलेवेन अहोधनंजयतुमकहाकीनी विनिदरसैंप
रनग्यालीनी ११ हमननहिवरुकेनुमकनधरी सोयहवातभलीन

जै०१स्व० ५२ 104

हिकरी॥ सुधना वडोजोध हेलोई॥ इनकौ जीति सकै न हि कोई॥ १२॥ तव गोविंद एक यह कीयो॥ अपनौ पुनि अर्जुन करि दीयो॥ कही पुनि ते जीतौ अवै॥ गहे वांन अर्जुन ने तवै॥ १३॥ सुधना कहे सुनु सव लोई॥ हंसधुज मन मैं जो होई॥ हरि कौ ध्यांन सदा हिय धारै॥ और सदा इष्ट वन कौ पारै॥ १४॥ पतिव्रता मो महनारी राखै॥ झेले मो चग्र सति नहि भाखै॥ अरमो हिय मै है हरि ध्यांन॥ तौ अव काटि डारि हौ वांन॥ १५॥ तव अर्जुन को वांन उछाह्यौ॥ अर्ध चंद्र सर सु वह काह्यौ॥ कारि वांन सुधन तिहुं वारा॥ सव अकास न यो हैहै कारा॥ १६॥ अर्जुन अर्ध चंद्र सर सारे॥ सीस काटि सुधना धर पारे॥ हैहै कार सेन मै भयो॥ सो वह सीस रुद्र ही गयो॥ १७॥ दोहा॥ सो सर से नो मै परौ: मारी मन अपार॥ सो सत्रु पायन परौ: मुक्ति होन को वार॥ १८॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेद के पर्व वर्नने

जैमुनिजनमेजयसंवादेसुधनावधनोनामएकोनविंसोध्याय॥ १९ ॥ 105

॥ ॥जैमुनियोवाच॥ अवसुनियोजनमेजयरायन॥ सुधनासीस पर्‍यौहरिपायन॥ तववाखिरतेजोतिनिकासी॥ सववेषतहैतहाप्रका सी॥ १ ॥ जोतिनिकसिदेषतसवजांही॥ गईसमाहिहरिकेमुषमांही॥ ह रिमुषजायमईहरिमई॥ पहोपनकीवरषनभमई॥ २ ॥ तवराजाहंसधु अध्याये॥ माथोउठ्योकुतोजहांआये॥ सीसहाथिलैकेउकरानौं॥ हिएल गायवहोतविललानौं॥ ३ ॥ अहोपुत्रहमस्योहीरहे॥ आपवेगिवेकुंठहि गहे॥ असेराजाकरतविलाप॥ आएसुरथदेषिसंताप॥ ४ ॥ वडौपुत्रजु ऊकरनसिधायो॥ तिनहिआयराजासमझायो॥ हंसधुजमोहातवमारयो॥ सीसलेयहरिकेरथडारयो॥ ५ ॥ तवश्रीकृस्नभक्तिहितलायो॥ सीसलेय अंतरीछचलायो॥ लेहरिहाथितहांवहगाथौ॥ सीवसुमेरमनियाकरि

जै०स्व० ५३ 106

राखो॥६॥तबसुरथराजापै आइसमचायो॥करिडंडोतनसुमकौंध्यायो॥सेनमाहिलवआयोसही॥तवहरिअर्जुनसोंयहकही॥७॥अबतुमरा हिजीतिहौंनाही॥बडेजोधआयेरनमांही॥तबहरिप्रदमनिआज्ञादीनी॥कमलकुवारमानिसोलीनी॥८॥छंदषटपद॥तवप्रदवनिवासुरथकैंसरपंचचलाए॥सोसुरथसरकाटिकैंरथफेरेटिलाए॥फिरिप्रदवनिवासुरथकेकाटेरथसोहे॥सुरथस्वाररथीआयकैंभ न अरोहे॥चटेसुरथइजैरथआयप्रदवनिमारियो॥तबैमुरछितहोय गिरियरेप्रदवनिपैहौमोडारीयो॥९॥तहीसुरथस्वाररथी॥वीरमेरेरथहांको॥जहांधनंजयहोयवीचिकोउनाहिनजंको॥सुनतस्वाररथीवलनसुरथकौंलैतहाधाए॥कितेसेननिरदलितवेगअर्जुनलघयाए॥सेनफारिआयोनिकटसुरथवहोतसेनामथी॥कितोजोधजानैसकी

य हो यह जारमहारथी ॥१०॥ चौपई ॥ महारथी तुम ऐसे जांनु ॥ ताके संग कम्रुति वषांनं ॥ दसहजार जानें ... थी ॥ बीसहजार रहते हैहां पी ॥११॥ साठिहजार रत ... ॥ ... कलाछयधारे मारा ॥ ... जास संग ... वे ॥ सो ऐसे महारथी कहावे ॥१२॥ ऐसे दोहजार ... ... ॥ तव अर्जुन कों आय हकारे ॥ विविजोधत ऐ ते हय ॥ तव वह देखे षीम ए ॥१३॥ छंदषटपद ॥ हौन लगे ... सुरथ अर्जुन संगि ... ए ॥ ... पा ... करि वान चलाए ॥ कही सुरथ अव ... अर्जुन सौं बोले ॥ ... नवडु समरि संकि जोधाव ... ॥ ... लग्यो वान सुरथा न रथ ... को सपी ... ॥१४॥ दोहा ॥ ... सुरथ को वीस कोस पर वान ॥ उस ... धनंजय अरथ के सुरथ लगायो वान ॥१५॥

ॐ०स्त्व॰ ५५ 108

॥छंदषटपद॥ सुरथलगाए बानगंगनिअर्जुनरथलौसौ॥ उग्राग्रस्यसवरेषिकैनरस्वपीछोमोसौ॥ अर्जुनकाटेसुरथकेरथबानन
मारे॥ सुरथमोकिसरपंचतवअर्जुनरथफारे॥ बीसकोसरथउसरतोःलगतसुरथकेबानकी॥ जेलंगुरलपटैनहीःजहांआयहनुमा
न॥ १६॥ दोहा॥ जैलंगुरलपटैनही हनूमानकोआय॥ तौवैसुरथ
उडावतौवीसकोसलौग्राय॥ १७॥ छंदषटपद॥ तवबोलेश्रीकृष्ण
धनंजयसुनहुहमारी॥ वडेजोधहैसुरथमहाकातवलधारी॥ म
हावाहुएवासुनतहरिकोसिरनायो॥ अर्धचंद्रलैवांनसुरथकोसीस
उडायो॥ सीससहसपायनपर्यौडर्यौसूरथपैआयकै॥ आपल
यकरछीयकैःदैनिजभवनपठायकै॥ १८॥ चौपई॥ सुरथसीस
हरिपायनग्रायो॥ तवश्रीकृस्नभक्तिहितलायो॥ तववहसीसहर्ष

स्वकरलीयो।धनिधनिसुरथसवननमिलिकीयो॥ ॥सोसुरथह
रिकरसंमिले।जिहि प्रतापवैकुंठहि चले।परमभक्तलहाआप
तिभयो।मुक्तिपायवैकुंठहिगयो॥२०॥दोहा॥सुरथगएवैकुंठकौं
तिनपायोनिजधाम।लसध्यानहियमैधस्यो:सको सुरथकोका
म॥२१॥इतिश्रीमहाभारथेअसमेधकेपर्ववनेमै[illegible]मुनि[illegible]कोन
यसंवादेसुरथवधो[illegible]नामअध्याय॥२०॥ ॥चौपई॥यहीक
थाजेमुनिरिषसुनै।होतीजनमेजैनृपसुनै।अहोराजहरिगरु
डबुलायो।तवहीगरडरूपपैआयो॥१॥आयोगरडकहीजगदी
स।यहममपासमैभक्तकोसीस।फिरिवोलेयहकारिजकरियै।सी
सपिरागमाहिलेधरियै॥२॥दोहा॥कहीजयाकेगंगमै:रहैजहाल
गअस्त।तवलगवहवैकुंठमै:ज्ञानीसदावसंत॥३॥चौपई॥ ॥

जै॰७स्व॰ सोवैसीसत्रवैनीमांही॥ धरियोगरुड़अंतकछुनांही॥ सुनतहीगरु
५५ ड़गवननतवकीयो॥ चलेपिरागसीसगहलीयो॥ ४॥ स्यनसिवाकरत
110 तपतहां॥ गएपिरागगरुड़हैजहां॥ देष्योसीसगरुड़पैतबही॥ हरभृं
गीकोंतगयादई॥ ५॥ होभ्रंगीकारिजएकआवो॥ हेवहसीसगरुड़
गहलावो॥ वचनसुनतभ्रंगीउठिधाए॥ माथोलैनगरुड़पैआए॥
६॥ भ्रंगीवचनगरुड़संकेहै॥ सुनतवचनहठठैकैरहै॥ कहोगरुडह
मकौंदेसीस॥ मालाकारिमागिहैईस॥ ७॥ सीसहेतिहरिमोहिपठायो॥
द्भृंगीसोतुमपैआयो॥ सोअवकह्योहमारोकीजे॥ लेयहसीसईस
कोदीजे॥ ८॥ ॥गरुडोवाच॥ मोपतिकीआग्यानहिऐसी॥ भ्रंगीआप
कहतहोजैसी॥ मोप्रभुकहीत्रवैनीडारौ॥ अवऐसोहीमनोहमारो॥
९॥ भ्रंगीकहीहमलैहछिडाय॥ देषैसीसकोनलिषिजाय॥ इतनी

कहतछिडावनलागे ॥ टहकनकेमारेअंगभाजे ॥ १० ॥ गरडआ
पनीटहकनमारे ॥ महादेवआगेअंगपारे ॥ महादेवफिरिकृय
हकीनी ॥ नंदीगणकोआज्ञादीनी ॥ ११ ॥ मस्तगलेगण नंदीगण
चल्यो ॥ भटकोवहोतगरुड.नहिमिल्यो ॥ नेकस्थानतेमिल
ननपायो ॥ तीनलोकनंदीफिरिआयो ॥ १२ ॥ कहुनादीयाचरन
नपायो ॥ नंदीगयोत्रवेनीध्यायो ॥ नवहगरड.आगमेदेख्यो ॥ म
स्तगडस्यो त्रवेनीपेख्यो ॥ १३ ॥ तवनंदीगणमस्तगलीनो ॥ आनु
रआयमहासिवदीनो ॥ संकररुंडमालमेराख्यो ॥ पारवतीहर
सोनवआख्यो ॥ १४ ॥ पार्वत्योवाच ॥ सोरठा ॥ पूछोसंकरदेव ॥ भे
वकहोयासीसको ॥ कहोजकारनकेव ॥ इतोजतनयाकोकियो
१५ ॥ चोपई ॥ महादेवबोलेनवबैना ॥ उमासोइमरनकेऐना ॥

जै०॥ख्य॥ यह तौ परम भक्त कौ सीस॥ उन्न मक रिछ्यौ यौं जदुईस॥१६॥ आप क्र

स्न आपन निज कर संछौ यो॥ तातें यह उन्नि मकरि लीयो॥ परम भक्त

सों हेत हमारो॥ तातें लगो सीस मो हि प्यारो॥१७॥ दोहा॥ जैमुनि रा

गा सु कहै सुनि जनमेजय राज॥ हंसधुज नृप उमगि कै किया॥

जुध कौ साज॥१८॥ छंद रसाव॥ हंसधुज कुरु होन लगे॥ हंसधु

ज सेना सव जगे॥ हंसधुजन मारे वेगे॥ फिरत तेन सव भगे भगे॥१९॥

हंसधुज सेना सव लाए॥ अर्जुन सो जुध करन सिधाए॥ क्रस्न ध

नंजय कौ दरसाए॥ रहे कोहं हंसधुज आए॥२०॥ वले हंसधुज समर

आए॥ धनंजीध राम स्व वहौ तपाए॥ फौज सोर रज सुरछि पाए॥ रज

उडि गगन दिवाकर छाए॥२१॥ चौपई॥ सेना हंसधुज की चली॥

सेन सेन दोउ जाय मिली॥ देषां देषी भएत वदोई॥ अर्जुन ओर हंस

धुजसोई॥२२॥तवश्रीकृष्णमनोरथकीनें॥मनहीमैंआलंघनदी
नें॥हरिसवहीकेअंतरजांनी॥हंसधुजकेघटकीजांनी॥२३॥रथ
सोंउतरितहांयहकही॥हंसधुजसोंमिलिहैंसही॥कहोमोरहंस
धुजकीजै॥यहमैंआरआलंगनदीजैः॥२४॥रथसोंराजउतरिकै
परे॥कनकपत्रनामप्रभुकौंकरे॥हरिउठायकैंवरसोंभेटे॥हंसधुज
पायनमेलेटे॥२५॥भेटेकृष्णप्रमकिनैंना॥नऋपराजबोलयेनैंना॥
हमारौपुत्रसोकसवगयो॥तवतेंदरसतुम्हारौभयो॥२६॥औरकही
हमदरसनपायो॥सोकमोहहमइंरिगमायो॥राजजुधिष्टरलघ
तुमजावो॥मोहियमांहीवासकरावो॥१७॥हंसधुजघोरानवदीयो॥
ग्रहगोपालकौंगोंवकीयो॥पांचदिनाहरिअर्जुनराषे॥वहौतवी
नतीराजाभाषे॥२८॥दोहा॥पंचदिनावहोभावसोंःराषेनग्रमझारि॥

जै०अ्स्व०
५७
114

कृस्न पधारे भवन कौ: राज बाजि कै लारि ॥ २९ ॥ इति श्री महाभार
थ अस्वमेद कै पर्व बर्नने जैमुनि जनमेजैय संवादे हंसधुज मि
लापनो नाम इक विंसो ध्याय ॥ २१ ॥ ॥ चौपई ॥ फिरि यह कथा क
हत है जैमुनि ॥ जनमेजैय राजा फिरि अव सुनि ॥ छठे दिवस उहा ते
उठे ॥ पटल देस कौ घोरा छुटे ॥ १ ॥ चले जात अरण्य इक आयो ॥ सघ
न बन कौ नाम बतायो ॥ स्राव करन वा बन मै आवा ॥ जहां पंषियो रए
कत लागा ॥ २ ॥ जहां वाजि जल पीवत भयो ॥ घोरा ते घोरी ह्वै गयो ॥
घोरे की घोरी तब चीन्ही ॥ अर्जुन मन दुचताई कीन्ही ॥ ३ ॥ तब घोरी
बेहड मै गई ॥ घोरी सौं आहर तहां भई ॥ तब अर्जुन अस्तंन दुषकीनें ॥
करि अस्तुति कृस्न कौं चीनौं ॥ अहो कृस्न जु जो तुम आए ॥ सब संक
ट ते जाय छुडाए ॥ हम तो निज चरनन के वासी ॥ अव अनु होत हमा

रीहासी॥सकलमेटिवेकोंतुमलायक॥तुमहीसमरथहौसुषदायक
तवश्रीकृस्नसुनतहीधाये॥करुनांजांनितहां चलिआए॥६॥तहां
आयसवकोंसुषदीयो॥कृस्नवायततेघोराकीयो॥जनअर्जुनकेसंस
यमेटे॥सवहिनमिलिहरिकेपदमेटे॥७॥जनमेजयतववकियोवबे
क॥वहुरनलागेसंसयएक॥घोरातेघोरीकोंभयो॥घोरीवहौरिवाघ
व्है गयो॥८॥सोयहकथाकहोसमझाई॥मोमनकेसंदेहमिटाई॥तुम
विनकहोकोंनसमझावे॥विनसमझेंकैसेंमनआवे॥९॥जैमुनियो
वाच॥दोहा॥एकसमैवनकेविषैःसिवाजायतपकीन॥तहांएक
राछिसगयोःसुनकुनृपतिपरवीन॥१०॥चौपई॥पारवतीतपकरती
तहां॥गयोदेषिराछिसएकतहां॥तहांजायवहठाढोभयो॥ऊंमासों
हसिकेंतवकह्यो॥११॥राछिसोवाच॥तुमऐसीसुंदरीहारहो॥या

115

जै॰ग्र॰ आरनि मे कोउ दुष सही॥ मम गृह मै चलि करो विलासा॥ या आरनि
५८ कोर होउदासा॥१२॥ तुम अस्त्री अ मम भरतार॥ मम अस्त्रीन मे
116 तू सिरदार॥ सिवा सराप तवै ही दीयो॥ ततछिन अनुर मैय नहां
कीयो॥१३॥ उमा आति रिसाय कै कही॥ आरनि आय पुरष जो रही॥
या जो पानी पीवै ताल॥ सो नर नारि होय ततकाल॥१४॥ दोहा॥
जो कोई या ताल मै पान करत है तोय॥ पुरुष लिंग तजि है इहां प्रग
ट भामिनी होय॥१५॥ चौपई॥ यही सराप सिवा तव दीयो॥ राजि
जाय तहां घोरी भयो॥ राज कही जैमुनि सौ ऐसे॥ घोरी ताय भयो
कैसें॥१६॥ जैमुनि रोवाच॥ जैमुनि कही सुनु हो राजा॥ भयो वाहन
ताते वह राजा॥ विप्र एक तप बैठे तहां॥ आयो मगर महा एक जहां॥
॥१७॥ द्विज को मगर पाव गह लीयो॥ रिसि कै विप्र श्राप तव दीयो॥

आजहिनेयाबेहइमाही॥ आयनालग्रस्नानकरांही॥ १८॥ जल
मंजनकरिहैजोकोई॥ मेरोबचनवाघजोहोई॥ यहीसरावदेततदि
नभयो॥ चोरीजायवाघतहांभयो॥ १९॥ दोयप्रसंगराजसोंकहे॥
जनमेजयसुनियौंअवयहे॥ वहोरिवाघतेघोराभयो॥ बलिके
देसत्रियनकेंगयो॥ २०॥ असौराजकरतहेताके॥ वेटाएकहोय
हैजाके॥ सोवादेसवाजितनआयो॥ अरतापीछअदमनिधायो॥ २१॥
जोवनासदपकेनवनावन॥ सोअसुंपीछेधाएआवत॥ नववह
राजत्रियनमिलिदेषो॥ रानीसोंकहिजायवसेषो॥ २२॥ अहो
पर्मलाअसुरएकआयो॥ योकहीरानीजायदिषायो॥ रानीपरम
लावाजिमगायो॥ लेअपनीघुरसालुवधायो॥ २३॥ दोहा॥ वाजि
वाधिघुरसारमैंः लईसेनवहोरि॥ कलीपमेलाजुद्धकोंः निकसी

जै०अस्व०
५९
118

नगरमोइरि॥२४॥इति श्रीमहाभारथे अस्वमेदके पर्ववर्नने जैमुनिजनमेजयसंवादे रानीपमलावाकिनोनाम बाविसोध्याय॥२२॥

॥ ॥जैमुनियोवाच॥विरध चौपई॥ जैमुनिरिषितवकहैतहैजनमेजयराइ॥ अवयहगाथाकहतहौंनीकैसमझाई॥ जुझकरनकौंपरमलारांनी॥ असवारा तीनलाषमिलिचलीचढिसवहीमिलिदारा॥१॥चौपई॥ गुडाकेसदेषेतहांठाढे॥ पिलीफौजमेनावहीवाढे॥ वनसोंदेषादेषीभयो॥ अस्त्रीनतवअर्जुनसोंकह्यो॥२॥ आनिरहीतुमहमरेयेहा॥ अवतुमहमसोंकरोसनेहा॥ औरआनितुमहमकौंवरौ॥ विनआईकाहेकौंमरौ॥३॥ आनिहमारेहोभरतार॥ जुधवजीतौकऊलगार॥ जुधकियेहमकौनहिजीतौ॥ हमनहिमरिहैंतुमहीवीतौ॥४॥ अर्जुनमनमैयहविचारी॥ श्रीरामचंद्रसुपनिषाउवारी॥

श्रीरामचंद्रजूकोनंहांमा॥सुपनिषाकीकाटीनासा॥५श्रीरामचंद्र
जूकीनीतसे इनकीनाककाटिहैऐसे॥यहविचारअर्जुनमनहां
कीयो॥अर्धचंद्रसायकगहिलीयो॥६॥नामातकिसायकनहांसो
के॥काटिपर्मलाअदापूररोके॥सोअर्जुनसायकनकिमारे॥सो
हीकाटिपमेलाडारे॥७अर्जुननवेकिसानेंभयो॥रिसिकेब्रह्म
सस्त्रगहलयो॥नवअकासवानीयोंहोई॥इनअस्त्रीनजिनमारो
कोई॥८जैसैंतुमलरिहोज्योंलरिहै॥तुम्हारीमारीनाहिनमरिहै॥
इनहीअपनीअस्त्रीकरो॥जीमोंनाहिवादिकोंलरो॥९नवअर्जु
नहसिकेयोंकही॥अवहमतुमकोंवरिहैसही॥तुमतोहथनापुर
कोंचलो॥नहांजायराजासोमिलो॥१०॥हमआवेनवतुमकोंव
रिहैं॥अपनीजायअस्त्रीकरिहै॥अवैहमारोघोरादीजे॥अरपुरना

जै०ऽस्व०
६०
120

गपयानौंकीजै॥११॥ तबवनघोरादियो मगाई॥ अर्जुनकौंअपनै पुरलाई॥ जायभेटअर्जुनकोकीनी॥ संपतिसकलआपनीदीनी॥१२॥ रानीसहतसंपदाआई॥ लेहथनापुरसवैपठाई॥ कहिकैंअर्जुनसवैपठाई॥ सोवेगईनागपुरधाई॥१३॥ तबकांतेआगेकौंधायौ॥ रादिसदेसतहांचलिआए॥ भीषमराद्दिसकौवहदेसा॥ जहांजायअसुकियोप्रवेसा॥१४॥ राद्दिसजिनवहदेषोघोरा॥ भीषमसैंजायबोलेबोरा॥ सुनकुवानराद्दिसकेराज॥ आयोमावकरनइकवाज॥१५॥ अरएकओरसुनउंकिनआप॥ मारौजिनहितुम्हारोवाप॥ भीमसेनिमारौतुवतात॥ अर्जुनआयोतिनकौभ्रात॥१६॥ भीषमवानसुनतहीधायो॥ तीनकोटिराद्दिसलेधायो॥ रवूंअसुरधनंजयकहां॥ देषादेषिहोयगएजहां॥१७॥ असुरजायअर्जुनसोमड्यो॥ रूषपहा

रवगावतविद्योो। पर्वतरूपअसुरसवसोके। सोअर्जुनअधफरही
रोके। १८। तेअवधअर्जुनकैमारैः। तेमहावाहुकाटिसवडारै। अ
र्जुनकीवैठधुजऊपरि। तवहनुमानउतरिकैतपरि। १९। हनव
तराछिसऊपरीध्याये। तीनहजाररथछलपटाये। अपनीपूंछभूमि
पैपटकै। वनकोंमारिओरकोंऊपटै। २०। असैंमाहिमहिवहौंनथ
छोरै। भीकमरूककरिसवहीमारे। तीनकोटिकोकीयोसंघारा। भी
षमभागिचलेतिहिवारा। २१। तीनकोटिराक्षसनीमारी। फिरिहनं
वंतएकवातउचारी। अर्जुनएकमतोसुनिलीजे। राक्षसकोपरतीति
तिनकीजे। २२। भीषमअवहिवेगिदैमारो। याकोसीसइहांरिकरिडा
रो। तौलौंहनवतमतोसुनायो। असुरनपाकोरूपवनायो। २३। तव
अर्जुनमनमेयहआंनी। तपानाहिराक्षसहमजांनी। सोयाकोंअ

जै०ख० ६१ 122

बहीमैमारो॥ याकोसीसकाटिधरडारो॥ २४॥ दोहा॥ असुरमारिअरजुनचले लाघेदेसअनेक॥ गएबाजिकैसंगसब नग्रमैनपुरएक॥ २५॥ चोपई॥ वभ्रुबाहनकोकहियेऐसा॥ जहाजायउनकियोप्रवेसा॥ तहांनहबाजमैंनपुरगायो॥ सोअवसुनुनगरकोरयो॥ २६॥ धर्मनीतिसबदेसचलाई॥ अपनैधर्मरहतहैराई॥ नारीसबपतिव्रताकहै॥ निजपतिकीआग्यामैरहै॥ २७॥ धर्मइंदराजाकोहोई॥ औरइंदकोनांवनकोई॥ द्विजछत्रीअरवैसपुधर्मो॥ सुदरचलतअपनैहैधर्मो॥ २८॥ अग्निहोत्रद्विजलोपनकरई॥ अरसबध्यानहिएहरिधरई॥ नानेहमोहैमैनपुरीके॥ ध्यानकरतश्रीलछहरीके॥ २९॥ रजतराजासकलसहसा॥ काकोनअअरकोननरेसा॥ सोयहबातसकलमननमाही॥ अर्जुनजाननतअरकोउनांही॥ ३०॥ दोहा॥ अर्जुनतोजाननतहुतेऔरनजा

नैकोय। सब राजा अरु जन लगे। कहीन बूझन सौं सोय ॥३१॥ इति श्रीमहाभारथे अश्वमेद के पर्वे वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे नग्रप्रवेसनो नाम तेईसमोध्याय ॥२३॥ ॥छंद पधरी॥ फिरि जैमुनि बोले सुन ऊंराव। तव हंसधुज कीनौं कहाव। तुम सुन हु बात अर्जुन स[illegible] ॥ यह महा बली है नृ[illegible] ॥१॥ यह [illegible] च से कटक बन सुलैहं। इ[illegible]लेन यह हम हि देहं। तिन लियो बाजर्‌ जौन म्रझ। कोइ करीन सकै ता सौं न जुझ ॥२॥ इहं भांति बषांनी हंसधुज। सब हिन के आगे भाषि गु[illegible] । तव सावकरन सुमटन सु पेषि। कहि वांहन मैं सब ही विसेषि ॥३॥ पक सावकरन अरु आय देस। अब कुंकम हो पका जैन रेस। यह सुनि सब बुलीयो मम गाय। तव षंब रदार कहि षबरि जाय ॥४॥ देषो अब हि अप सुगन किध। अर्जुन रथ ऊपरि मंडत गीध। तव कहन लगे सब

हीविचार॥यहसुगानभयोकछुहोनहार॥५॥तिनसावकरनलीनु
सजोध॥नववाचिपत्रमनकियोहेसोध॥यहनामजुधिष्ठरपत्रग्रा
य॥वाहनसुमित्रवजैंवुलाय॥६॥कहोकोंनवाजिकोकरनसार॥
अश्वरक्षिकआयेकवनलार॥कहसुमित्रसलिवअचेत॥असुर
क्षिकआएतृषकेत॥७॥आएगुडाकेमरूकमनिकवार॥हंसधुजन्
अरवहोतलार॥अवसुनतकहतहमयहीवात॥असरन्नवसलै
मिलऊंतात॥८॥वऊविनयवस्तलैलगोपाय॥वंदनकरिलावाघ
रलिवाय॥यहमतोहमारोहेसधीर॥जोतुमचितआवेवडवीर॥९॥
तवसुनिसाहनवजैंवुलाय॥वहोसावकरनसेअसुमगाय॥अरल
क्षिलई वहोतेमगाय॥योमहावाडूमेटेसपाय॥१०॥तहांछयोनग्र
वहोवस्त्रलाय॥वडुवंदमालघरिघरिवधाय॥केजोरिकहोमेपु

अहि

त्रतात॥ तुमपिताधनंजयसुनऊवात॥११॥ चित्रगदाअपछुरसुजांनि
अलुपीकंन्यासुमानि॥ सोचित्रगदातेहमउपाय॥ पुत्रपालअलपी
करतजाय॥१२॥ अरबब्रुवाहनहैनाममोर॥ यहतनधनसंपतिपिता
तोर॥ यहकहिकरिलागेपितापाय॥ तहांपाछेजांनिरहिहैमुलाय॥१३॥
तवजोचनामकहिवृषकेत॥ प्रदमनिवालेमिलोहेत॥ तवकहनल
गेअर्जुनसुनेह॥ हमनाहिनजांनेकोनकेह॥१४॥ तिनजुधकियेहि
मिल्योआय॥ सोपुत्रहमारोकैसोकहाय॥ जोजानतहोतेमिलनकाज॥
तौकंहुहजथ्यासोकरनवाज॥१५॥ ममपुत्रनजांनुंसुनऊकोय॥ यहबब्र
वाहनछत्रीनहोय॥ अभिमन्युऊतेममपुत्रएक॥ तिनजायजोधमारे
अनेक॥१६॥ तेलगेचक्रावरतोरजाय॥ तिनकितेजोधमारेसंजाय॥ मे
रोजपुत्रतोहिकहैकौंन॥ तुमआपकरोसुषजायभौंन॥१७॥ तुमपुत्र

125

जै.स्व.
६२
126

नाचनीतुम्हारिमाय तुमवननहिनचावौकहूजाय ॥ तुमजुधनजा
नौंवडुवीर ॥ यहदियेधनंजयवोलवीर ॥ १८ ॥ यहलगततवचनयोंक
हतवाय ॥ तुमरूपैंपषावजफिरहुआय ॥ यहसुननकोधआयोस
रीर ॥ तवकहतलगेयोंवडुवीर ॥ १९ ॥ तुमकहौतुसिरपरिलैहुंता
त ॥ हमसौंनकछुकहीजायवात ॥ हमरौनकछुतुमसौंवसाय ॥
तुमसौंनचलतमोरआय ॥ २० ॥ कछुकहिनजायमेकहुंकाहि ॥
मोसरसस्त्रमारौंसताहि ॥ असौनहिंदीसेजोधकोय ॥ तेजुधकरत
सुनमुषसमोहि ॥ २१ ॥ फिरिकैअर्जुनबोलेरिसाय ॥ यौंसस्त्रवीरनहि
कहतआय ॥ यहहूंकहतसवसुनहुकोय ॥ इनसौंनकहींकछु
गुरुहोय ॥ २२ ॥ तवउत्तौवब्रुवाहनसुजोध ॥ मुनिवचनधनंजय
कियोहैक्रोध ॥ अवसुनहुवाततपारणप्रवीन ॥ मेलयेंजाअसुलेहु

छीन ॥ २३ ॥ तहां पिता पुत्र दोउ भए हैं क्रोध । तहां देषत ठाढे सकल जोध ॥ तब पारब्रह्म कौं करि प्रनाम ॥ तब उठ्यो बभ्रुवाहन सु नाम ॥ २४ ॥ तब चल्यो बभ्रुवाहन रिसाय ॥ रन षेत सम्हारयौ तिन हि जाय ॥ तब कहन लगे यों बभ्रु बीर ॥ तुम महा बधी सावंत धीर ॥ २५ ॥ मैं लरें आन अस्तुले कुआय ॥ अब करन जुध है जोर ताहि ॥ तुम बड़े बड़े जोधा न होय ॥ अब सा वकरन राषौ न कोय ॥ २६ ॥ जो छत्री पन की होय लाज ॥ सो आनि छुडावौ कौंन बाज ॥ हम तुम्हैं रोषो घोर आलऐं जात ॥ तुम आय कौंन आडे फिरात ॥ २७ ॥ यह कहि कैं बाजन श्री पठाय ॥ आपन समर मैं हित पिडे है आय ॥ तब सुनि ए बातैं ब्रषकेत उठि पुत्र करन के जुज हेत ॥ २८ ॥ ब्रषकेत जाय के जोध जोय ॥ बभ्रु वांहन अरु ब्रष जुज होय ॥ ब्रषकेत चलाए चारि बान ॥ बभ्रुवांह

127

अै.१स्व. न हमपैदे ये तान ॥ २९ ॥ हृषकेत सो कि कै बान च्यारि ॥ बब्रुवाहन
६४ रथ काटे बिदारि ॥ बब्रुवाहन दूजै रथ आरोह ॥ जिहि देषि पाव
128 मंडै न कोह ॥ ३० ॥ तब परे ध्याय सेना मझारि ॥ हृषकेत सेन सब मा
रि डारि ॥ सात बान हृषकेत मारि ॥ मुरछा की नु धरनि पछारि ॥ ३१ ॥
हृषकेत मुरछा भई सब कनपेषि ॥ तब कंपि सेन सब गिरि देषि ॥ तब जो
बनास तहां गयो है धाय ॥ तब बब्रुवाहन सो भयो जुध जाय ॥ ३२ ॥
बब्रुवाहन आए सेन जास ॥ आवत हि भगे तब जोबनास ॥ जुबना
स भगाए सम रषेत ॥ तब सलि गाए सेना समेत ॥ ३३ ॥ आवत ही
सायक सात मुक ॥ सलि रथ बन कीनु टूक टूक ॥ पुर सात बान करि
सलि मारि ॥ मुरछा की नु धरनी मझारि ॥ ३४ ॥ ३४ ॥ तहा परे दि सलि स
र रमें मांहि ॥ गए हें सधुज चलि जुध मांहि ॥ हाथी चढि आये हैं सधुज ॥

जायबब्रुबाहंनसोंकीयाजुद्ध॥३५॥बब्रुवाहनतबहिबांनफोचि
आवतहीमास्योनागबीचि॥हाथीआवतहिमारिलीन॥हंसधुज
मारेबांनतीन॥३६॥हंसधुजराजापरेहेदेषि॥प्रदमनिधायेतिहि
बरबसेषि॥नवलग्योजुद्धसोजहोंन॥सोकहिनजातकहोकौ
न॥३७॥दोहा॥परेदेषिप्रदमनिगए:हंसधुजकेठाम॥प्रदमनिऔ
रबभ्रुसों:भयोवोहोतसंग्राम॥३८॥इतिश्रीमहाभारथेअसमेदके
पर्वबर्ननें:जैमुनिजनमेजयसंवादेहंसधुजबर्ननोनामचौवीस
मोध्याय॥२४॥जैमुनियोवाच॥जैमुनिकहैसुनहुराय॥अबबक्कु फिरि
रिकथादेहुंसुनाय॥प्रदवनिबब्रुवाहनभयोहैजुद्ध॥तिहुलोककं
पिसबधुराधुज॥१॥छंदभुजंगी॥बेउजोधमंडेकरतजुधभारी॥तहां
चक्रज्योंफिरतहैसेनसारी॥मुरछाह्वैगिरेसबजोधजागे॥तेउठतही

जै॰ख॰
६५
130

समरसवकरनलागे ॥२॥ तिकहतहै समरसवजोधआए ॥ तहांसुरछु
तजागिहृषकेतधाए ॥ जुवनामग्गरहं मधुजलीलयुजं ॥ मेघवर
नसलिसवकरियरुजं ॥२॥ छंदवेषरी ॥ एसवजोधाजागिकैः जुध
करनसिधाए ॥ मिलेवडकेऊपरैं वहोरोरमचाए ॥ सवजोधामिलि
पंचपंचसायकवनसोके ॥ वडवाहनएकवांनसैंआवतसवरोके ॥
४ ॥ एकेसायकसवनकेसायकसवकटे ॥ उलोवडवाहनवडुरिस
वसेननिघटे ॥ सेनसकलनारीनहांः वहोउठेकवंधह ॥ रक्तसात्र
नंदीवहीःमनुअमगिसमंदह ॥५॥ किलकिलाटकरिजोगिनीःसपर
लेभगी ॥ गरिषपरवहोत्रपतिहोयरंतपीवनलगी ॥ चलेवीरवेता
लवहोःभैरवभषलगे ॥ भैरपत्रजहांरक्तसोपिजेरुवहोवगे ॥ ६ ॥ व
होतवाजरथसाजसकलसलितांकेसंगहे ॥ रक्तआववहवहेःव

हे मतंगा ह। गीधभषैं वायसभषैं जंबूबिललावैं। आवबहे सब जा
नहे कहुं हाथन पावै ७ महासमरभयोदेषिके फिरि वभ्रुहंकारे
पंचपंचधरि वांन तानि सब जोधामारे। सबमुरछाके गिरे हे षिच
ह मनितवहोरे। लगेफुरुआवत तहांवभ्रुवाहनमारे ८ प्रदम
निसोकेसम्नसरवभ्रुवाहनमारे। बभ्रुमुरछधर हे षिके नव सुबुधि
सम्हारे। सुबुधि वभ्रुमंत्रीफुतेजुधकरनसुलगे। नवलगि वभ्रु सहा
यपायमुरछासुजगे ९ वहोरि उठेजुधकरनको एक सस्त्र सम्हारे।
सुपन सस्त्र करि वभ्रु नव सेनापरिडारे। वभ्रुवाहन सरसुपनके से
नापरिसोके। अपनै अपनै रथपै निद्रासव जोके। १० सेन सकल
अर्जुन सहत निद्रा अतिआई। बभ्रुवाहन तव सव न के लिये सस्त्र छि
नाई। सकल पठाए नग्र मे आवध सकुलीनैं। बडे बडे ओधासकलक

जै०ऽस्व
६६
132

रेप्रावधहीनै ॥ ११ ॥ दोहा ॥ सकलसौजमहाबाहुकीनग्रपठाईसो य ॥ कहौजोधकैमल्लरैजुधकौनविधिहोय ॥ १२ ॥ इतिश्रीमहाभारतेअश्वमेदकेपर्वबर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेजुधबर्ननोनामपंचविंसोध्याय ॥ २५ ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ दोहा ॥ ॥ फिरिजैमुनिरिषिकहतहै ॥ कहौसुनऊभूपाल ॥ ध्यायधनंजय आयकै देष्योजुधहवाल ॥ १ ॥ चौपई ॥ होजनमेजयसुनऊभूवाला ॥ देषिधनंजयजुधहवाला ॥ महाबाहुअतिहीरिसभयो ॥ नवहीजुधकरनकौंगयो ॥ २ ॥ छाडीसेनपारथपरवीन ॥ जायबडुसुसमरकीन ॥ वभ्रुवाहनइतअर्जुनकंहे ॥ पितापुत्रदोउजुधमंडे ॥ ३ ॥ जनमेजयउवाच ॥ दोहा ॥ जनमेजयरिषसौकही ॥ कहौकथा द्विजदेव ॥ पितापुत्रकेजुधकौमोहिवतावोभेव ॥ ४ ॥ चौपई ॥ कहौ

श्रीरामचंद्र लवकुसकीयुद्ध। कहौकौनविधिकीयोजुद्ध। याकौमोहिवतावोभेव। पीछेकथाक
होयहरैव ॥४॥

साईतुमकौवूझै॥ आपहिपितापुत्रकंजुझै॥ आगेकवनकवनजु
झकीयो॥ जैसोपुत्रपिताकौहीयो॥५॥ जैमुनियोवाच॥ श्रीरामचं
द्र अस्वमेदकारन॥ छाड्यौवाजगयोचलिआरन॥ लवकुसवाजि
वांधितवलीयो॥ तवउनपितापुत्रजुधकीयो॥६॥ जनमेजयउवाच॥
श्रीरामचंद्रकीकथासुनावो॥ बहुधुजकौंवहुरिजनावो॥ वडीलह
लसाहैयहभारी॥ हमसुनिवेकौंमंछ्याधारी॥८॥ जैमुनियोवाच॥
वडौभावजनमेजयराई॥ अरयहगाथामोहिचिताई॥ सुनतधर्मवा
ढैनृपतेरौ॥ अरकल्यानकियातुममेरौ॥९॥ अहोराजजनमेजय
सुनौं॥ श्रीरामचंद्रगाथाकौंगुनौं॥ अवयहकथासुनौंनृपमोसौं।
अतिसंछेपकहतहोंतोसौं॥१०॥ लंकादहनकीन्हश्रीरामा। सारेस
कलसुरनकेकामा। रावनमारिअवधिकौंआए। अरसवजोधासं

133

म

जै.सु.

६७

134

गिरिधाए ॥११॥ अंगद अरु सुग्रीव भभीखन ॥ हनूमान जामोंत अौरु अ
न ॥ आए लछमन आनँद पावैं ॥ अरु आए कपिराव नील नल ॥१२॥
सुनि वसिष्ट सुन मुषि वले ॥ सुन मुष जाय सवन सौं मिले ॥ सुनि कैस
कल अजोध्या धाई ॥ परजा हरस राम कैं आई ॥१३॥ लछिमन सीता
अरु श्रीराम ॥ पानि जोरि कीनें परनाम ॥ वसिष्ट की वहु विनती कीनी ॥
अरु कछु भेट गुरन कौं दीनी ॥१४॥ सोरठा ॥ भरथ सत्रुघन भ्रात ॥ मिल
न चले श्रीराम कौं ॥ देषि सुन मुष जात ॥ धरे पावरी सीस पर ॥१५॥ चौपई
भरथ सत्रुघन सुन मुष धाये ॥ श्रीरामचंद्र जू कैं ढिग आये ॥ माथे धरे
पावरी भेटे ॥ श्री हरि के पायन मैं लेटे ॥१६॥ श्रीरामचंद्र जु लीस उठाए ॥
करि अति प्रीति हिए सौं लाए ॥ अति ही प्रीति महत हरि मिले ॥ अश्रु पा
त अंषिन सौं चले ॥१७॥ चितए राम भरथ की वोरी ॥ तव हरि सीस पावरी

१३५

जोरी॥ श्रीरामचंद्र जानकी आई॥ भरथ सत्रुघन लछमन भाई॥ १८॥ मातन को सब लाके गृह आए॥ अति सनेह सों कंठि लगाए॥ तब हरि कों सब आय पद भेटे॥ बिपति वियोग सकल तहां मेटे॥ १९॥ सब जननी मिलि बाहर आए॥ सबै अवधि के दुष मिटाए॥ सब ही पुरवासी आय मिले॥ सब ही कहत आज दिन भले॥ २०॥ कितेयक दिवस श्रीराम सीय ते जराउ तारी॥ गुर वसिष्ट को पूछन को यो॥ राजतिलक को दिन धरि लीयो॥ २१॥ सुभ दिन तहां वसिष्ठ भाष्यो॥ बसंत पंचमी को दिन राष्यो॥ यह सुन तिलक मुहूरत दियो॥ सब दिन के मन आनंद कीयो॥ २२॥ दोहा॥ सबै अवधि आनंद भयो सुनत राम अभषेक॥ पाटि पधारे रामचंद्र हरि कियो मुनि अभेक॥ २३॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेद के पर्व वर्नने जेमुनि जनमेजय संवादे श्रीरामचंद्र अजोध्या आगम

जै०अ०
९८
136

नोनामछवीसोअध्याय ॥२६॥ ॥जैमुनियोवाच॥ चौपई॥ फिरि
जैमुनियहकथावषांनै॥ जनमेजयकेसंसयभांनै॥ नवश्रीरांम
राजजसलए॥ करतैवर्षसहंस्रनोभए॥१॥ राजनीतिश्रीरामच
लावै॥ तातैसबपिरजासुषपावै॥ अपनैअपनैधर्मचलावै॥ सब
हीअवधिरांमगुनगावै॥२॥ इतनैदिननराजसुषलयो॥ पैश्री
यकैबालगनहिभयो॥ सोहजारबरषतबभई॥ गर्भवतीसीता
जकही॥३॥ पांचमहीनाकोगभरह्यो॥ सबैअवधिमेआनदभ
यो॥ तबवसिष्टगुरलियेबुलाई॥ पंचमासकीविधिकरवाई॥४॥
आनिवसिष्टमंडपछायो॥ वेगिहीराजाजनकबुलायो॥ विस्वा
मित्रआदिरिषिआए॥ सगेसहोदरसबैबुलाए॥५॥ भईयावं
धसबैहीआए॥ लछिमनसबैबुलाएआए॥ तबैवसिष्टचोक

तहांदीयो॥श्रीराम चेर जु आवनदीयो॥६॥सियारांम गठजोरी करै॥ चौक वेदि सुजा सब धरै॥ कलसगने सहजा करवाई॥क री और विधि सकल वताई॥७॥गर्भाधान कै वे सवही॥ कौसल्या करवाये नवही॥ अर सवलोगन गृहके आए॥ ते श्रीरांम सकल प हराए॥८॥सोरठा॥ सरे सवनन के काम॥ विदा दई हरि सवन कौ॥ एक दिना श्रीराम॥ सीतां कौं पूछत भए॥९॥ कहा सादि मनमाहि॥ कहौ जानकी अव हमे॥ तुम जु कहौ कछु नांहि॥ सोई सादि हम पू जिहै॥१०॥जानकीयोवाच॥सोरठा॥ कही जानकी एहु॥ यह सा दी मन रहै॥ अजु नाथ सुनि लेहु॥ रिषरानिन कौ पूजिए॥११॥ चौपई॥ गंगातीर जाय यह कीजे॥ रिषिरानिन कौ गहनादीजे॥ अ र सव आभूषन पहराउं॥ यह सादी मन माहि उपाउं॥१२॥श्रीरा

१३७ हा

मचंद्रउवाच ॥ तवश्रीरामचंद्रजूकही ॥ वषचतुरदसवनमेरही ॥ तो
तुम्हारीसादिनरजी ॥ अरएकऔरकहनहोइजी ॥ १३ ॥ रावनकेवी
तेषटमासा ॥ तोऊनसादिनरजीआसा ॥ फिरिश्रीरामचंद्रयोंकही
भलैमैहिपठेहैंसही ॥ १४ ॥ एकदिनानग्रीमैसुता ॥ श्रीरघुनाथपठ
एइता ॥ जावोइतकेरोयहकाज ॥ कैसोकहैहमारोराज ॥ १५ ॥ तब
वहइतनगरमैगयो ॥ देषोसकलनग्रकौरयो ॥ सबहीअवधिइत
फिरिआयो ॥ रामचंद्रजूनिकटबुलायो ॥ १६ ॥ रामइतकोंपूछन
लागे ॥ कहीइतसबहीहरिआगे ॥ राजारामत्रलोकीनाथा ॥ अब
मैकहुसकलकीगाथा ॥ १७ ॥ अवधिनग्रउषियाकोईनाही ॥ अप
नेअपनेधर्मचलाही ॥ करततुम्हारोसुमरनध्यांन ॥ अरुतुवगु
नकोकरतवषांन ॥ १८ ॥ अरऐकथासुनीश्रीयनाथ ॥ सोवहअ

139

चिरजक होनजान ॥ अरमो हिक है कगान है पाप ॥ अरुअव क हूं
सुनत है आय ॥ १९ ॥ अहो गुसांई जी इक धुज ॥ ताकी वात सुनौ एक
गुज ॥ तिनि तो त्रीया आपनी मारी ॥ जो रिसि गई जहां महतारी ॥ २० ॥
रूसी त्रिया पिनाकै गई ॥ पतिकी वात मान सो कही ॥ दिवस तीसरै
वेटी वाप ॥ जामात कै ले आयो आप ॥ २१ ॥ अरु जामात सौं ऐसे कही ॥
यह अग्यान मूढ है सही ॥ महा अजान कछू नहिं जानै ॥ याके कहे
विलग जिन मानै ॥ २२ ॥ फिरि उत्तर तुमकौं दे कोई ॥ सो अपराध ल
गै सव मो ही ॥ अव कौ वर छिमा करि साथ ॥ वकसो पुत्र भयो अपराध ॥ २३ ॥
धोवी सुनै जवाई कही ॥ यह क्यों रूसि तुम्हारै गई ॥ रूसि रासि रहमा
हि रहाती ॥ तौ सव ही मैं भली कहाती ॥ २४ ॥ अव दिन तीन और घरि रही ॥
मेरै कौन काम की कही ॥ कछू करौ अपने मन मान्यो ॥ अकमो हिराम

जै॰स्व॰ चंद्रही जान्यों ॥२५॥ औ अपनै अग्रहया कौं राषों ॥ पंचन माहि बचन कहा भाषो ॥ जैसें सीता जु षट मासा ॥ रावन के कौनूं तिन वासा ॥२६॥ तो रामचंद्र लै आनी ॥ कछु विलग मन मन हि न आनी ॥ सो जो वपु हों मी के राव ॥ भली बुरी वन माहि समाव ॥२७॥ हम धोवी है जाति गवारा ॥ सांचे चले षरे व्योहारा ॥ नातें रामचंद्र मे नांही ॥ अब के सेरा षोय र मांही ॥२८॥ सोरठा ॥ जैमुनियोवाच ॥ हो जनमेजय राय ॥ कही इत्त श्रीराम सों ॥ रहे राम दुष पाय ॥ सुनी बात सब दूतकी ॥२९॥ चौपई ॥ सुनि श्रीराम वहौ तदु षपायो ॥ औरन कौं कछु नाहि सुनायो ॥ भरथ सत्रुघन लक्षमन लारा ॥ आए हरि कौ करन जुहारा ॥३०॥ नमसकार करि ठाढे भए ॥ फिरि एक बात तिहुं मिलि कहे ॥ महाराज सब हिन मैं जेठे ॥ आजि उनमने कैसे बैठे ॥३१॥ तब श्रीरामचंद्र जू बोले ॥ धोवी

७०

140

कीगासवबोले॥ अहोभ्रातउपज्योयहआद॥ लोकनकोमेटूंअप
वाद॥३२॥ हूंजानतअपनैंमनमांही॥ कछूजांनकीलागतनांही
पारिजगमैअपकीरतिहोय॥ सोयहवातभलीनहिकोय॥३३॥ नव
सुनिभरतरांमसंकही॥ लंकामाहिदिविनुमलही॥ ब्रह्माआदिसवै
मिलिभाषी॥ सीताकौवोलेसवसाषी॥३४॥ कहीसियाकोंकछू
नलागै॥ यों मिलिकहीसवनतुमआगे॥ अरतुमसवकेअंतरजा
मी॥ भलीवुरीनाहिनकछुछानी॥३५॥ नवश्रीरामचंद्रयोंकही॥ अ
हौभ्रातएकसुनियोंसही॥ जाराजाकोअपजसहोय॥ सोवहहेसव
सैनहिषोय॥३६॥ सोवहराकसराजकहावै॥ देषोताहिकौनपति
यावै॥ जामानवकौअपजसहोई॥ ताकौहरिकरीयेसोई॥३७॥ जैमु
नियोवाच॥ दोहा॥ तातेंअपजसमेटिहौः यों वोलेभगवान॥ अर

जै॰ऽस्व॰
७१
142

लछिमन सौ यौ कही ःन महीहमारी ग्यान ॥ ३८ ॥ चौपई ॥ फेरि जु वा वदेह जो कोई ॥ मेरी घात करैगो सोई ॥ जो हम कहैं करौगे सरी ॥ जैयौ तुम हो मम आग्याकारी ॥ ३९ ॥ ताते अब मी ता पै जावौ ॥ वेगी ह्यां ते जाय मुलावौ ॥ तुम जन कहत हौ गंगा जान ॥ सो अब चलौ कही भगवान ॥ ४० ॥ नव लछमन कौ आग्या दई ॥ लछमन जाय सिया सौं कही ॥ तुम गंगा की वो छा कीनी ॥ जलिए मात विदा हरि दीनी ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ विदा करी श्री राम जू चली गंग को जाय ॥ सुनत सीया आनंद भयोः फूली अंग न समाय ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारथे अश्वमेद के पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे सीता आनंद नो नाम सप्तविंसो ध्याय ॥ २७ ॥ ॥ जैमुनियोवाच चौपई ॥ जैमुनि कहैं सुनऊ हो राजा ॥ सीता की या चलन को साजा ॥ सम जाय तव ऐसै कही ॥ मुनि के सीया आनंदित भई ॥ १ ॥ जं ऊरिन कों

143

अग्या दई ॥ वन चलिवेकी सामा करई ॥ नीके नीके वस्त्र मगाए ॥ अंब
र पाट अंवर लै आए ॥ २ ॥ गहना धरयौ जराव न जाला ॥ वडे वडे मुकत
न की माला ॥ वहौ त भांति पकवांन मगाए ॥ ए सव सौंज साजि कै ल्या
ए ॥ ३ ॥ ए सव सौंज धरी रथ मांही ॥ फिरि कौसल्या कै ग्रह जाही ॥ नम
सकार करि पायन परी ॥ पानि जोरि कै विनती करी ॥ ४ ॥ जानकी उवा
च ॥ महाराज की आग्या पाई ॥ तौ रिषि रानिन कौं ह्जेन जाउं ॥ चलि
हौं आजि कालि हि विचि वास ॥ अरदिन है कौं करूं निवास ॥ ५ ॥ था
रि दिना मे वरन निआउं ॥ तुम्हारौ दरस देषि सुष पाउं ॥ तव कौस
ल्या आग्या दीनी ॥ चलत वेर आषियां भरि लीनी ॥ ६ ॥ अर यह कही का
ज सिधि होई ॥ वेगे आय मिलौ तुम मोई ॥ करि डंडोत जानकी चली
संगि न लीनी कोई अली ॥ ७ ॥ जाय जानकी रथमे वैठी ॥ सौंज सम्हा

जै०रा. रिथरीसवपैठी॥ लछिमनजायतवैरथहांको॥ चल्योमितावकहूं
७२ नहिझांको॥ ८ हांकेग्ररथपंथसिरिलागे॥ ग्रपसगुनहोतहै
144 ग्रागे॥ राहदाहिनेवामकुरंग॥ फरकनलगेदाहिनेग्रंग॥ ९ फरक
नलगेदाहिनेनैन॥ तवजानकीवोलीवैन॥ तवजानकोलछमन
वूझै॥ ग्रहोलषनकछुतुमकोंसूझे॥ १० ॥ सोरठा ॥ होलछमनइंह
वार॥ होनलगेग्रपसगुननए॥ ताकोकवनविचार॥ कहोकोंनजो
जानिहो॥ ११ ॥ चौपई ॥ लछमननेजानतइहे॥ सोसीयासोंकेसैक
हे॥ जानतहेग्रपनेमनमांही॥ लछमनतहांकहीकछुनांही॥ १२॥
चलतैचलतग्रस्तदिनभयो॥ नहांजायकैंवासोलयो॥ भयोविहा
नुवहोतउठिधाए॥ श्रीगंगाजीकोदरसनपाए॥ १३ रथतेउतरि
मगाईनाव॥ लछमनकहीनावलेग्राव॥ जीवरतहांनावलेग्राए

बढिकै पैली पार सिधाए ॥१४॥ उतरे पार नाव परिहरी ॥ लाय सौं
जस व आगे धरी ॥ धरि सब सौं जजान की आगे ॥ आ लषमन जू पा
यन लागे ॥१५॥ गह्र गह्र कंठ न आवै बैना ॥ कहत न बनै भरि आए नै
ना ॥ अहो मात मै ह्वं अ आधी ॥ श्रीरामचंद्र की अपराधी ॥१६॥ सो
रठा ॥ करि दंडोत प्रनाम ॥ सीता कौ लछमन करी ॥ विदा करी श्रीराम ॥
तुम कौं या बन रहै न की ॥१७॥ दोहा ॥ कहत बात मुरछा भई ॥ परे ध
रनि मै जाय ॥ देषि दोरि कै जानकी ॥ समाधान की आय ॥१८॥ उठे ल
षन न ब ऐसै कही ॥ अहो कहा यह कीनी दई ॥ माता मो हि अग्या
भइ बन की ॥ कही छाडि वे तुम कौं बन की ॥१९॥ इतनी सुनत नसी
य मुरछाई ॥ जैसे जानै मिथी आई ॥ तब लषमन जू आय सम्हारी ॥
गंगा जल भरि लाए झारी ॥२०॥ लछमन समाधान आय कियो ॥

जै०उत्त० मुषपछालिगंगोदिकदीयो॥ समाधानकरिबैठाकीनी॥ जेरैहाथ

७३ डंडवतकीनी॥२१॥ नवसीतांजइसैंबोली॥ सुनतवचनग्रावतग्र

146 कझोली॥ ग्रहोलषनग्रवपुरकौंचलिये॥ मेरैइनमवनसोमिलि

ये॥२२॥ सासुसौंपगवंदनकहियो॥ ग्रहोलषनतुमनीकैरहियो

चलेलषनतवग्रग्यामांगी॥ पाछैसीयाविलापनलागी॥२३॥ ग्रा

हिग्राहिकेइकरांनी॥ ग्रजनाथमनकैसीग्रांनी॥ कवहुकीग्र

वग्यानांही॥ कौंछोडीदारुनवनमांही॥२४॥ हेप्रभुकवनकियो

ग्रपराध॥ ग्रवहीमोइषदियोग्रगाध॥ मैतोहीचरननकीदासी॥ या

ग्रारंन्यकौंतजीग्रभिनासी॥२५॥ याग्रारनिमेरोनहिकोई॥ ग्रैसें

वहोविलापकरिरोई॥ सीताधाहसुनततहीधायो॥ वगछोलषन

सीयापैग्रायो॥२६॥ सावधानफिरिहूंग्रायकरे॥ सजलनयनग्रसु

वावहौठरे॥ तवसीतारोवतसोंरही॥ वहौरिलषनसोंअैसेंकही॥

२७॥ अवतुमजाहुथानकेप्यारे॥ विधिलिषिदईलिलाटहमारे॥ 147

तवलछिमनपरदछिनादीनी॥ चलतेंवहौरिडंडवतकीनी॥ २८॥

करिडंडोतहेतनहीयमिले॥ अतिविलापकरिरोवतचले॥ गदगद

कंठउसासनआए॥ विछुरतलछनमहादुषपाए॥ २९॥ जातजान

कीलषमनपेखैं॥ उछनकेवोढेनहिदेषैं॥ तवरूषनकेवोलेहल

ये॥ सीताकौरीषनतेरहौ॥ ३०॥ वकुरिसीयारोवतहैअैसे॥ महा

अधीरहोतहैतैसे॥ वनमैंवालमीककेवाला॥ षेलतरोजसुनुति

हिकाला॥ ३१॥ दौरेसीताकेढिगआए॥ देषतवालमीकपेधाए॥

वालकवोलेहोरिषराई॥ एकैंसुंदरिवनमैंआई॥ ३२॥ अरवहसुंद

रिरूपविसेषी॥ यावनमैंहमरोवतदेषी॥ ग्यानदिष्टिकरिरिषतवकही॥

जै॰ अश्व॰
७४
148

रोवत्तिहोयजानकीमही ॥ ३३ ॥ वालमीकआगमअवधार्यौ ॥ हैन
हारहियमाहिविचार्यौ ॥ वालमीकसीताढिगआए ॥ अपनीपरन
कुटीलयलाए ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ निजआश्रमकौलेगए: वालमीकरिष
देव ॥ रिषरांनीअरबालसव: करिहैउच्छिनसेव ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमहाभा
रथेअसमेदकेपर्ववर्नेनेजैमुनिजनमेजयसंवादेसीतावनोवा
सनोनामअष्टविंसोध्याय ॥ २८ ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ सोरठा ॥ सु
होराजमुनिलेऊ ॥ कथाकरूंआरंभकी ॥ सीताकोरिषदेव ॥ वालमीक
ऐसेकही ॥ १ ॥ वालमीकोवाच ॥ चौपई ॥ हेपुत्रीसीतासुषमानु ॥ अ
पनेजियमेंदुषजिनआनु ॥ यहांतोहिनहिंदुषकौतालक ॥ अरतुव
कुषिजनमिहैदोयवालक ॥ २ ॥ यंकहिवालमीकरिषिराय ॥ परनकु
टीलेदईछवाय ॥ परनकुटीलैसीतारही ॥ धीरपसवरिषरांनिनकही ॥ ३ ॥

149

सोरठा॥ रिषगंनिन लषजाय॥ सीताजू वैठीरहे॥ आनिदेन रिषराय
वालमीक मोजन नहां॥४॥ चौपई॥ इहप्रकार सीताजू रहे॥ नां कछु
वोलेनां कछु कहे॥ जैसें कहत मास नव गए॥ दसैं मास के उदिन रहे॥
॥५॥ दसों महीना भीतहां होई॥ सीताजनमे वालक दोई॥ अर्धरात्री वा
लक भए॥ रिषही जातिकर्म करवाए॥६॥ षट मै दिना छठी करवाई॥
सव मिलि रिषगंनीत हां आई॥ दस मे दिना दसोठन कीयो॥ द्वादस दि
ना नाम धरिलीयो॥७॥ नामकर्म करि नाम धराए॥ कुसिलव वालक
नाम वताए॥ वडे पुत्र सों कुसिक हायो॥ लहुरा जों निनाम लव पायो॥८॥
वर्ष तीन संस्कार कराए॥ नवव नछोरकर्म करवाए॥ द्वादस वर्ष जने
उ दीयो॥ पढिवे कों आरंभ कीयो॥९॥ वडु विद्या को कियो निवेद॥
तेरह वर्ष पढे सव वेद॥ सकल वान विद्या सव साधी॥ साधन कौं कछु

रहीनग्राधी॥१०॥वालमीकजोविख्याती॥लवकुसमोविद्यापति
लीनी॥इहिंप्रकारवनमैवेरहै॥रिषयग्यामैवायककहै॥११॥सोर
ठा॥अवधिविषैनिजनांम॥पूछेगुरवासिष्ठहरि॥कहनलगेश्रीरां
म॥जगिअसमेधकराउहम॥१२॥श्रीरांमचंद्रोवाच॥चौपई॥होरि
षराजआयहकीजे॥हमहिजगिकीआग्यादीजे॥अयअसमेधजग
गिकरावो॥जगयसाजसोसवैमगावो॥१३॥हमलेकामेरावनमारे॥
ब्रह्महत्यातेसकलसंगारे॥तासौब्रह्महत्यामोहिलागी॥पापका
टिवेकौमनजागी॥१४॥तवअसमेधजगिकरावो॥साकरनयकवा
जेमगावो॥औरसवैरिषयंदवुलाए॥अवकहत्तिनकेनांमवनाये॥
॥१५॥वासिष्ठअरविश्वामित्र॥गालांओरभारद्वाजयगअत्रि॥कसिपअंगि
रागौत्तमजांनि॥सत्यानंदअरआएआन॥१६॥रजहिआदिदैवहो

रिषग्राए॥ जगिसालामैं मंडपछाए॥ तब रिषयन की पूजा कीनी॥
बरनी करि बहौ दछिना दीनी॥ १७॥ ऐसी विधि करि घोरा छाड्यो॥
कनकपत्र अस्व के सिर मांड्यो॥ मांडत अछर नैं जस लिषरीनुं॥ जे
कोई वाज हमारौ लीनूं॥ १८॥ जै कोई अस्व कौं पकरै राजा॥ आजा म
मरमडवै वाजा॥ सत्रुघन रछ्या काज पठाए॥ तवै नेक वाज फिरि
आए॥ १९॥ फिरत फिरत आयो है तहां॥ बालमीक आश्रम है जहां॥
गयो वाज वन अतर निकाली॥ तहां बालक है द्विज वाली॥ २०॥ तब
लरिकन घोरा गहि आन्यौं॥ वल के जोर संक नहि मान्यौं॥ रिषि
बालक वे बालक वरजे॥ वल के जोर कछू नहि लरजे॥ २१॥ रिषि
सुत कही वाज निज पकस्यौ॥ मनु के माह मन पन कस्यौ॥ तब वरन
मानी नाही वारा॥ बांध्यौ पम मे कुटी के द्वारा॥ २२॥ अपनै उपरैं सक

जै०॥ स्व०
७६
152

लगाय बांधे॥ लैकरिके पिठ सों बांधे॥ तव रिषि बालक कही सुव॥
मोरो॥ जाको साव करन यह घोरो॥ २३॥ जे वे तुम कौं मारें आय॥
अरु यह घोरा लै हि छिनाय॥ ताते वात मानि लव लीजे॥ वाज
पराये मुक तोरी जे॥ २४॥ नव लव वन सों कहन कहाई॥ तुमते
अल्प पुत्र हौ भाई॥ हम सीता के पुत्र कहां नै॥ ऐसी संक कहा जी
य मांनै॥ २५॥ छाडै वाज का है डर पावै॥ तो कहा जननी सीतल
जावै॥ ऐसे वचन तहां लव वोले॥ वन के कहें वाज न हि षोले॥
२६॥ दोहा॥ जो तुम वार हजार एक॥ कहो तो अस मुदे ऊं नाहि॥
वाज डडराये छाडिहै॥ तो जननी सीतल जांहि॥ २७॥ इति श्री म
हाभारथे अस्वमेद के पर्व वर्नने जैमुनिजनमेजय संवादे लव
आख्यानो नाम उनतीसमो ध्यायः॥ २९॥ ॥ जैमुनियोवाच॥

दोहा॥ फिरि जै मुनि रिषि कहत हैं : हो जनमेजय राज॥ कहन लगे सब सेन मैं : कहां गयो वह वाज॥१॥ चौपई॥ सेना सहत न सत्रुघन गयो॥ घोरे को अचिरज तहां भयो॥ गयो कहा सब सो चन लागे॥ देषौ वाज कौन ले भागे॥२॥ दोरि है सिसवहि नमिलि पेष्यो॥ केरि पेड सों वांध्यो देष्यो॥ तव वन लरिकनि वाज वतायो॥ तुम्हारो सावकरन कों आयो॥३॥ वन वालन न वहें वांध्यो जाय॥ अरु लव दीनों नाम वताय॥ केरि पेड सौं राष्यो वांधी॥ सुभटन सुं लरकनि यों साधी॥४॥ तुम सों कहो डरावत नांही॥ वहो वल राषत है जिय मांही॥ तव वन सुभटन घोरा छोरयो॥ देषत लव सुभटन मंगि रोरयो॥५॥ दोहा॥ तव वोले हे सुभट हो : धीरै धीरज पाव॥ मोहि जीतें विनि वाज कों : कोंन भांति ले जाव॥६॥ छंद षटपद॥ धनक्वांन

153

जै॰ ऽ स्व॰
७७
154

करगह्यौ जायबलजोधहकारे॥ तेछोडहैवाजः वाहिबांननसब मारे॥ कितेभागिमकभूरि किते आवतहीहटे॥ कितेपांनगाहिबांन तानिसबकेकरकटे॥ मारिएजोधठाढेतहां :लवललकारत॥ धाईएरहैसैनसत्रुघनतहांः भगिभगेलवआइए॥ ७॥ दोहा॥ आ यसत्रुघनसौकहीः गह्यौवाजएकबाल॥ रषवारेमारेसकलः जि निकौयोयहष्याल॥ ८॥ चौपई॥ तेहैसुभटवाजरषवारे॥ जेवनल रिकासबहीमारे॥ बांध्यौवाजिकेरिकेथंभा॥ सबदेषतहीकियोअ चंभा॥ ९॥ इतनोंसोधसत्रुघनपायौ॥ सेनापतिकौवेगिबुलायौ॥ स त्रुघनसेनापतिसौकह्यौ॥ जायकरौतुमबनकोमह्यौ॥ १०॥ छंदषट पद॥ तवएकछोहनिसंगलैसेनापतिआए॥ इतलेवसुतमुषआ यकेसंग्राममचाए॥ आवतहीलवसमरमैसेनासबमारी॥ अरसे

नापतिउं परै सो केसर धारी ॥११॥ अरिबान हैं लव तहां सेनापति मारे ॥
अरते सुन मुष आय है : ते सुभट संगारे ॥ सेनापति भाई तहां : हाथी च
ढिआए ॥ अति क्रोध आव धलिए : लव उपरि आए ॥१२॥ देषा देषी हो
य कै हाथी हलकारे ॥ हाथी अरु सिरदार लव आवत ही मारे ॥ सेनाप
ति सुनि मारियो : सत्रुघन तब धाए ॥ उत लव लीए बांन धन : समर
मै पाए ॥१३॥ सत्रुघन अरु लव समारिषे : जुरु होने लगे ॥ बांव बिना
से बानकौ : के ते सरदगे ॥ सत्रुघन तबे विचारई : ए लरिका जानु ॥ ए
बालक मै सुभट हौ : कै सें जुथ ठानु ॥१४॥ तब लगा यह विचारि कै स
त्रुघन मन मोहौ ॥ तब लग लव लै बान सों सत्रुघन रथ नो हौ ॥ फि
धनक रि तब लीयो बान सत्रुघन सर छाहे ॥ सो लव लै कै बांन धन सत्रुघ
न के काटे ॥१५॥ छंद पधरी ॥ सत्रुघन तेकर धर कलीन ॥ ते लव काटे

155

रा०स्व० को मंडती न। फिरि सत्रघन जनवरथ च ढे है ग्यान। लव कै तव मारे
७८ होयवान॥१४॥ लव एक वान काढि दै तमु क। सत्रघन थि कानुं टुक
156 टूक। अरसत्रघन कै होयवान दीन। तव सत्रघन मारे वान नोन॥
१७॥ ते लगे वांन लिव हि मम्माय। तव सत्रुघन सीं लव यो कहाय॥
तुम धन विद्या साधीन मूला। ए वान तिहारे लगत न मूल॥१८॥ तुम
तो कहियत हो वडे जोध। सो वल हम चीन्हु तुम्हारो सोध। तव सु
नत सत्रघन वल बधांन। करि क्रोध जोधमर जह्यो है ग्यांन॥१९॥
तव वही वांन लव काटि डारि। तव सत्रघन वोले करि विचारि॥
यह बालमार नैं सुन ऊ कोय। बहु उपजि गयहै दया मोहि॥२०॥
चौपई॥ अर यह वालक लागत ऐसो। मानऊ पुत्र हमारो ऐसो॥
ऐसो दया होय जीय माही। सो अव मो मौं वचनु नाही॥२१॥ यही

धर्मपुत्रीकौवूझै॥ पितापुत्रदोउरनजुझै॥ कहीएकसायकत्र
वसारौ॥ एकवानकरियाकोमारौ॥२४॥ यहकहिसंघनसाय
कसाह्यौ॥ आवतवानकाटिलैडाह्यौ॥ आधौवानलगतलवप
ह्यौ॥ मुरछाह्वैधरनीपरिगिह्यौ॥२३॥ लीयोवाजसत्रुघनआए
परेहेषिलवकैढिगध्याए॥ सत्रुघनसवकैआगैकही॥ मानौवा
नहमारीसही॥२४॥ याकौयहजीवगहनहमारौ॥ हैसवरांमचं
द्रउनिहारौ॥ सत्रुघनझारीदारवुलाए॥ झारीभरिगंगोदिकलाए
॥२५॥ आपनेंहाथनसंमुषधोयौ॥ अरगअपनैरथपैआरोह्यौ॥ लव
कौलियेंसेनमेमिले॥ ऐसीभांतिसत्रुघनचले॥२६॥ दोहा॥ च
ले सत्रुघनअवधिकौः लवगहलीएवाज॥ अरजवकआगेंकहत
हौंः मुनिजनमेजयराय॥२७॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्व

जै॰अ॰ ७९
158

पनेनेजैमुनि[illegible]नमेजयसंवादेलवमुर्छितनोनामत्तीसमो
ध्याय ॥ ३७ ॥ ॥ सोरठा ॥ हे जनमेजयराज ॥ सुनहु कथा जे मुनि
कहै ॥ छोरि लियो तब बाज ॥ सत्रुघन लव कौं लै चले ॥ १ ॥ चौपई ॥
रिषि सुर के बालक धाए ॥ रोवत सीता के ढिग आए ॥ सीता सो वृन
यो कह हरीयो ॥ जाको बाज बांधि लव लीयो ॥ २ ॥ सो वन अपनें गा
म छुडायो ॥ करि संमर लव कौ मुरछायो ॥ अर लव कौं वे लीए
जाय ॥ सो अव ताको कौन उपाय ॥ ३ ॥ सीया सुनत रोवही भागी ॥ वे
रवेर पछिताव न लागी ॥ अब मैं कहा करौं मेरी दईया ॥ मो विन वझि
गयो लव मईया ॥ ४ ॥ विनि स्रु छै भाई कौ घोरा ॥ वो ओहो ग्यनी मति
वोरा ॥ अव मैं कहा करौं कहां जांही ॥ वालमीक इहां फिरि नांही ॥
५ ॥ वे तौ समंथ लैन जल गए ॥ तौ वन विन असी गति भए ॥ यह कहि

बातजानकीरोई॥ याबननाहिसहायककोई॥ ५ ॥ किएकबातजा
नकीकही॥ जौमेरेउरमेयहसही॥ श्रीरामचंद्रपरकोनितिध्यान॥
कबहुनटरतनहींदिनमान॥ ७ ॥ मेरोलवजीवोइनवात॥ जैमोम
नहरिचरनवसात॥ यापुनितेलवजीवतपाऊं॥ नवलगाकुसकौं
वहांपठाऊं॥ ८ ॥ इतनीवातविचारतश्राय॥ रिषकेकहैसमरकुसला
यो॥ सीताजकुसकौंकहदीनी॥ अहोपुत्रलवनेयहकीनी॥ ९ ॥ का
हूकोघोरागहलीयो॥ तिरविनाकहेयहकीयो॥ सोतिनश्रूपनौवा
वाजछुडायो॥ संमरकरिलवकौंमुरछायो॥ १० ॥ अरलवकौंवेलीयें
जात॥ कियाक्रोधकुसिसुनियहवात॥ कुसकोसुनतक्रोधश्रतिश्रा
ए॥ सीतापैधनवांनमगाए॥ ११ ॥ मेरोधनकवानश्रायदीजे॥ अरु
वमोकौंश्रायसदीजे॥ परमकुटीतेसीतालीए॥ धांजेकवचवंनि

159

जै.ऽम्ब. ८० 160

धनलीए॥१४॥आवधसबै... ...दीये॥ तेकुसबांधिसवकलससिलि
ए॥ करिडंडौतसीयाकौं चले॥ करिवेकुस फौजसैं... ॥१३॥ भयोसे
नसौंरेघाटेष्यो॥ सत्रुघनकुसकोंआवतपेष्यो॥ सत्रुनकहीजोध
सवकूटकौ॥ याकौंआवतहाहीअटको॥१४॥ सवजोधाकुसउपरिआ
ए॥ अधपकहीसंग्राममचाए॥ आवधसवकुसउपरमारे॥ तेकुसआ
वतहीसवमारे॥१५॥ सोकुसके... संघारी॥ छोहलिएकसेनसं
गारी॥ देषतसमरसत्रुघनधायो॥ इततेंकुससुनमुषहीआयो॥१६॥
सत्रुघनकुसदोउजुरमडे॥ सायकसोंसायकववहोषंडे॥ वाहेवांन
वांनहीरोके॥ तोरेवांनवानहीसोके॥१७॥ सोकेवांनवानहीमारे
वाकौवानकाटिवहडारे॥ सत्रुघनकुसदोउजुधलागे॥ ईतेकल
वमुरछासोंजागे॥१८॥ रथहिछाडिलवकुसपेंआए॥ दोउभ्रातमि

लिसमरमचाए॥ पांचवानसत्रघनकेमारे॥ हीरुलातिघरनिप

रिपारे॥१९॥ [illegible]मईसत्रुघनतिहिवारी॥ सत्रघनकीसेनासवभा

री॥ सत्रघनकीसेनासवभारी॥ धीरनधरैजायमगलागी॥२०॥ श्री

रामचंद्रजूकेलघुआए॥ जायअजोध्यावचनसुनाए॥ श्रीरामचं

द्रजूसोंयोंकही॥ अहोगुसांईजयहमई॥२१॥ काहूकेदोयसुतअधि

कारी॥ तिनअपनीसेनामअपारी॥ [illegible]नवांधोवनवेरे॥ समर

माहिसत्रघनमारे॥२२॥ जानैनाहिकौंनकेवाला॥ सेनासकलमथी

देहिकाला॥ श्रीरामचंद्रकोयहेसुनायो॥ सुनिश्रीराममहादुषपायो॥

२३॥ श्रीरामचंद्रोवाच॥ कहिएवातवावरीकरै॥ सत्रघनकाके

मारेमरै॥ तिननेमारेजोअनेक॥ समरमाहिसत्रघनएक॥२४॥

ऐभगोलवाकूहिवोले॥ संकिसंमरसौंभागेडोले॥ लछमनवोले

जै॰ अ॰ [illegible] सांई॥ सांची कहै [illegible] कछु नाही॥ २५॥ तव श्रीरामचंद्र ज
जी॥ जो यह सांच होय है सही॥ तो तै उठ नौं वन नैंन काढ॥ तुम आ
नी संन्याले जाहु॥ २६॥ तुम सत्रुघन कौ उपर करो॥ संन्याले तन व
न सौं टरौ॥ लछिमन आपनी सेना लीनी॥ करि दंडौ तसी षहरि
दीनी॥ २७॥ लछिमन धनक बांन तव धारे॥ रथ चढि के तिहि ठाम
पधारे॥ सत्रुघन तहां डेरे हीं आए॥ सत्रुघन मुरछित तही पाए॥
१८॥ दोहा॥ सत्रुघन मुरछा यत परे॥ लछिमन देषे आय॥ सो सब
आगे कहत हौं॥ सुनि जनमेजय राय॥ १९॥ इति श्री महाभारथे अस
मेद के पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे लछिमन आगमन
नाम ईकतीसमो ध्याय॥ ३१॥ ॥ जैमुनि योवाच॥ चौपई॥ फि
रि यह कथा कहत हौं तुम सौं॥ जनमेजय न्रप सुनियो हम सौं॥ ल

छिमनकी सेनासबदेषी॥ लवसं बोलेंग्रानववेषी॥१॥ कुसउवाच
ग्रहौ लव सेना बहै ग्राई॥ हम थोरे हौ दोउ भाई॥ इन सौं कौन भांति
जुध कीजे॥ इनके समरमाहि कौ जीजे॥२॥ लवउवाच॥ तब लव
कही सुनकुंजुभ्रात॥ धनकवांन नाही मो हात॥ ताते यह सेना सब मा
रूं॥ जे केऊं धनक वान कर धारूं॥३॥ तव एक मंत्र वालमीक दीयो॥ ता
को सुमरि प्रसन्न रवि कीयो॥ सो वह मंत्र तहां कुस साध्यो॥ ताकी मनकि
सुरज ग्राराध्यो॥४॥ सो एक धनक रवि वाकार दीनें॥ सो धनवांन तहां ल
व लीनें॥ का हे के टैन जरि है जा हो॥ लव हे धनक लेत ल लकाहो॥
५॥ तव लव कुंज करनकौं लागे॥ जोधा फिरत है भागे भागे॥ लछमन
सों जुध मंड्यो जाई॥ बांनन की वरषा वरषाई॥६॥ लछमन के मंत्री
हे सोय॥ कुसंगर मंत्री सों जुध होय॥ दोउ भईयन सब सेना मारी॥

163

जै०अ० ८२
164

भागीफौज पलौ भरमारी ॥ ७ ॥ जे सेनी [illegible] सनमुख आए ॥ चारि कोस लौं
मारि डिगाए ॥ शत्रु कुस नें [illegible] बांन उफांयो ॥ लछिमन के कर कौध
न कांढ्यो ॥ ८ ॥ फिरि एक बान बहोरि कुस मार्यो ॥ सो न कि बांन सेन
मैं डार्यो ॥ सो रथ ओर सेना मे परी ॥ आधी सेन बांन सौं जरी ॥ ९ ॥ लछिम
न बरन बान तब दीयो ॥ अगिनि जाय सीतल ना कीयो ॥ ऐसो जुध की
यो वन वारा ॥ सेन सकल भयो है हैकारा ॥ १० ॥ तब लछिमन कौं
मारत न ए ॥ रीय बान करि लछिमन हए ॥ लछिमन गिरे हमु रछा
पाई ॥ तब कुस लव कौं टेर सुनाई ॥ ११ ॥ कुस तब लव कौं कीयो हेरा ॥
द्वादस कोस मुनी वहू टेरा ॥ भाई उतर दीयो राजी ॥ बचौ कुसतो सेना स
व भाजी ॥ १२ ॥ सो श्री राम चंद्र लघु आए ॥ श्री राम चंद्र संघात सुनाए ॥
कही बालक न लछिमन मारे ॥ सेना मारि जोध संघारे ॥ १३ ॥ दोहा

लछिमननमारेवालकनःकहीरामसौंजाय॥सुनतरामसोकित भएःसोअवदंसुनाय॥२८॥इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्व वर्नेनोनामजैमुनिजनमेजयसंवादलछिमनमुरछितनोनामवतीसमोध्याय॥३२॥ ॥जैमुनियोवाच॥चौपई॥फिरिजैमुनियहकथाउचारी॥सुनिहोजनमेजयअधिकारी॥जगिमालाविहैरघुवीरा॥जगिहेतिगंगाकेतीरा॥१॥आगेमहाभगाउवाआए॥श्रीरामचंद्रसंज्ञायसुनाए॥वालकदोयमहासुकुमारे॥अर्जुनाथतिनलछिमनमारे॥२॥तवश्रीरामचंद्रजूकही॥अहोभरथएवोलैंसही॥अपनैंहतनवेगिपठावो॥लषनसत्रुघनसोधमगावो॥३॥भरथहूतनतवपाचपठाए॥तौलौंइतलषनकेआए॥होरेरामचंद्रलघआई॥लषनसत्रुघनषवरिसुनाई॥४॥सत्रघनतहासमरमेहए॥

जै०रा०व०
८३
166

लषनजायजहांआपतिभए॥ तेवनिवालनिलछिमनमारे॥ मुर छाकरीधरनिमेंडारे॥५॥ सेनामारिजोधसंघारे॥ ऐसोजुधकियो वनवारे॥ इतकहेसुनिअवरपुराई॥ वनआक्रमकोकहीनजाई॥ ६॥ सुनतवातआएअसुपात॥ फिरिइतनकोंवूझेंवात॥ श्रीराम चंद्रइतनकोपूछे॥ निजकरपटअसुपातअगूंछे॥ ७॥ श्रीरामोवाच॥ लछिमननेलंकामेंलरे॥ कहोइतसोकेसेमरे॥ वनलंका वडेअसुरसंघारे॥ सोलछिमनकेसेंवनिमारे॥ ८॥ इतउवाच॥ सत्रुघनसमरपरेहतहां॥ लछिमनगएधायकेजहां॥ सत्रुघन देषिक्रोधजियआयो॥ तवैजायसंग्रामसचायो॥ ९॥ तववनसोंव झुझनलागे॥ कायरदेषिकितेहूभागे॥ वनकेवानकाटिवनडा रे॥ तववनवालनलछिमनमारे॥ १०॥ वनकेवानहिएमेसरे॥

लगलगवानलछिमनगिरपरे॥ लछमनतहांमुरछापाई॥ ग्र

रसवसेनामारिभगाई॥११॥ फिरिश्रीरामचंद्रजूबूझै॥ लछिम

नकहोकौनविधिजुझे॥ कैसोजुधकियोमोग्रात॥ सोतुमकहोस

कलमोहिवात॥१२॥ इतोवाच॥ सोरठा॥ ग्रजुसुनऊरघुनाथ॥

वनवालककेसमरमै॥ लछिमनग्रपनैहथ॥ कवचकाटिडारेत

हो॥१३॥ चौपई॥ पहलेकवचकाटिवनडारे॥ ग्ररवनकौंउत्तरसर

मारे॥ कहीवालहौतुमघरिजावो॥ जैतुमग्रपनोंजीववचावो॥

१४॥ मेरेवांनसहेनहिजात॥ काहेकौंतुमजुधकरात॥ इतनीसुन

तसमरमेग्राए॥ लछिमनसोंवनजुधकराए॥१५॥ होउजुधकरत

सरमारे॥ तववनबालनलछिमनमारे॥ ग्रोरसमरसवसेनामा

री॥ वडेवडेजोधावलकारी॥१६॥ घोरापरमकुटीलेराख्यो॥ ग्रैसेंइ

अ॰१स्व॰
२७
168

तरामसोंभाष्यो॥ नवयहवाततमुनीहरिसही॥ लीएवुलायभरथसोक
ही॥१७॥ अहोभरथतूकहौकंपाही॥ यातेमोहिडरनहैनांही॥ अरदे
धोमोहिडुषअपारा॥ आएसकलएकहीबारा॥१८॥ कोनकोनतेतुम
हीसुनाउं॥ जिनदुषनतेमेपछितांउं॥ देषोप्रथममभयोवनवासा॥ पिता
मुक्तिसुनिभयोउदासा॥१९॥ सीताहरनकुवोतामांही॥ अवलोंमुष
पायोकहुंनाही॥ क्रमहीक्रमतवभयोसंजोग॥ अवसीतासंभयोवियोग॥
२०॥ फूफेमत्रघनलछिमनभाई॥ तातेमोमनऐसीआई॥ सोतुमसु
नहोभ्रातमेजनमदुषारो॥ तातेनजिहूंप्रानहमारो॥२१॥ दोहा॥ वु
धिकरिअरतपनेमकरि॥ वडेभरथहोधीर॥ तुमसवमनासंगिलेऐवे
गिपधारोवीर॥२२॥ चौपई॥ हमतोजगिमांनमेवैठे॥ तुमतपवुधि
करिकहितजेठे॥ तातेसवसनालेचैठे॥ वेगिजायवेगिनसोविठे॥

॥२३॥ न्टपसुग्रीव अरु हनवंता ॥ भभीषन अंगद बलवंता ॥ नल अरु नी
ल महाबलदाई ॥ अरु संगि लेकु जामवतराई ॥२४॥ सेन संगि ले अपनी
मेरी ॥ छबरि करो दोउ भ्रातन केरी ॥ एसब जोध संगि ले जावो ॥ काहू केरो
य बालक पावो ॥२५॥ काहू के दोय बालक रहे ॥ लव कुस नाव लोक सब क
है ॥ मारो नांहि वा घिले आवो ॥ मो लग वन को आनि दिषावो ॥२६॥ अरु वे
बालक कहिये काके ॥ अब मो हि नाव बतावो जाके ॥ नर थक हो हम जा
नत नांही ॥ साके से आवत मन मांही ॥२७॥ फिरि श्रीराम अंगद सो कही ॥
अंगद तुम जामें नहि सही ॥ तब अंगद बोले रघुनाथा ॥ आवत है मो मन
एक बाता ॥२८॥ एक जीव मे असी आनु ॥ वे सीता के बालक जानु ॥ अजुना
थ तुम लंका पधारे ॥ लंषन तहां वहो जोध संघारे ॥२९॥ जासुत सो दहकं
घन चीते ॥ मेघनाद से लछिमन जीते ॥ मेघनाद सो सुरपति हारे ॥ बरणकु

169

जै॰अ॰
८५
170

कुमेरआदिदैमारे॥३०॥औरसवैइगपालडिगाए॥जैसेइंइजीतिघर
आए॥तिनहिमारिकारिजसवसारे॥सोवेलषनबालकनमारे॥३१॥
कैसीताकैसुतहोई॥कैऔतारपुरषहैकोई॥नषमनसहतसेनसव
मारी॥नेकोइजोन्हैअवतारी॥३२॥जैमुनिरुवाच॥भरथचलेजन
मेजयराय॥श्रीरामचंद्रकीआग्यापाय॥तहांआनसमरमेहए॥जहां
भरथजायआपतिभए॥३३॥तहांसेनसवदेषीहई॥तवहनवंतभर
थसौंकही॥महाराजअवआग्यादीजे॥हुकमहोयसोईअवकीजे॥३४॥
भरथकहीमुनिहोहनुमान॥सत्रघनलषनतजेकहांप्रान॥तुमहन
वंतजायतहांदेषो॥सत्रघनलषनपरेतहांपेषो॥३५॥चलेमुनतहीप
वनकुमारा॥रन्ननदीलंघिउतरेपारा॥देषितहांजोधावऊपरे॥सत्र
घनलषनभ्रातदोउहरे॥३६॥तवहनवंतभरथलघआए॥दोउभ्रा

तऊआनिदरसाए। देषेभ्रातभरथतवदोई। नेहनैनकरिदीनुरोई॥३७॥ १७१

दोहा॥ देषिभरथभाईतहां: वहोतभएग्रसुपात। जैमुनिराजासोंकहे: सुनऊसमरकीवात॥३८॥ इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्वेवर्नने जैमुनिजनमेजयसंवादेभरथआगमनोनाम तेतीसमोध्यायः॥ ॥३३॥ ॥जैमुनियोवाच॥ चौपई॥ जैमुनिकहराजासुनिलीजे। कहुं कथाराजासुनिलीजे। कुसनेधनककवाननवलीनें। सुनमुषआयकु रुतवकीनें॥१॥ लवसमसेरहाथलेधारी। भरतनकरीवहुसेनसंघा री। कुसकेवानसेनमेलागे। जोधफिरतसवभागेभागे॥२॥ गिरेनागा वहुलवकेमारे। वहुनागनकेकुंभविदारे। अंतरीछिगिरिहैगजमो ती। मनहुचीरउडगनकीजोती॥३॥ औसोकुरुकियोतिहिवारा। जयो सेनमेहैहैकारा। वोलेभरथसुनऊहनवंत। काकेएवालककलवंत॥

जै॰ रा॰ म॰ ॥४॥ नवहनवंतकहीरिसवाल ॥ तुमयहजुद्धकीयोइहिकाल ॥ कहातुम्हारौ
२६ कहिएनाम ॥ काकेपुत्रकहांविश्राम ॥५॥ करिकैक्रोधवालतबबोले ॥ मन
172 कुघावकेघाटनषोले ॥ लछनमसत्रघनभ्राततुम्हारे ॥ हमहैतिनकेमा
रनहारे ॥६॥ कुसतौमेरौनामकहाई ॥ एलववहैल्होरौममभाई ॥ इनतु
म्हारीसेनासवमारी ॥ बांध्योवाजरारिइनपारी ॥७॥ अडिल ॥ सुनैवच
नएभरथःवालकनकेमही ॥ तुमनीकैंघरजाऊःभरथसैंयैकही ॥ वाज
हमारौदेऊभ्रानिस्त्रववावरे ॥ ममवांननकेनाहिसहैगेघावरे ॥८॥
चौपई ॥ वातसुनतकुसिसायकसोरे ॥ भरथपांचवांननकरिमारे ॥ पां
चवांनकरिबदरासोरे ॥ एकसतवानपवनसुतपारे ॥९॥ दोयसतवांन
अंगदकेऊपरि ॥ मुरछाहोयगिरेसवभूपरि ॥ उठिकेवहोरिपवनसुतआ
यो ॥ वडोएकजोयपहाडउचायो ॥ सोगिरिवरकुसऊपरिआयो ॥ कुस

करि गिरि ग्राकास उठायो। सो कुसगिरवानन सों मारयो। टूक टूक करि पर्वत डारयो ॥ ११ ॥ दोयवान करि हनवत मारे। भागी सेन सकल तिहि वारे। सकल भगाइ वा भागे तहां। गए ग्रवधि हरि वैठे जहां ॥ १२ ॥ जाय जगि मैं ठाढे भए। मारि भरथ रांम सों कहे। हो महाराज जोध सव मारे। भरथ ग्रादि दैस वै संगाते ॥ १३ ॥ इतनी सुनि हहरि ठाढे भए। जगि सालत ज्यवा हरि गए। ग्रर सव सेना लैकें चले। मारि भरथ तहां कों पिले ॥ १४ ॥ दोहा ॥ भैस ज्यार नषेत मैः पोढे है तिकुंग्रात। धनकवांन सजि सेन लगिः चले समर मेंजात ॥ १५ ॥ इति श्री महाभारथे ग्रसमेद के पर्व वर्नने जै मुनिजनमेजय संवादे भरथ मुरछित नो नाम चौतीसमो ध्याय ॥ ३४ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ तव यह ही कथा जै मुनि कहे स। तुम सुनियों जनमेजय नरेस। तव धनकवांन श्री रांम लीन। रथ चढे जात चित समर दीन। १ तहां चढे रांम

173

जै-स्व
८७
174

रथासिघ्रजाहि॥तहांलवकुसठाठेसमरमांहि॥जहांकुसपरेहैतिहं
भ्रात॥तबदेषिरांमऐसेकह्यौबात॥२॥तुमकहौकौनकेपुत्रहोउ॥अ
रुकहौनामपितमातसोउ॥यहधनुकवानविद्याप्रवीन॥तुमक
हापढेयहकवनदीन॥३॥अबकहापढतहोकहौवीर॥तुमबाल
कसौसमरसधीर॥तबकहनलगेकुससुनहुबात॥हमसहीजा
नकीसुतकहात॥४॥अरुधनकविद्यासबसाधनीक॥रिषिहमहिप
ढाएवालमीक॥हमधनुविद्यासाधीहैसब॥हमरामचरित्रकोप
ढतअब॥५॥कहिहमतुमसौंअबसुनहुरांम॥इतनीबातनसौंके
वनकांम॥तुमसुनहुबडेजोधाकहाय॥हमसौंनकरौकिनसमर
आय॥६॥तुमकरौकुसहमसौंनकोय॥तोकहौवाजहमपैनहोय॥
श्रीरांमकहैकुससुनहुबात॥हमतुमसोजुधनाहिनकरात॥७॥

कुसउवाच॥ कहौतुमकाईरहौवडेरांम॥रनमाहिपधारेकवनकाम॥सोकहाधर्मैसत्रीनमाहि॥ओरनसमरमेकरतनांहि॥८॥कुसयंकहिकैपिनाकनांनि॥हरितेपारिस्योकेपंचवान॥रेवांनकाटिकैरामचंद्र॥मुसकातघरेजतिमंदमंद॥९॥श्रीरांमचंद्रकोमुरछाहोय॥तहांदेषिगएसुग्रीवसोय॥कुसदसवाननकारिकैसधाव॥मुरछातकियेसुग्रीवराव॥१०॥तहांदेषिरांमसुग्रीवएह॥नवलगवसधनसमकाटिजेह॥कुसहरितेपरिदसवानमुक्त॥श्रीरांमग्रथकरितुकटुक॥११॥हरिवानकाटिरथचढेहेंओर॥जुधहौनलग्योवहौसोरमेर॥कुसवानलगेदसरांमजाय॥श्रीरांमगिरेमुरछातपाय॥१२॥सोरठा॥भईरामसुरछात॥कुसरथडारैलेचलै॥परमकुटीलेजात॥तहांजानकीमातहै॥१३॥चौपई॥श्रीरांमचंद्र

175

जै॰ ऽ ख २९ 176

जकोरथलाए॥ परमकुटीसीतापैआए॥ जायसियासौंवचनउचा
रे॥ इतेमातजोधाहममारे॥ १४॥ कितेहएतेगंतनजानू॥ वडेवडे
कोनोंवषानूं॥ रामचंद्रलछिमनबलवंत॥ भरथसत्रुघनअरह
नवंत॥ १५॥ जामवंतसुग्रीवसंघारे॥ अंगदऔरभभीषनमारे॥ आ
जिइतेकोमारनकीयो॥ साधकरनघोराहमलीयो॥ १६॥ सुनतसिया
मुरछाभपरी॥ वोहोतअचेतभईमनुमरी॥ जतनजतनमुरछासों
जगी॥ भयोचेततनवरोवनलगी॥ १७॥ कहीपुत्रकीनोंअप्राध॥ आज
हिमोदुषदयोअगाध॥ देषोआजिकिएसवसाके॥ मारेपिताऔरसव
काके॥ १८॥ औरसकलजोधातुममारे॥ भभीषनहनवंतदेमारे॥ यों
कहिकहिकैकरतविलाप॥ अहोआजकहाकीनोंपाप॥ १९॥ सियविला
परिषिमुनिकेआये॥ वालमीकसीतापैआये॥ इहैवातसियामुषजो

वै ॥ हो पुत्री सीता कौं गै वै ॥ २० ॥ नव सीता रोवत रही ॥ बालमीक सौं गा
या कही ॥ छाड्यो अस्व मुष्य समेदा कारन ॥ आयो बाज कतु या कारन ॥
२१ ॥ सो लव नै घोरा वह गह्यो ॥ काहू कौं मान्यौं नहीं कह्यो ॥ रच्छा कौं
रघुनाथ पधारे ॥ सो श्रीरांम बालकन मारे ॥ २२ ॥ सेना सहत सेनपति
मारे ॥ भरथ लषन सत्रुघन दै सारे ॥ मुरछा भई सबन की तहां ॥ आए
बालमीक जू जहां ॥ २३ ॥ रिषि सुमरन करि गरुड़ बुलायो ॥ बेरन लगी
गरुड़ चलि आयो ॥ बोली सीय गरुड़ सौं कही ॥ आयो काज अजि एस ही ॥
२४ ॥ सीता जू तब इंम्रत मांग्यो ॥ सुनत ही गरुड़ सुधा कौं भाग्यौ ॥ तत
छिन गरुड़ सुधा लै आयो ॥ सीताराम चंद्र मुष प्यायौ ॥ २५ ॥ लषमन भ
रथ सत्रुघन भाई ॥ सीचि सुधा सौं लिए जिवाई ॥ सीचत ही मुरछा सो उ
ठे ॥ कौंन जीवै इंम्रत जु है ॥ २६ ॥ सीता बहोरि कहन यौं लागी ॥ जो मै

जै॰अ॰ ९९

178

सदारामअनुरागी॥श्रीरामचंद्रपदहियेमेधरिहो॥इनचरननकीवां छाकरिहैं॥२७॥कबहूंनाहिटरतहीयाते॥तौजीवोजोधामबजाते॥ बातकहतहीबिसबजीए॥वालमीककौंदरसनदीयो॥२८॥सोरठा॥ करिडंडौतप्रनाम॥वालमीककोहरिमिले॥बहुरिदईश्रीराम॥परद छिनारिषराजकी॥२९॥चौपई॥वालमीकरिषदेतअसीस॥तुमत्र लोकनायकजगदीस॥मोहिंपावनोदरसनभयो॥सोकमोहदुषसब हीगयो॥३०॥अरफिरिवालमीकजूकही॥एदोउपुत्रतुम्हारेसही॥सी तासोंउपजेसुतदोउ॥इनसमअरवलीनहिकोइ॥३१॥सोअबकह्यो हमारोकीजे॥प्रभुअबइनकौंसंगिहिलीजे॥श्रीरामचंद्रजभेटतभए॥ आगमअनंददुषसबगए॥३२॥दोहा॥कुसलवसीताजूसहत॥आए अवधिकेधाम॥सबैअवधिआनंदभयो॥लषिसीयाश्रीराम॥३३॥

जैमुनियोवाच॥ चौ० ॥ राजाजनमेजै मुनिमोसौ ॥ कहौं महातमया कौ तासौं ॥ रामचंद्रलवकुसकी कथा ॥ सोतुमसौंमैकीनीजथा ॥ ३४ ॥ या चरित्रकौंहितकरिगावै ॥ प्रीतिमहतजोसुनैसुनावै ॥ त्रियापुरषसुनै जोकोई ॥ ताकोबहोतपुंनिफलहोई ॥ ३५ ॥ पुत्रहीनकोकथासुनावै ॥ तो वहसहीपुत्रफलपावै ॥ अरजेत्रीयादुहागनिकोई ॥ सुनियहकथा सुहागनिहोई ॥ ३६ ॥ अरयहकथाहरषितहांगुनै ॥ नीमषारमैरिषि सबसुनै ॥ बहुतपवित्रकथायहजांनु ॥ हितकरिसुनैसुनायबषांनु ॥ ३७ ॥ जोकोईकहैप्रीतिसोंगुनै ॥ श्रोतातांहिप्रीतिसुनैं ॥ तेअसमेद जग्यफलपावै ॥ जोयहगाथाहितचितलावै ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ महिमा रामचरित्रकीः तुमसौंकहीसुनाय ॥ महापुंन्ययाप्रसंगकोः सुनिजन मेजयराय ॥ ३९ ॥ इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्वबर्ननेजैमुनि

179

जै०१७४० जनमेजयसंवादेश्रीरामचंद्रसीतालवकुसअजोध्याआगमनोनमपैंतीसमोध्याय ॥३५॥ ॥जैमुनियोवाच ॥ चौ० ॥ फिरिजैमुनियहकथाउचारी ॥ सुनियोजनमेजयअधिकारी ॥ श्रीरामचंद्रकीगाथाकही ॥ अबैसुनुजोपैछैरही ॥१॥ छंदहनुफाल ॥ धुजहंसबवाहनं ॥ मडेहैदोउआहनं ॥ समजोधजुधलगियं ॥ रिनतुरनादवगियं ॥२॥ तहांवबुवांनसारियं ॥ हंसधुजसेनमारियं ॥ फिरिसोकिपंचसायकं ॥ हंसधुजहएरणपकं ॥३॥ सुरछायहंसराजयं ॥ निसानबबवाजयं ॥ बहोवबअनुधमंडियं ॥ कितेकजोधखंडियं ॥४॥ कितेकजोधजुझियं ॥ तहांघायलवहोघुमियं ॥ निसाननदवजियं ॥ तहांबबआयगाजियं ॥५॥ दोहा ॥ रथडारेसारेसुभटः मेनपुरीलेआय ॥ सोनपतुमसोंकहेतहोः तिनकेनामवताय ॥६॥ चौपई ॥ कौंनकौंनते

९० 180

घायल आए ॥ प्रदवनि अनरथ सलि वताए ॥ मेघवरन राजा जो व
नास ॥ और सुवेग पुत्र हैं जास ॥ ७ ॥ इतने घायल घर लै आए ॥ लै अ
पनी मात नंद रसाए ॥ वभ्रुवाहन मातन सौ भाषि ॥ मातइन कौ नी
कै राषि ॥ ८ ॥ जो ए मरैं न हो सो कीजे ॥ इनकौ जम जीवन को लीजे ॥ ए
तौ कहि माता अमजाई ॥ वही स्यौं बभ्रु जुझ कूं जाई ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ नव
अर्जुन समझाय ॥ नवु केतसौं यौं कही ॥ अहो पुत्र इह भाय ॥ अव तुम
स्यौं तेनी सरौ ॥ १० ॥ चौपई ॥ नीके सौ पुत्र वचे है दोई ॥ अरु के नास बं
स को होई ॥ बभ्रुवाहन जोधा सब मारे ॥ जो आए अमुके रषवारे ॥ ११ ॥
तातें कह्यौ हमारौ कीजे ॥ अपनौ वंस राषि अब लीजे ॥ मानौ सीष ना
गपुर चलिए ॥ मेरे कहे कुटंब सौं मिलिए ॥ १२ ॥ वृषकेतोवाच ॥ अ
हो पिता तुम नीके कही ॥ मेरे मन की सुनियो सही ॥ तुम हि छाडि मे के

श्री ८५ सैजोंर्ई ॥ कहानागपुरबदान दिषांई ॥ १३ ॥ कौन धर्ममेंरौ अब बाटै ॥ सत्री होय समर मैं छाडै ॥ असत्री बहो निंदत हैताको ॥ जो जीवन जग मैं धृग जाको ॥ १४ ॥ जे बैरी मरै स्वामकै काजा ॥ बसिबै कुं होत न हैराजा ॥ वृषकेत असै कहदीनों ॥ जाय बभ्रु सौं समर कीनों ॥ १५ ॥ आधीसेन बभ्रु की मारी ॥ बभ्रुवाहन पङ्यौ तिहि वारी ॥ वृष अरु बभ्रु जुद्ध कौं लागे ॥ कायर सक्ति समर सों भागे ॥ १६ ॥ असौ घोर महा जुध भयो ॥ काहू पासि जात न हि कहो ॥ वृषकेत थन बांन संभारे ॥ सायक पांच बभ्रु कै मारे ॥ १७ ॥ सायक दोय चक्र के रीये ॥ रथ के टूक टूक बन कीये ॥ बाहन बभ्रु और रथ लीयो ॥ चढिकै जुद्ध बभ्रु सौं कीयो ॥ १८ ॥ वृषकेत दोय सायक दोटे ॥ आवत अरथ इसर काटे ॥ जो बहु अरथ हर्षे षेआयो ॥ बांन मारि आकास उडायो ॥ १९ ॥ सब हि न देष्यौ जात अकासा ॥ सब सेनामैं

९१

182

भयोनमासा॥ फिरिरथञ्चानिभूमिपैपरितस्यौ॥ अर्जुनसौंकुरुवृषधतहांकह्यौ॥२७॥ करिकैक्रोधवृषकेतहांआयो॥ अर्धचंद्रलैबानचलायो॥ चंद्रबानलैकैवृषमार्‍यौ॥ सीसकाटिआकाससउडार्‍यौ॥२१॥ जायअकासभोमिमैपर्‍यौ॥ अरजाकेपायनमैंडर्‍यौ॥ देषतसीसधनंजयसोयो॥ लियोउठायधाहदैरोयो॥२२॥ दोहा॥ वृषकेतमारेतहां देषिधनंजयआय॥ लयोसीसकरहियेधरिःकीयोवहोतबिलाप॥२३॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्वबर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेवृषकेतअर्जुनेनामछत्तीसमोध्याय॥३६॥ ॥जैमुनियोवाच॥ दोहा॥ यहीकथावह्‌रस्यौसुनोजनमेजयनरईस॥ अर्जुनलयोउठायकैःवृषकेतकौसीस॥१॥ अर्जुनउवाच॥ छंदषटपद॥ अराजपुत्रकहाकियोःकह्योमेरोनहिमान्यो॥ पासंमरहित्तधर्‍यौःकियोतुम

जै॰ अ॰ ९२ 184

अपनो जान्यो ॥ तुमहि छाडि हृषकेतन कहा जीवन मेरो तु ॥ कहा नागपुर जाय राय कहं वदन दिखाउं ॥ उजिहै मात कुंती तहां राय जुधिष्ठिर भ्रात सव ॥ तुमहि विना हृषकेत देखु गो कवन भांति कौ भाव जब ॥ २ ॥ आजु भयो वलहीन आजि मेरो अनुज कह्यो ॥ आजि नागपुर दीन आजि सेनो वल घट्यो ॥ आजि आउ गई सेन आजि भयो जगि विधो सा ॥ आजि गयो आनंद तजी जीवन की आसा ॥ आजि राजसमाहं मगयो घटे जो यमनलरनके ॥ अर्जुन अजित कैसे कहे तुमहि विना सुनकरन के ॥ ३ ॥ पवन तेज आकाम उडन गुडी गुन टूटी ॥ यो तुम विन हृषकेत गए सेना पग छूटी ॥ ज्यों पंछी आकाम उडन पंषन के जोरे ॥ त्यों हो य वलहीन जाम षगको उत्तरे ॥ कटी पांख मम करन सुत कृष्ण रयाम मरमधि ॥ थकी नाव अथपर अवै कवन षेय तारै उदधि ॥ ४ ॥ चौपई ॥

ऐसेअर्जुनकरतविलाप॥आयोतहांबभ्रुवलिआप॥अर्जुनदृष्टिम
रतहैनाची॥बभ्रुवाहनलैधनसौंपीची॥५॥बभ्रुवाहनोवाच॥रोव
तकहाकुरुउठिकीजे॥बातनकीपरतंग्यालीजे॥सुनिएबातक्रोधअति
भयो॥धनकवानअर्जुनतवलयो॥६॥वाहनबभ्रुधनंजयआगे॥गएन
वैहीसमरलागे॥अर्जुनवानबभ्रुकेसारे॥तेसबबभ्रुकाटिकैडारे॥७॥
अर्जुनअग्निवानएकसारे॥अर्धभागसेनालैजारे॥अग्निवानसबनयु
जलायो॥वरनवानलैबभ्रुचलायो॥८॥अग्नितेजघटिसीतलभई॥वाह
नबभ्रुबहुरियोंकही॥होअर्जुनकैसेमरसारो॥धनविद्याअबक्योंनसं
म्हारो॥९॥सीखेद्रोणगुरनकेआगे॥क्योंनकरौअबकैसीलागे॥अर्जुन
सुनतवानकिरिमारे॥रथकंकाटिटूककरिडारे॥१०॥बभ्रुसौंचंद्रवा
नगहिलीयो॥वाहनबभ्रुवेगिहरदीयो॥अर्धचंद्रभरिदीएकसीस॥

185

जै॰ऽस्व॰ ९३ 186

कादेवभ्रुपिताकेसीस॥११॥दोहा॥धरैसीसवाहंउपैंअलेनग्रकोजा
य॥वधीवधाईनग्रमैःमिलेसकलजनआय॥१२॥चोपई॥अस्त्रीजन
सुजानुजकरई॥चंदनअषितनुजनपरिथरई॥पहोपनकीमालापहरा
ई॥गावतनारिअतेहपुरआई॥१३॥राजलोकआईयहवाता॥नवग्रहसुनी
वभ्रुकीमाता॥चित्रांगदाउलुपीभागी॥आंगनविचिआयरोवनलागी॥
१४॥दैदेहाथसीसकैमारै॥चुरियांफोरिफोरिगहिडारै॥वाहनवभ्रुमुन
नहीध्यायो॥अपनीमातनकैढिगआयो॥१५॥वोलेवभ्रुवाहननवअैसे॥
मातातुमरोवतहोकैसे॥जननीअवकैसोरोईमरी॥समरनजीत्योआनं
दकरो॥१६॥जननीवचनसोअैसभाष्यो॥कोनउछाहपुत्रतुमराख्यो॥तव
तेपुत्रपितातुमहयो॥आनदत्तोअर्जुनसंगिगयो॥१७॥अवतोहमरंडा
हैभई॥सोतुमकरिकैकरिहेदई॥अवएककह्योहमारोकारए॥अर्जुन

तहां हमैलै धरिए ॥१८॥ जहां डरै है पिता तुम्हारे ॥ तहां लै चलौ सत्र हमारे ॥ तव रोई जननी उठि चली ॥ अर्जुन डरे तहां कौ मिली ॥१९॥ वाहन वभ्रुवहीं तन पछितावै ॥ कौन भांति माता सुष पावै ॥ मन मैं वडु दुचिताई भई ॥ कौन कर्म कीनो ए दई ॥२०॥ कहीं धर्म छत्री कौ ऐसो ॥ मारै पुत्र पिता कौं कैसो ॥ ऐसो धर्म कवन उचारै ॥ अपनौ पिता पुत्र जाय मारै ॥२१॥ सोरठा ॥ गई तहां दोउ नारि ॥ अर्जुन कुते डरे तहां ॥ वभ्रु लगे ही लारि ॥ मातन कै पाछै गए ॥२२॥ देषे अर्जुन जाय ॥ परे कुंते तहां आय कै ॥ लै कै लोथि उठाय ॥ वहीं तवि लाप पोगा रले ॥२३॥ चौपई ॥ चित्रंगदा र अलूपी यही ॥ तव वभ्रुवाहन सु कही ॥ कुंती मातन जीवै कव ही ॥ मारे सुनै धनंजय तव ही ॥२४॥ ऐसे कहि कहि रोवन लागी ॥ लकरी वहोरि वभ्रु पै मागी ॥ अव हम संग गंगा मनी होइ ॥

187

श्री०स्व०
२४
188

तुमकछुविलगजनमानौकोइ॥२५॥अहोपुत्रएककारिजकीजे॥हमकोअबैलकरीयारीजे॥फिरिएकबातअलूपीकही॥सुनियोपुत्रकहतहौंसही॥२६॥दोहा॥इनजीवनकीकहतहौ:तुमसौंपुत्रउपाय॥जोतुमसौंबनिआयहै:तौलीजैसकलजिवाय॥२७॥चौपई॥कहौसपोरपितताकौसाजा॥सोहैसबसर्पनकौराजा॥सरजीवनीमनिकहिएजाकै॥मरेजीवैउठैछीवतताके॥२८॥बभ्रुवाहनोवाच॥मातनुम्हारीअग्यापाउं॥होयजहांतेमनिलैआउं॥यहअपराधबडोहमकीयो॥पितामारिकैअपजसलीयो॥२९॥जोमैअपनेपितासंघारे॥यहीलोकपरलोकबिगारे॥मुहीमाहिकहततहैसारे॥पिताआपनुंइनहीमारे॥३०॥अबमैदोउलोकनसाए॥तातेऔरनकोयउपाए॥कैतोमनिलेआउंनिधांना॥कैमेतजिहूंअपनेप्राना॥३१॥अलूपीयोवाच॥

अहो पुत्र कद्रू सर्प अपारा । महा विषम तिन की फुंसारा । फुंसारन मान
व व कु मरै । वहां जायन रकै सो करै ॥ ३२ ॥ एक नाग फन होय हजारा ॥
तुम्हारो तेहा वसायन पारा । तातें तुम जावो मति कोई । करि हो एक उपा
य जहोई ॥ ३३ ॥ तुम नो जाऊं न कब हूं वहां ॥ मनि उपाय तें आवै इहां ॥ मं
त्री पुंडरीक है मेरो ॥ सो कारिज सब करि है तेरो ॥ ३४ ॥ तहां अल्पायो कह
दीनों । पुंडरीक को सुमरन कीनों । तातें पुंडरीक आय गयो । कही अल्प
यो सो सुनि लयो ॥ ३५ ॥ अल्पायो वाच । सोरठा ॥ अहो पुंडरीक काम ॥
आनि वन्यो तुम सों अवै । वासिग माणि तनाम । जहां जाऊ तुम वेग दे ॥ ३६ ॥
चौपई ॥ मेरो पिता न ग्यंइ देवा । जहो तुम जाय सुनावो भेवा । मेरे करन
फूल ले जावो । मनि सजीवनी कहि कै लावो ॥ ३७ ॥ पुंडरीक पाताल हि
न लो । सीघ्र जाय वासिग सों मिल्यो । सेस नाग सों कियो प्रनामा । कही

जै॰ अ॰

९५

190

सेमश्रायोकिहिकामा॥३८॥सोरठा॥सर्पराजमुनिभेव॥कुरुवधुअर्जु
नभयो॥सोतहांवासिगदेव॥अर्जुनमारेवभ्रुने॥३९॥चौपई॥करि
कैजुधधनंजयमारे॥काटेसीसधरनिपैडारे॥तिनहिजिवावनकोम
निदीजे॥फनिपतिराजकाजयहकीजे॥४०॥महावाउजीवनकोक
रिहै॥बहोरितुम्हारीउलटीधरिहै॥दीजेवगिविलंबनहिकीजे॥वकु
रिआपनीउलटीलीजे॥४१॥वासिगवोवाच॥सोरठा॥वोलेवासिगरा
य॥वडेजोधअर्जुनहुते॥महादेवजुआय॥कीनेवलसंतुष्टजुय॥४२॥
चौ॰॥हरसंतुष्टकिएजुधमाही॥अरुश्रीकृष्णस्वारथीआही॥सोदेक
होकोनविधिमारे॥वभ्रुवाहनरनमाहिसंघारे॥४३॥पुंडरीकोवाच॥
करिहैजगिजुधिष्टरराजा॥सोवकरनछोड्योएकवाजा॥वेआएरछ्या
केकाजा॥जीतेश्रोरकितेहूराजा॥४४॥चलिकेवाजमैनपुरआयो॥क

ढ़बभ्रुकौजायबनायो॥लैकैंबाजनतहांगहिआन्यों॥महाबाद्यतबआये
जान्यों॥४५॥बभ्रुवाहनमिलिवेकौंआयो॥वहोतसोंजअरघोरालायो
ओरवहोतलछिलैकैंचल्यो॥वनसोंगुडाकेसनहिमिल्यो॥४६॥तव
अर्जुनवनसोंग्रहकीनी॥बभ्रुवाहनमोगारीदीनी॥लगतेवोलकहेव
हिठांव॥धरेकितैऊवनकौंनाव॥४७॥नातेगंगाश्रापसम्हारे॥गुडाके
सवनश्रापनमारे॥अधरआवैविलंवनहिकीजे॥संजीवनीमनिमोकौं
दीजे॥४८॥वनहिजीवावनकीमुनिआगी॥तुमसोंमनीअल्पीमागी॥
तवलगवनहिजिवाइउठावै॥सरजीवनीमनिवहुरिपठावै॥४९॥सेस
नागतवपुत्रवुलायो॥वेरनलगीतहांचलिआयो॥वासिगकहीपुत्रसौ
नाई॥सजीवनीमनिदेऊमगाई॥५०॥तवलगकृस्नदेवनहिआवै॥
तवलगमनिकौतहांपठावै॥वनकौंतौश्रीकृस्नजिवावै॥ऐसोदाव

वहुरिनहिपावै ॥५१॥ ताते जमपहलै ही लीजे ॥ इनकौं वेगि लायमनि दीजे
मुनिए वात सेस कैं आगै ॥ धृष्टसर्प तब कहन लागै ॥५२॥ धृष्टसर्प उवाच ॥
सोरठा ॥ मुनियो वासिग देव ॥ म्रतलोक निनाहिदे ॥ जो लषिहै मनि भेव ॥
पंडव फिरि मनि दैं नहीं ॥५३॥ चौ० ॥ मनि सौं हमजीवन है सबही ॥ गुन पा
ये फिरैं नहि कवही ॥ पंडव या मनि कौं गुन पैहै ॥ तुम कौं वहुरि नाहि म-
नि दैहै ॥५४॥ दोहा ॥ पुंडरीकतव फिरि चल्यौ ॥ सुनी सकल यह वात ॥ वेरम
यो तुम पंडवन ॥ सव आगे कह जात ॥५५॥ चौ० ॥ तुम कीनों पंडवन सौं वे
रा ॥ औसें कहत चल्यौ सव वेरा ॥ सरपनि वचन कह्यौ वनि औसो ॥ वहां काम
मनि कौ है कैसो ॥५६॥ जहां श्रीकृस्न समीप हि होई ॥ वे ज्यावे जीवत सव
कोई ॥ वासिग कही कहा मे करहूं ॥ मनि न हि देत कौं न सौं अरहूं ॥५७॥ दोहा
पुंडरीक तव सेस कौं ॥ करि डंडोत प्रनाम ॥ मैनपुरी कौं उठि चल्यौ ॥ भयो न

मनिकोकांम॥५८॥इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्वेवर्नने जैमुनि जनमेजयसंवादेपुंडरीकमैनपुरआगमनोनामसैतीसमोध्याय॥ ३७॥ ॥जैमुनियोवाच॥चौपई॥ वकुरिकथाजैमुनिसमझाय अबसु नियोजनमेजयराय पुंडरीकतबकातेचल्यो तबहीमैनपुरीआयमि ल्यो॥१॥ मनिकीतोवनिमानीनाही तातेरोसधरैजियमांही चाहतबा ह्मअलषीतहां पुंडरीकचलिआयोतहां॥२॥ पतालकोव्योरासबकह्यो सु निकैबअक्रोधअतिभयो कहीजोधमतबहीचलिआवो बेगिनिसांननबं ववजावो॥३॥ औरकहीसेनासबचलो सबहिनमैकीनोंहलचलो॥ ऐसैंवबढतोरापकेसा जायबभ्रपातालहियैसो॥४॥ तबककहूकहीसमं मोंजाय बभ्रलोकतुबघेसोंआय सेसनागतबसर्पबुलाए चलिसबस र्पसेसपैआए सेसनागनागनसोंकही मेरौकह्योहोयहैसही॥ आयोब

जै॰उत्त॰ ६७ 194

अग्रवैकिनलरी॥ वनसौंजुरुआयतुमकरी॥६॥ वडेवडेसपधृष्टके.नारा वलेकोसद्वादसकुंकारा॥ श्रेसेसर्पजुरुकोग्राए॥ वभ्रवाहनसौंजुरुम चाए॥७॥ धृष्टरकोटकएसवलरई॥ वालेहिववातौजुधकरई॥ धृतराष्ट कौरथनवकातोा॥ तक्षकवानअग्निनवछोरोा॥ ८॥ सिनासकलजरनलन लागी॥ फिरतअग्निसोभागेभागे॥ वभ्रुवाहनवानवरनकौदीनु॥ अग्नि तेजसीतलकरिलीनु॥ ९॥ वरुरिवरुणकुवानसम्हारोा॥ लेपपीलसर्पनपै डारोा॥ सरपपीलसर्पनकेलगे॥ लगततपपीलसर्पसवभागे॥ १०॥ भगेना गवासिगपैग्राए॥ वहीचोटीडपरलपटाए॥ सर्पनकहीकहाग्रवकोजे॥ व भ्रजुधमेकैसंजीजे॥ ११॥ वासिगउवाच॥ पहेलैतौतुमममानीनांही॥ अव कौंभागेभारथमांही॥ तुमजकहीहमतौनहिंडरिहे॥ मनिषहमारीकहा जुकरिहै॥ १२॥ मेरेवचनकछुमहिलागे॥ ग्रवतुमग्रावतकाहेभागे॥ ग्रव

तुम अपनी बुधि सम्हारो ॥ नाहिन लगत वसा वह मारो ॥ १३ ॥ जैमुनियो वाच ॥ सुन हूं राजवाजि गके वेना ॥ सर्पन जी अहंनके देना ॥ कितेयक ना गधान व कुसोके ॥ कितेयक ब कुरुककरिरोके ॥ १४ ॥ सोरठा ॥ अरे नागम नि देकु ॥ सेसनाग अैसे कही ॥ कहा जुध करिलेकु ॥ मनिदीएं विन नावची ॥ १५ ॥ चौपई ॥ तवै तहां वासिगकी रानी ॥ उनहिं आय अैसी मति ठानी ॥ अपनो नाती लियो बुलाई ॥ ताके कर मनि देत पठाई ॥ १६ ॥ अौर मनिनकी माला दीनी ॥ वहै जनवकी अस्तुति कीनी ॥ द्यो कवचमनि कौ करि अ गै ॥ ताके कहूं हथ्यार न लागै ॥ १७ ॥ वभ्रुवाहन नगरी को चले ॥ सेसनाग सगि चलि है मिले ॥ ६८ सर्प तौ संगिन आयो ॥ अपने मन सौ मतौ सुनायो ॥ १८ ॥ पंडव नअर हमको तुरज ॥ तात पुत्र कहत हौ गुज ॥ वैर भयो सो कैसी काजै ॥ ताते एक मतो सुनि लीजै ॥ १९ ॥ अर्जुन नहीं जीवै सो करो ॥ वनको

195

सीसकरलैधरौ॥ तबहुरबुधिसर्पयंकही॥ तुम्हारीबातमोंनिहमल
हैं॥२०॥ अर्जुनसीसअवैमैहरिहौं॥ पावतनोंहितहांलेधरिहौं॥ अर्जु
नकोमाथोहरिल्यायो॥ तबहीबभ्रुमेनपुरआयो॥२१॥ सोरठा॥ कद्रू
नलगिहेफेर॥ गयोवब्रूअर्जुनतहां॥ आयनिकटतिहवेर॥ सीसनदेष्यो
रूंडपै॥२२॥ चौपई॥ चित्रंगदारअलूपीपेष्यो॥ अर्जुनसीसरूंडनही
देष्यो॥ रूंडहिदेषिवहोतबिललाई॥ विनमस्तगजीवेक्यौंमाई॥२३॥
वभ्रुवाहनउवाच॥ जोनेसीसहरयोउनकेरो॥ तिनसोंबैरभयोहैमेरो॥
वहोतषरकरिकैमनिलायो॥ तोमैसीसरूंडनहिपायो॥२४॥ जैमुनि
योवाच॥ सुनीएकहथनागुरबाता॥ सुपनोंदेष्योकुंतीमाता॥ रजनीगई
विहानोंभयो॥ कुंतातवेकृस्नसोंकह्यो॥२५॥ कुंतीयोवाच॥ अहोकृस्न
एकसुपनोंदेष्यो॥ तासुपनैमैअर्जुनपेष्यो॥ देषीएककराहीधरी॥

सो ह्नत हां तेल सों भरी ॥ २६ ॥ तिं के मध्य धनंजय परयो ॥ सो जानों जीवत
न हि मरयो ॥ सबै गात गो वरलि पटायो ॥ रक्त कुसम माला पहरायो ॥
२७ ॥ सो हौं जानत हौं मन मांही ॥ अर्जुन जीवत है कहुं नाही ॥ हीयो कं
प होत है मेरो ॥ कंकन गिरयो महो इन केरो ॥ २८ ॥ ऐसो सुपन मात कौं भ
यो ॥ कुंता मात क्रस्न सों कह्यो ॥ तब श्री क्रस्न मानि मन लीयो ॥ तब ही ध्या
न गरुड कौ कीयो ॥ २९ ॥ आए गरुड करी नहि बारा ॥ तब श्री क्रस्न भ
ए असवारा ॥ कुंती मात र भीम चढाए ॥ तब छिन ही अर्जुन ढिग आ
ए ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ अर्जुन के ढिग आय ॥ कनक लगे श्री क्रस्न जू ॥ ली
ए गोद उठाय ॥ कही अवस्था यों भई ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ तुम तौ यहै अवस्था
धरी ॥ कैसे भई कौन नै करी ॥ तउ भीम र कुंती माता ॥ बूझै षडे कहौ कि
न बाता ॥ ३२ ॥ अरहम ह्न तउ इन माही ॥ सो हम सों बोलौ कहुं नाही ॥

जै॰ऋ॰
९९
198

हमहो आए बरितुम्हारी॥ वकी कहु न बात हमारी॥३३॥ ऐसे सें करत
कर तविलाप॥ विकलभाव करि सुनै अपाप॥ ऐसे बात करत गोपाला॥
बभ्रुवाहन आयो तिहि काला॥३४॥ श्रीकृस्नचंद्र के पायन लेटै॥ कुंती
मातभीमपद मेटै॥ मेटि पाव फिरि ऐसे कही॥ मैंही चोर तुम्हारो सही
३५॥ मैंहि पिता को मारन हारो॥ अव षनु मो पापी को मारो॥ ऐसो वहु प
छितावन कस्यो॥ आय कृस्न के पायन पस्यो॥३६॥ दोहा॥ कुंती मा कौं
देषि कें रुदन करत सब कोय॥ चित्रगदा वासि सुता मै है विकलता
होय॥३७॥ इति श्रीमहाभारथे अस्वमेद के पर्व वर्नने जैमुनिजनमे
जयसंवादे श्रीकृस्न आगमनो नाम अठतीसमोध्याय॥३८॥ ॥
जैमुनियोवाच॥ सोरठा॥ फिरि मुनियो यह बात॥ बचन अलूपी मोक
है॥
चौपई॥ कुंती मात बचन सर मारे

देषिअलपोसौंतुम्गौ। तुम्हारीमंछितऐसीभई॥ अपनेवंसिअगिन
ईदर्ई॥२॥ दोहा॥ ऐसकहीश्रीकिस्नसौं:सुनऊत्रलोकीनाथ॥ इनपं
डवनकेसदाही तुमरहेसांकेसाथ॥३॥ चौपई॥ अवकहादेषतहो
जदुराई॥ तुमकरिआए सदासहाई॥ तुमपंडवनकेसदासहायक॥ औ
रकोनतुमविनसुषदायक॥४॥ कोनलेगयोअर्जुनसीस॥ तुमसोदुरि
नहीजगदीस॥ तातेमस्तगवेगिमगावो॥ जीवदानदेइनहिजिवावो॥
॥५॥ श्रीकिस्नउवाच॥ श्रीकिस्नकहेसर्पनकेरावा॥ देषोममंत्रीन
परभावा॥ देषोअवमैमंत्रचलाउं॥ आयरहंउकौसीसमिलाउं॥६॥ स
दाउसचारीमेरहं॥ अहीस्वारकवहूंनहिलहं॥ तोअर्जुनकोआवौ
सीसा॥ ऐसेवचनकहेजगदीसा॥७॥ चोरसामहुंस्योंचलिआवे॥ ऐसेक
र्मकहूंनकमावे॥ ऐसेवचनकहेसवआगे॥ मनतरेहसवनकेभागे॥८॥

सोरठा ॥ कहत बचन जदुराय ॥ इते कलंगा सब के निकट ॥ श्रीकृष्ण चं
द्र कै पाय ॥ सीस धरयो सब देषिहे ॥ चौ॰ ॥ अर्जुन सीस कृष्ण कै पायन ॥
आनि धरयो देषै सब रायन ॥ जिन यह अर्जुन सीस चुरायो ॥ ता कौ सु
उत तहा चलि आयो ॥ १० ॥ फिरि श्रीकृष्ण कहत समझाई ॥ मेरी बात
सुनौं सब भाई ॥ अर्जुन सीस रुंड पै धरयौ ॥ मनिमं डौ वनी ही यपै धरो ॥
११ ॥ धरत श्रमी अर्जुन उठि चले ॥ हित करि कृष्ण देवत तव मिले ॥ कुं
ती मात भीम तहं ठाढे ॥ वृनसों मिलत मोद अति वाढे ॥ १२ ॥ फिरि ए
क मतौ कियो जदुनाथ ॥ गह्यो बभ्रुवाहन कौ हाथ ॥ गहि अर्जुन के
पायन पार्यो ॥ ग्रवै मिलौ एव चन उचार्यो ॥ १३ ॥ तब उठि सकल न
ग्र मै आए ॥ मंगल करि नीसान बजाए ॥ और सबन की पूजा करी ॥ ब
होत भेट आगे लै धरी ॥ १४ ॥ बभ्रुवाहन अर्जुन पै गयो ॥ हाथ जोरि

कैठाठौभयो ॥ मोसौंभयोवडौअपराध ॥ घोरनरकडुषसहूंअगाध ॥ १५ ॥ तातेंऔरउपावनआंना ॥ अवमेंतजिहौंअपनेप्रांना ॥ कैमै अग्निकुंडमैंपरिहूं ॥ कैमैएकअवसिअवकरिहूं ॥ १६ ॥ ऐसेंवच नवधूतवकहे ॥ भीमसेनितवतोकरगहे ॥ वोलेभीमजानिकैंस ही ॥ वहैगिवधूसौंऐसैंकही ॥ ७ ॥ भीमसेनोवाच ॥ अहोपुत्रतोहि दोषनलागौं ॥ तुमतौषडेकृस्नकेआगें ॥ श्रीकृस्ननामलेतहियजा त ॥ रितुवसंतज्योंतरवरपात ॥ १८ ॥ तातेंतुमतौषडेहजूरि ॥ सक रनअघभाजेंदूरि ॥ अवतुमसुनहुहमारीवाता ॥ सोजानतसवहीं विष्याता ॥ १९ ॥ हमआगपगुरअपाहिसंघारे ॥ सोश्रीकृस्नपापसवटा रे ॥ सोतुमतेंपातालसिधाए ॥ जीतिपतालसजीवनिलाए ॥ २० ॥ नाम निसुंमहावाडुजिवाए ॥ तुमकरिजीवदानइनपाए ॥ तातेंकहौंहमा

अ॰ स्व॰
१०१
202

रोकोजे ॥ मन संदेह इतिकरिदीजे ॥ २१ ॥ रह्याहे सिवाजसंगिचलिए
राजासंहथनापुरमिलिए ॥ भीमसेनिकेसुनिएवेना ॥ उपज्योत
वैबब्रकेवेना ॥ २२ ॥ पंचदिनानग्रीमेरहे ॥ मैनपुरीकेसवसुषलहे ॥
घरमैदिवसविदाकरिहीनी ॥ अरसबहिनदीपूजाकीनी ॥ २३ ॥ बि
अगदाअनूपीमिली ॥ बैतोहथनापुरकोचली ॥ कुंतीमाकेसंगिप
ठाई ॥ सोवेचलीनागपुरआई ॥ २४ ॥ श्रीकस्नवरनवासिगफननए
सेसनागअपनेंघरगए ॥ बवविदाकरिसबसोमिले ॥ आपनअर्जु
नकेसंगिचले ॥ २५ ॥ यहजोबब्रवाहनकोजुध ॥ औरसुनैनीकेंमन
सुध ॥ कहेसुनैनीकेचित्तलाय ॥ ताकेपापसुनतहीजाय ॥ २६ ॥ औरक
हैसुनिकेचितलावै ॥ ताकेवेरीनिकटनआवै ॥ विजेहोयताकीरणमा
हिं ॥ दुस्टनकोभेउपजेनाहिं ॥ २७ ॥ दोहा ॥ यहजोगाथाबब्रकीःकही

जनमेजयराज॥ आगेकीमुनियोंन्हातिः तहांगयोवहवाज॥ २८॥
इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्ववर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेमैनपुरतेविदावर्ननोनामगुणतालीसमोध्याय॥ ३९॥ ॥जैमुनियोवाच॥ सोरठा॥ अहोराजसुनिलीन॥ जैमुनिरिषफिरियोंकहै॥ भीमसेनचितदीन॥ चलेहस्तनापुरगए॥ १॥ चौपई॥ भीमसेनराजपुरकौगए॥ मुनिएराजकरतकहाभए॥ घोराचल्योकौनकैदेसा॥ सोअबगाथासुनहुनरेसा॥ २॥ सोरठा॥ जैमुनिकहैनरेस॥ तबैवाजआगेचल्यो॥ तांम्रधुजकेदेस॥ गयोएकघोरातहां॥ ३॥ चौपई॥
गयोवाजताम्रधुजवीरा॥ छांड्योवनहंजगिकोघोरा॥ घोरावाघोरालगबोवाजबाजआपसमैलरे॥ ४॥ ताम्रधुजकोमंत्रीतहा॥ वैकुलनामफिरतहैजहां॥ आयोअसुरछ्याकेकाजा॥ तिनपकर्योपंडवनकोवाजा॥

जै॰ अ॰ १०२ 204

वांच्यौ पत्र सीस कौं तहां ॥ मंत्री बैकुल आयौ जहां ॥ राजा ताम्रधुज लघ आयो ॥ बैकुल यौं राजा समझायो ॥ ६ ॥ बैकुलोवाच ॥ यह घोरा पंडवन कौ जान्यौं ॥ बांचि पत्र तुम आगे आन्यौं ॥ अरु हतौ कौं अर्जुन आए ॥ सो सब ब्यौरा जाय सुनाए ॥ ७ ॥ ताम्रधुज तब ऐसें सुनी ॥ करि विचारि मन माहीं गुनी ॥ बोले राज सुन हू रे भाई ॥ इनके संग श्रीकृस्न सहाई ॥ ८ ॥ आए वृषकेत व अवाहन ॥ पराक्रम बहोत कहियत न बाहन ॥ वडो पराक्रम इनकौं गायौ ॥ नारद जाप्रो आगै भाष्यौ ॥ ९ ॥ अरम निश्चा रिजो अहे सोई ॥ हम आवत न सौं समर न होई ॥ इती बात मंत्री सौं कही ॥ सेनापति कौं आग्या दही ॥ १० ॥ रतनपुरी कोउ रहन न पावै ॥ सो अहि सेन सकल चढि आवै ॥ भयो हुकम सेना सब चढी ॥ फौजन आगे बाहर कढी ॥ ११ ॥ फौजे देषि श्रीकृस्न बषांनी ॥ राजा सेना बाहरि आनी ॥ वृषकेत ब अबा

हनगए॥ देषिफौजकौं आगेभए॥१२॥ सोरठा॥ आयोनिपटलगारः
ताम्रधुजश्रीकृस्नके॥ कहीबाततिहिंवार॥ संकनमानीतनक हू॥१३॥
ताम्रधुजोवाच॥ चौ०॥ हमपंडवनकीघोरालयो॥ ऐसोवचनतहां
कहदीयो॥ जाकेवलसोआनिछुडावौ॥ वडेजोधसोहमपैआवौ॥१४॥
तुमप्रभुहोपंडवनकीवोरा॥ हमअवनाहिछाडिहैघोरा॥ तातेतुमधी
रकोंधरो॥ हमसौंआयजुधअवकरो॥१५॥ तुमपंडवनकेसदासहाय
क॥ औरकहाकहिएजदुनायक॥ इनकोमदारद्याकरिआए॥ पंडवन
केरछिपालकहाए॥ सोअवराखानीकैकरो॥ इनकेवोरहमसौलरो॥
औरसुदरसनचक्रहमारो॥ सारंगनामाधनकसंभारो॥१७॥ सोमैइ
नसोंनाहिडरांउं॥ सुनमुषजुधकरनअवआउं॥ ऐसेवचनताम्र
धुजकहे॥ आइसमरकोठाडेरहे॥१८॥ दोहा॥ ताम्रधुजश्रीकृस्नसौंः

जै॰अ॰ ऐसे कही बखानि ॥ फिरि अपनी सेना सहित चले जु भक्त ग्यानि ॥ १९ ॥

१०३
२०६

इति श्रीमहाभारथे अस्वमेधके पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे राजा तांम्रधुज वा कि नो नाम चालीसमो ध्याय ॥ ४० ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ दोहा ॥ राजा जनमेजय यह सुनु ऊ कहूं कथा सव नु ऊ अर्जुन अरु धुज तांम्र सौं होन लग्यो तव जुध ॥ १ ॥ छंद वेषरी ॥ सप्त वांन कसि तांम्रत कि अर्जुन कै मारे ॥ तीन वान श्रीक्रस्न कै लाए ति हिं वारे ॥ दोय वांन करि चक्र के सारथी संघारे ॥ सहंस्र वांन कसि तांम्र धुज ऊदव नि कै सारे ॥ २ ॥ पंच वांन करि ता वृ नै अनु रथ धरि डारे ॥ जोर कसे सर एक सत जुवनास पछारे ॥ बहुरि किमेसर दोय सत तहं सधुज हलारे ॥ साय कसौ के पंच सत जहा करन कौ मारे ॥ ३ ॥ बहुरि वाहि सर रस षसत जाय मलि सम्हारे ॥ फिरि षट सत करि वान तानि नीली

207

लधुजमारे॥ वज्रुरिवधेसुतकरन्केहूषकेतसम्हारे॥ तीनिवांन

करितांमकेकटेसरमारे॥४॥ रेयवांनकरिहूषकेतःरथकेअसमा

रे॥ रथकाटेधुजतामकेःछिगिजायहकारे॥ तामूअरोहिअंनरथक

एअसवारे॥ सायकसोकेपंचतकिहूषकेतपछारे॥५॥ दोहा॥ हूष

केतमुरछाभईःपरोभूमिमेजाय॥ देषिदौरिअनुरधतहांःजुजकसो

तवआय॥६॥ छंदबेषरी॥ हूषकेतमुरछातदेषिअनुरधतहांआए॥

चक्रचक्रसुतमुषमएःसंग्राममचाए॥ रथकाटेअनुरधकेतामधुज

राए॥ वज्रुरिचढेअनुरधतहांरथआनमगाए॥७॥ अनरधतांमउप

रेःवज्रुवांनचलाए॥ सुनमुषअनरधउपरेःतांमधुजथ्याए॥ आवत

अनुरधतांमपैःसायकदोयदाटे॥ वांनवाहिअधफरतहांःआवतर

थकाटे॥८॥ अनरधवहसेवानकरिसेनावहोमारी॥ संष्याजांनुतीन

जै०अ०
१०८
208

तहां क्रोह निसंगारी॥ औरव्र भयभवेतहां जोगिनि किलकारी॥ पत्र रक्तभरि भरि पिवैं अचवत अघाकारी॥ ९॥ रक्त आवनदी वही कोइ थाह न पावे॥ कमधउठेंव हो कंथ विनकेते दरसावे॥ तवें तांम्रधुजनत संअनुरधपै धावे॥ अरअनरथ फिरितांम्र को वहीं वानचलावे॥ १०॥ सातबानक सितांम्रधुज अनुरध ही मारे॥ गिरेदेषि अनुरध तहां तव ... हकारे॥ वभ्रुवाहन धुजनांम्र के आवत सरमारे॥ तातें तांम्रधुज बान सानव भ्रुउपरि मारे॥ ११॥ तांम्रधुजोवाच॥ अहो वभ्रुवाहन तुमें अर्जुन तो जीते॥ पनंग जीति पाताल के होय रहे न चीते॥ अवल षिहै वल राव रौं जे मोहि हरावें॥ जाते विन यास मरसों के सें घरि जावो॥ १२॥ चौपई॥ वाहेवों न वभ्रुति हि वारी॥ तांम्रधुज की सेना मारी॥ वचे कृते सो सव ही

भागे॥ऐसेवभ्रजायतहांलागे॥१३॥ बभ्रुवाहनसवलोगभगाए॥ तवैतांम्रधुजरिसिकैध्याए॥सायकतानवभ्रकैमारे॥वभ्रुवाहन मुरछाकरिडारे॥१४॥ वभ्रूमारिसेनामेपिल्यो॥वहोसुभटनकोमार नचल्यो॥अर्जुनधनकवानलैदोरे॥तांम्रधुजआवतइनमोरे॥१५॥
दोहा॥ मणीतांम्रधुजसेनसवःकरनचलेसंग्राम॥महावाहुन वआनिकैःरोकेहैतिहिठाम॥१६॥इतिश्रीमहाभारथेअसमेदके पर्ववर्नने जेमुनिजनमेजयसंवादेअर्जुनआगमनोनामइक तालीसमोध्याय॥४१॥ ॥जैमुनियोवाच॥दोहा॥जैमुनिरिषिज एकहतहैःसुनऊराजपरवीन॥तांम्रधुजअर्जुनतहांःवहुरिआय रुझकीन॥१॥चोपई॥अर्जुनएकवानलैमारे॥तातेतांम्रधुजलैमारे॥ पांचवानलेकेरथतोस्यो॥लैस्वारथीअोरथदोस्यो॥२॥तांम्रधुज

209

जै॰ अस्व॰
१०५
210

दुजेरथचढे॥ सौ आय अर्जुनसौंभिडे॥ पांचवानकरिकैं रथकाटे
अर्जुनवहुरि पंचसर छाटे॥३॥ तांम्रध्वज रथ अर्जुनतोर्‍यो॥ तांम्र
ध्वांनि चक्रचटिदोर्‍यो॥ धायधनंजयकैंछिगगयो॥ अर्जुनकौमार
ततहाभयो॥४॥ अर्जुनमुरछितहोयकैंगिरे॥ होय अचेतभूमिमै परे॥
श्रीकृस्नसमीपषडे है आगे॥ फिरि अर्जुनमुरछासौंजागे॥५॥ तब
हीपांचवानलेमारे॥ उठि अर्जुनतांम्रधुजमारे॥ तांम्रधुजमुरछाज
बपाई॥ तबहीजगेवरनहिलाई॥६॥ तीनबांनउठिकैतबरोरे॥ बांन
नकरिअर्जुनरथतोरे॥ उड्यो अरथवाननकोमार्‍यो॥ द्वादसकोस
दछिदिसडार्‍यो॥७॥ अर्जुनकोरथऐसौमार्‍यो॥ बांनतेजआकास
उछार्‍यो॥ पहरएकआकासउडानों॥ मासकाजयौंउडतसिचानों॥
८॥ दोउजोधऐसोजुधभयो॥ वरनेकौंनजाततनहिकह्यो॥ नभतेअ

रथ हांकि नवदीयो ॥ तव श्रीकृष्ण फेलि कै लीयो ॥ ९ ॥ तांम्रधुजोवाच 211
अव तुम कहा अरथ कों फेलौ ॥ ऐसे ष्याल कहा प्रभु षेलौ ॥ कहा चक्र
फेलौ जदुराई ॥ हम सों क्रुरुक करौ किन आई ॥ १० ॥ तव श्री कृष्ण बात य
ह कीन्ही ॥ सुनत हि गदा मूड मैं दीन्ही ॥ गोविंद गदा मूड मै धारी ॥ छाती
फाटि पर्यो तिहि बारी ॥ ११ ॥ तव श्रीकृष्ण ध्यान धरि बैठौ ॥ अर्जुन कौ
बान न हिउ बैठौ ॥ तांम्रधुज मुरछा सो जागे ॥ वहुरि जाय अर्जुन सो लागे ॥
१२ ॥ तब वे कृष्ण अर्जुन सौं कही ॥ वडे जोध तांम्रधुज सही ॥ इन हि तुम्हा
री सैन संघारी ॥ अरु इन फेली गदा हमारी ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ बात कहत हरि
ए हः ॥ तव लग धायो तांम्रधुज ॥ तव ही काटी जेह ॥ अर्जुन के धनकी तहां
१४ ॥ तांम्रधुजोवाच ॥ इनके सदा सहाय ॥ कहन लगे जो तांम्रधुज ॥ अर्जु
न के रथि जाय ॥ होहु कौन अव स्वारथी ॥ १५ ॥ तुम तौ हौ जदुराय ॥ अर

जै॰ऽस्व॰
१०६
212

पंडवनकेसदासहाय॥ अबकिनहोकुस्वारथीआय॥ अर्जुनकौरथहांकौजाय॥१६॥ तबश्रीकृस्नहांकिरथऐसो॥ सफिनपवैसोहोतहैकैसो॥ ऐसोजुधभयोभयजांप्यो॥ सप्तपतालसेसहूकांप्यो॥१७॥ दोहा॥ महाघोरसंमरभयो॥ कंपेपोहमिपनाल॥ अरअबआगेकहतहों॥ सोसुनिएभूपाल॥१८॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेदकेपर्वबरननेजैमुनिजनमेजयसंबादे अनुजजुधवरनेनोनामवयालीसमोध्याय॥४२॥ ॥चौपई॥ तबयहकथाकहतरिषराय॥ जैमुनिराजासोंसमझाय॥ सुवनहोयकेऐसेकही॥ तुमतौमेरीसेनादही॥१॥ भलीकरीमोइहवनिआई॥ अबहमसोंकिनकुरुकराई॥ अबलौंहमतुमकोंनहिदेषे॥ सोअबहमनीकेकरिपेषे॥२॥ इतीबातकहिकेललकारे॥ धनकबांनरोडेकरधारे॥ तबदौरेहैश्रीजदुनाथा॥ करतसमरपकरेतिनहाथा॥३॥ तब

213

तांम्रधुज नअ सिधायो॥ दोउ घोरा लै घरि आयो॥ जाय पिता सों यों कह
दीनो॥ अहो पिता हम तौ यह कीनो॥४॥ हम पंडवन कौ पकस्यौ बाजा॥ ब
च्छा छ्यो अस मेदा का जा॥ रछ्या कौं श्रीकृस्न सिधाए॥ अर्जुन संगि जो धा
व है आए॥५॥ अर्जुन के जोधा सब मारे॥ जो आए व्रन के संगि सारे॥ घोरा
सावकरन गहि आन्यों॥ अब कौ जै अपनौं मन मान्यों॥६॥ मयूरधुजोवाच
एहो पुत्र बाज तुम लीयो॥ बडो अकारज मेरो कीयो॥ तुम व्रन कौ घोरा गहि
आन्यौं॥ औरु कछु मन मे नहि जान्यों॥७॥ दोहा॥ तुम मति जानौं तांम्रधुज:
मे मारे यहि काल॥ व्रन कछु कीयो अम सों: रछ्यावंत गोपाल॥८॥ अव तुम
मेरे घर ते निकसो॥ वोले पिता पुत्र अव व कसौ॥ तुम तौ वंस अग्नि ठलाई॥
बाहि बंबल सल निपजाई॥९॥ तुलसी का टिकियो अपराध॥ ताते पातिग
व यो अगाध॥ कैसे वचन सकल निसआषे॥ सुत सों देह कछु नहि राषे॥१०॥

जै॰अ॰ तब अर्जुन मुरछा सौं जागे। बहोरि कृस्न सौं रहन लागे। जसी कृस्न वा
१०७ अ कहां गयो। असे सो कुरम इह दिन भयो॥११ सोरठा। भयो समर दिन रैनि:
214 सत्त बहोरि बरु तहां। कहे कृस्न तब बैन। रतनपुरी ह्यां राग गयो॥१२॥ चौ
पई॥ मयूरधुज ताके है राजा। गयो तुम्हारौ तिनकै बाजा। रतनपुरी चले
वे की आषी। सकल सेनि हरि का ही राषी॥१३॥ सेना तौ सब कहां हारहीं॥ नि
कट जाए अर्जुन सौं कही। बालक रूप धनंजय धारौ। वृद्ध विप्र बप धरौ
हमारौ॥१४॥ तब अर्जुन बालक बप भए। चले कृस्न अपने संग लए। वृध
विप्र आपन हरि भए। ऐसी भांति नगर मै गए॥१५॥ राजा को सत देषन धाए
ए सो पापौ रे नगर मै आए। सकल नगर के नान्हे मोटे। त्रिया पुरष वृद्ध अरु
छोटे॥१६॥ सबै कृस्न को करि है ध्याना। जन्म कर्म गुन सकल बषांना॥ त
हां गए जहां कुत्तेनु बाला। मयूरधुज बैठ जगि साला॥१७॥ तहां दोउ ज

नआवनकीयो। आसीरवादराजकोदयो। राजाउठिकैकियोप्रनामा

कहीविप्रआएकिहिकामा॥१८॥ दोहा॥ कुंतेमयरथ्थुजजगोमेःदईआ

सिकाजाय। राजाअररानीदोउं उठिकरिलागेपाय॥१९॥ इतिश्रीमहा

भारथेअस्मेदकेपर्ववर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेश्रीछस्नगा

पवित्रनोनामनेयालीसमोध्याय॥४९॥ ॥जैमुनियोवाच॥ चौपई।

अवतुमकथासुनुहोराजा। गएएकसमसतदेषनकाजा। वनतौजायआ

सिकादीनी। रांनीराजाडंडवतकीनी।१। औरकहीमागोसोकहिए। म

नईछ्यासोहमसोंलहिए। वोलेविप्रकहतहूराजा। कहांजाऊंआयेक

हिकाजा।२। ब्राह्मणोवाच॥ विप्रएकनरसरमानामा। तिनमोंएक

वन्योंममकांमा। वनमोसुतकौकंन्यादीनी। सुस्तिवाचनकरिकैहम

लीनी।३। चल्योजातव्याहनकैकाजा। घेसोसंघआयमोहिराजा॥

215

जै०स्व.
१०८
216

वहोतसंघसोंविनतीकरी॥ औरदेहममस्ररे॥ री॥४॥ मेंजुकहीव
नपतिमृगराजा॥ विगरैतस्रवेहमारोकाजा॥ मोहिषामममुनं
कैंख्याडे॥ एकपुत्रमेरोलनवाछो॥५॥ वकुरिसंघमोसोंकहरीनां॥
तेरोवपनपरीकरिछीनां॥ वकुरिवाघमोसोंयोंकही॥ तेरोपुत्रववै
योंसही॥६॥ आयोअंगराजकोलेडु॥ तोलगतेरोपुत्रनदेडु॥ मोसों
राजवाघयोंकही॥ तुमराजाघरजावोसही॥७॥ सोरठा॥ कहीवि
प्रतुमजाडु॥ राजावडोधर्मातमा॥ दानासीलसुभाव॥ जोमागतसो
देतहै॥८॥ चौपई॥ ताते मोकोंसंघपठायो॥ ऐसेजानिराजढिगआ
यो॥ नृपदधीचआयोअंगदीयो॥ तोसवहीजगमेजसलीयो॥९॥
करनवचनदीयोतिहिकाला॥ अर्धअंगअम्रवदेउभुवाला॥ मेंदुर्व
लअवहीदुषपायो॥ तातेतुमपैजाचनआयो॥१०॥ ऐसेवेआह

नकेवाला॥श्रीरामचंद्रज्ञाएवहकाला॥अवतुममेरोपुत्रजिवा

वो॥पुत्रदानदेमोहिपठावो॥११॥राजोवाच॥सोरठा॥कहोराज

द्विजदेव॥स्वातिहोयवैजौनकुं॥करिहौउचितसेव॥करिसंतुष्टपठा

यहूं॥१२॥चौ०॥स्वांतिहोयवैठद्विजदेवा॥कहोसकरिहौंउचितसेवा॥

तुमकौंकरिसंतुष्टपठाउं॥अवमेअपनोंपुत्रवुलाउं॥१३॥यहकहिअप

नोंपुत्रवुलायो॥नरहीपुत्रराजछिगआयो॥राजाराजपुत्रकौंदीयो॥क

रिअस्नानदांनवहुकीयो॥१४॥अरनहांदोयषंभगाठगाए॥अरमंत्री

सवमित्रवुलाए॥राजातहांकरौतमगायो॥जगिविषेमंठपमेआयो

१५॥कहीजुमेरोयहसरीरा॥ताकोंविहरिकरौदोयचीरा॥यानिमित्त

सिरकरवतधरिहूं॥तातैंदिजसंतुष्टहिकरिहूं॥१६॥आधोअंगविप्र

कोंदीजो॥विप्रवहोतसंतुष्टहिकीजो॥याजगिमेआएसवकोई॥दे

घोसकलनमासौसोर्‍ ॥१७॥ अ[illegible]दिन आगनौंना [illegible]गावे ॥ अरसबलो
गतमासै आवै ॥ अरतेप्रेहहमारेसोई ॥ तेहमको[illegible] जोमतिकोई ॥१८॥
दोहा ॥ याजगिमेममभित्रहै: मतिकोउबरजोबीर ॥ मैयाद्विजकौं
देतहौ: अपनोंअर्धसरीर ॥१९॥ इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेप
वेवनेनेजैमुनिजनमेजयसंवादेदानवर्ननेनामचमालीस
मोध्यायः ॥४४॥ [illegible] ॥ दोहा ॥ यहीकथाअवकहूंनहो
सुनहुंराजदैकान ॥ बचनराजकेसुननहीः कांपेगुरपरधांन ॥१॥ चौ
पई ॥ ऐसेबचनसुनेजवकाना ॥ कंपेप्रोहितअरपरधाना ॥ कहीकों
नद्विजधर्मसिखायो ॥ ऐसौविप्रकहांतेंआयो ॥२॥ सोरठा ॥ ज्योंबलि
केजगिमाहि ॥ बांमनवपधार्योजतो ॥ कहीलिइकहूंनाहि ॥ जैसेंय
हआयोयहां ॥३॥ चौपई ॥ राजाआगेंदाननकरीयो ॥ जगिमंडपमें

गं बनकी को। [illegible] के गा वष घोर ॥ लै म [illegible] कपर करवत डारे ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ धरिकै करवत सीस ॥ कही जु आधे अंगमैं ॥ जगनायक जगदीस ॥ तातै मै संतुष्ट हो ॥ ५ ॥ चौ० ॥ आधौ अंग स्यघ कौ दीजे ॥ विप्र आय नैं वालक लीजे ॥ तवै वा ढही निकट वुलाए ॥ पांनि जोरि रिजा ठिग आए ॥ ६ ॥ दोहा ॥ राजा वढई न सौं कही ॥ जो जोरावर होय ॥ सो लै करवत अं चियो ॥ [illegible] कोय [illegible] पई ॥ अरतु म सव ही ठाढे होई ॥ मम चिंता मति की ज्यो कोई ॥ तव राजा सिर करवत दयो ॥ हे हे कार सकल जगि भयो ॥ ७ ॥ तव रांनी कुमदावती आई ॥ वोली दिज सौं सुनो गुसांई ॥ अस्त्री कहियत है अरधंगी ॥ वेद समृत सव कहे त्र संगी ॥ ९ ॥ अहो गुसांई जी यह कीजै ॥ मो हि स्यंघ कौं सव ही दीजे ॥ व है री रिविप्र भाषो परसंगा ॥ त्रिया पुरष को वाउ संगा ॥ १० ॥ दोहा ॥

219

जै०अश्व०
११०
220

विप्रकह्योरानीसुनु । मैनकरौंकछुअपराध ॥ मोपैमाग्योराहिनु अंगराजकौ
साध ॥ ११ ॥ चौपई ॥ मयूरध्वजकौबेटाआयो ॥ आपविप्रकौवचनसुना
यो ॥ करोगुसाईकह्योहमारो ॥ मोहिस्यंघकेआगेडारो ॥ १२ ॥ पितापुत्र
अंतरकछूनांही ॥ कहीवेदसम्रतकेमाही ॥ तुमहूंविप्रवेदकेपढे ॥
मैकछुजानतबातमेरठे(?) ॥ १३ ॥ विप्रोवाच ॥ तुमतौंएकबरकहीसोसही ॥ पै
मोसौंस्यंघऔरविधिकही ॥ आगेअरधीलेकरिगैवे ॥ पीछैपुत्रकरौत-
हीपैचे(?) ॥ १४ ॥ ऐसैराजाकौअंगलावै ॥ काहूकेअसुपातनआवै ॥ नैननं
सौअसुपातनचलै ॥ तौलहुंतोरपुत्रसौमिलै ॥ १५ ॥ कुमदावतीउवाच ॥
रांनीकहीहीएहरिकरिए ॥ राजाधर्महमोकरिए ॥ तबरांनीकरक
वतलीनी एकवोरबेटाकौदीनी ॥ १६ ॥ एककरिमिपुत्रएककरिदिसिरांनी
लेकरवतसिरऊपरआनी ॥ राजवांमचषिआंसूआयो ॥ तबैविप्रउठि

च सो छिसायो ॥१७॥ सोरठा ॥ कुमदावती सुनाय ॥ राजा सं ऐसे कही ॥ वह द्विज रूसे जाय ॥ कहै जु राजा रोय है ॥१८॥ चौ० ॥ कहै विप्र ऐसे दंत नीयो ॥ कौन काम है ताको दीयो ॥ ताता दान न रोयके देई ॥ कही जु ऐसो दान न लेई ॥१९॥ तब रानी द्विज पै उठि भागी ॥ पांनि जोरि कै बातन लागी ॥ राजन रोवै सुन कुप्रसंगा ॥ रोवत है द्विज वांयें अंगा ॥२०॥ अंग दाहिनें नाहरषाई ॥ वांयें अंग अविरथा जाई ॥ वांयें अंग काम नहि कोई ॥ तातें है द्विज अंग नहीं रोई ॥२१॥ एक देह मैं है दो यभेद ॥ तातें अंग करत है खेद ॥ तातें हो द्विज राजन रोवै ॥ वांयें अंग नैन भरि धोवै ॥२२॥ ऐसी द्विज सौं बात बषांनी ॥ लगे पाप राजा अरु रानी ॥ तब वह हरि चरनन की भक्ति कीनी ॥ और सबही तन सत सरधा जानी ॥२३॥ तब वह हरि त्रिय पनौं दरसन दीयो ॥ भाव भक्ति करि आदर कीयो ॥ कही सदा तु मम भक्ति हि करो ॥ सकल का

जै॰उ॰प॰
१११
222

जराजाकेसरौ॥२४॥भक्ति जानि मैं देषन आयो॥तुम कौं देषि महा सुष
पायो॥ऐसे वचन राजकौ दए॥नासों रूप चत्रभुज भए॥२५॥सोरठा
दरसदैन जदुराय॥संष चक्र गदा पद्म धरि॥बहौरि कही सुषपाय॥नृ
पैराजराजाकौ॥२६॥रामोवाच॥चौ०॥बहौरी राजन वकरन वषानों॥
बोले अर्जुं श्रीभगवानं॥मेरो जनमु सुफल अब भयो॥तुम जु आयमो
हि दरसन दयो॥२७॥जोगी जुगति समाधि लगावैं॥ते दरसन जोगिया
नहि पावैं॥ते सदरूप दरस मोहि दयो॥मेरो जनम सुफल सब भयो॥२८॥
नवैराजपरकंमा दीनी॥बहौरि लसकी अस्तुति कीनी॥हो जगनाथ
कथ्र हो अनंत॥पुंडरीकाक्ष अज भगवंत॥२९॥भक्ति वछल मरूनके
संग॥सदा रहो भक्तन के संग॥श्रीधर नीधर दीनानाथ॥भव संमंद्र मे
पकरो हाथ॥३०॥ऐसे नाम नि अस्तुति कीनी॥अरक क्षु अपनी संप

तिलोनी॥ सोसवदल दिके आगेधरी॥ रानीराजबीनतीकरी॥ ३१॥ असीपु

रषमोदमनवांछो॥ गएकहूकेआगेठाढे॥ तवश्रीकलसंपदाल

ई॥ वहोरिवनलीसनकोदई॥ ३२॥ काहिजभक्तजोनिकेकस्यो॥ स

दाराजवैकुंठहिवस्यो॥ औरकहीजितिभक्तिकरावो॥ भक्तिपंथकरिमो

हीपावो॥ ३३॥ गोलेकलसधनंजयग्राए॥ भक्तिलमासोतोहिदिखाए॥

३४॥ दोहा॥ तवदेउधोरालिए॥ अरसंगिलिएनरेस॥ चलेराजआगें

गए॥ बीरब्रह्मकेदेस॥ ३५॥ इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्बवनेने

जेमुनिजनमेजयसंवादेरतनपुरजननोनामपेतालीसमोध्याय॥

४५॥ ॥जैमुनियोवाच॥ दोहा॥ होजनमेजयराजा॥ सुनहुकथाअव

कहतहो॥ गएतहांचलिआज॥ बीरब्रह्मकेदेसमे॥ १॥ चोपई॥ घोरागए

बीरकेदेसा॥ सोअवगाथासुनहुनरेसा॥ राजाराजनीतिसवराषै॥ ता

जै॰ स्व॰
११२
224

कीपूजा हरन हि मागे ॥ २ ॥ तबै नग्र के लोग रान जाम ॥ कही राज मैं वस
म जाय ॥ बोले जाय सुनहु महाराज ॥ काहु के राय आए वाज ॥ ३ ॥ अर्जु
न आए है रथ वारे ॥ श्रीमसंगि श्रीकृस्न पधारे ॥ अर्जुन संगि सेन बहु
आई ॥ वन कै श्रीगोविंद सहाई ॥ ४ ॥ तब वे आय परस्पर मैलै ॥ तब श्री
कृस्न सहाई कै ॥ राजा अपनै पुत्र बुलाए ॥ तब ही नहां पुत्र चलि आ
ए ॥ ५ ॥ वीरब्रम [illegible] अहो पुत्र घोर हम आनु ॥ सेना देषि संक जि
न मानुं ॥ सुनत हि पुत्र चले सं आप ॥ राजा के कीनों पर नाम ॥ ६ ॥ मार०
धरमातम ब्रतसील ॥ नाम सुनहु सब पुत्र के ॥ सुचिल: सुरस: अस्लील:
कुवल: सोम: संमर चले ॥ ७ ॥ चौपई ॥ पांचों पुत्र राज के मिले ॥ आपनै
अपनै रथ चढि चले ॥ तब वन आय वाज गहलीनें ॥ तो नहि वाज फुरु
व हो कीनै ॥ ८ ॥ तब ही वाज जाय वन गहो ॥ फुरु वीर ब्रंमा सो भयो ॥

तब अह देष्यौ जुध [illegible] ॥ धर्मराय ग्रायौ तत काल ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ ध
र्मराज तिहि काल ॥ जुध करन कौं ग्राइयौ ॥ देष्यौ जुझ हवाल ॥ भए भीर
तन मुसकी ॥ १० ॥ चौपई ॥ देष्यौ सुसर भीर जब ग्रांहि ॥ राजा धर्मना
म है ताहि ॥ ग्रैसौ जुझ कीयौ तिहि वारा ॥ सर्व सैन कौ भयौ संघारा ॥ ११ ॥
तब अर्जुन पूछे जदुराई ॥ हो श्री कृस्न कौन यह आई ॥ अज्ञ गुसांई सेन
ह मारी ॥ ह [illegible] सबै संघारी ॥ १२ ॥ [illegible]वाच ॥ हो अर्जुन
यह जम [illegible]राई ॥ सुसर वोर यह जुध कराई ॥ सुसर भीर यह करत लराई
हो अर्जुन देषो जमराई ॥ १३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अहो गुसांई जु यह रा
जा ॥ अर जम ब्याह भयौ किह काजा ॥ मो कौं अब नीके समझावौ ॥ मो
मन के संदेह मिटावौ ॥ १४ ॥ श्रीकृस्न उवाच ॥ अर्जुन सुन तो हि सम
झाउं ॥ जम ब्याहन की कथा सुनाउं ॥ या राजा के कंन्या एक ॥ अपने हि जी

जै०उ०ष०
११३
226

यकीयो...क ॥१५॥ सुंदर सुलभ सील कौ धामा । ... भई मालती नामा ।
तिन ब्याहन की बात चलाई । सुनि मालती पिता ढिग आई ॥ १६ ॥ कही
मालती सुनह एक ताता । करत मोहि ब्याहन की बाता । तातै एक कह्यो
सुनि लीजे । मानव सौं मम ब्याहन कीजे ॥ १७ ॥ काहे तै नव मानव मरै । तन
तवन जाय अग्नि मैं जरै । तन नव ह मनि षम रैसो कहिए । ताके संगि ज
स्यौ ह्व रहिए ॥ १८ ॥ तहां अग्नि सौं होय ... लाप । तासौं लगत मोहि तव
पाप । काहे तै सो तुम सौं आषूं । मेरो सकल मनोरथ राषूं ॥ १९ ॥ अग्नि पु
रुष जानत सब कोई । तासौं मेरो मेरा होई । तब मे पुरुष समरौं मेदूं । स्वै
सो दोष जानि कै मेहूं ॥ २० ॥ दोहा ॥ तातै तुम मोहि कहत हौ । धर्मराय
कौं देहु । मानव मैं नहि ब्याहि हौ । मो मन वंछित एहु ॥ २१ ॥ चौपई ॥
जो मेक छुकरे है धर्मा । बरत और कोइ सुभ कर्मा । ताको फल वंछत हैं

सोई॥ धर्मरायमेसेवकहोई॥२२॥ दोहा॥ यहवांछामोमनरहै औरनः(227)
आवैकोय॥ धर्मराजकहिएअमरः सोमेरोवरहोय॥२३॥ इतिश्रीमहाभा
रथेअसमेदकेपर्वबर्नैनजैमुनिजनमेजयसंबादेमालतीवाकिनोना
मछीयालीसमोध्यायः॥४६॥ ॥चौपई॥ फिरियहकथानृपत्तिसोभाषै
जैमुनिजनमेजयसोंआषै॥ वहीतबचेकबुधिकेऐनां॥ सुनैराजपु
त्रीकेवैयना॥१॥ वीरब्रह्माउवाच॥ राजाकहीभलेतुमचीन्ही॥ मैंतो
हिधर्मराजकोदीन्ही॥ वीरब्रंमनमनदैकेआप॥ धर्मरायकोकरिकेजा
प॥२॥ धर्मरायतवहीसुखपायो॥ योंधर्मेनिकटतेनारदआयो॥ तवनार
दअंतेहपुरजाय॥ राजाकोएछीतवआय॥३॥ नारदउवाच॥ योंनध
रतअपनेमनमांही॥ जापकोनकोकरतगुसांही॥ हमसमीपआएकिन
वोलो॥ अपनेमनअंतरहीबोलो॥४॥ राजोवाच॥ मोमनकीसवजान

नग्राप॥ करिहौं धर्मराय कौ जाप॥ अरगैसा वं छै॰ ॰ मांहिं वनकों कं
नारीयो चाहै॥ ५॥ सो तुम जाय कहौ रिषदेव॥ सव विरतंत सुनावौ भे
व॥ इतनी सुनत देवरिषि गए॥ सव व्रिरतंत धर्मसौं कहे॥ ६॥ नारदोवाच॥
राज वडौ धर्मोत्तम कहिए॥ कंन्यादेइ धर्म किन लहिए॥ धर्म कहीना
रदसौं भाषि॥ व्याहन चले मास सवै साष॥ ७॥ पषउजियारे व्याहन ग्र
ऊं॥ तुम राजा सुं जाय सुनाऊं॥ तव नारद राजा सौं कही॥ व्याहन धर्म
आय है सही॥ ८॥ वी॰ र ब्रह्म राजा मन धारी॥ करत व्याह कौ सामा सा
री॥ वैसाष न जम व्याहन आए॥ तव राजा मैंडे पैछाए॥ ९॥ सोरठा॥
अव जम व्याहन जात॥ वीर ब्रह्म के नग्र मे॥ अर तहां चलीव रात॥
सो जिन कौ अव कहत हौ॥ १०॥ कंदपधरी॥ चलि है धर्म व्याहन व
रात॥ चलि वीर ब्रह्म के नग्र जात॥ कछु चले है रोजमव रोगराज॥

आपने आपने सब करत साज ॥११॥ तहां चलत तिजारी कातरेय ॥ वे
लो चतुरथः पंचम सुसेव ॥ चलि प्रथम जुरी परि पंडुरोग ॥ चलि र
हरन हरवा करि संजोग ॥ १२ ॥ चलि जलंधर भगंदर अती सार ॥ हच
की अरु षासी सास लार ॥ चलि कुष्ट कुरकरी नेत्र रोग ॥ चले कमल ष
ई व हो करन भोग ॥ १३ ॥ चलि वात रोग सब कैम फारि ॥ ते वरन भे
द करि असी च्यारि ॥ चलि पित्त सरोषम हरसि लार ॥ तेरह दोस वह
षट् प्रकार ॥ १४ ॥ वहां चले रोग वडे वडे अपार ॥ कि ते संगि लीने और
लार ॥ तब कही सबन सौं धर्म नृप ॥ तुम धरो सकल मानव सरूप ॥ १५ ॥
अरु नीके नीके वस्त्र लाय ॥ तुम चलहु संगि साजें बनाय ॥ अरु कह
न धर्म सुनि सकल भेव ॥ तुम करत हमारी सकल सेव ॥ १६ ॥ मे कही स
कल तुम सो सुनाय ॥ तुम करियो वन की सेव जाय ॥ अरु कही सबन

कौं मोरग्यान॥ जो करनदे समै जायग्यान॥ १७॥ चौपई॥ जो कोई विप्रन
कौं मानै॥ ताकौं मतिवापो कऊं छांनै॥ अर जो [illegible] दांन कोउ देत॥ घ
मैं निमित्त तुम्हारे हेत॥ १८॥ अर जो तीरथ व्रत पराय॥ तौं कं तुम व्या
पो मति जाय॥ अर जो तुला चढत है सोई॥ तिनकौं तुम व्यापो जिन
कोई॥ १९॥ अर जो कोई विप्र कौं मारै॥ ताके संग्रहनी होय जारै॥ बोलत
कंठ सदा जो कोई॥ ताकै मुष [illegible] गंधी होई॥ २०॥ नर वेकौं भोजन नहि
देवै॥ होय अजुष जासमुष सेवै॥ अर जे हरि की कथा न सुनै॥ ताकौं का
न रोग होय हनै॥ २१॥ अर जे पर त्रिया कौं पेषै॥ बोदीन जरि जाय कडु दे
षे॥ ताके नेत्र माहि तुम परो॥ नेत्र सदा बहवो ही करो॥ २२॥ अर जो दान
देत कोउ वरजै॥ ताके गंडमाल होय के गरजै॥ हरि मंदर कोउ नाही
आवत॥ हरि दरसन कबहू नहि पावत॥ २३॥ ताके नैन तिमर होइ

231

हो॥ जाकौ नेत्र रो है दहो॥ परमेश्वरकी भक्ति न जानै॥ ते ये सकल रो
ग कौं मानै॥ २४॥ [illegible] रोगन समझाय॥ [illegible] सी सीष देतन तहां जाय
अर जो कोउ करि है धर्मो॥ धर्म हेत करि है सुभ कर्मो॥ २५॥ अरु अतीत
से बाँधे रहै॥ ताकौ तुम व्यापो हम कहै॥ अर जो देत न गउ कोदां ना॥ ब
है विप्रन कौ रा षत माना॥ २६॥ अरजो हे म दांन कौ कीए॥ प्रसन न हो
त विप्रन के दीए॥ विप्र जिम [illegible] रहै॥ [illegible] रथ जाय तहां म
न परसै॥ २७॥ प्रसंन होय इन वातन सोई॥ तिन कौ तुम व्यापौ मति
कोई॥ ऐसे धर्मराय कह दीनी॥ सब रोगन मिलि अग्या लीनी॥ २८॥
राजा धर्मराय यों कही॥ सो मैं भाषी तुम सौं यही॥ जो कोई धर्मराज
की वानी॥ अर सब रोगन की यह गाता॥ २९॥ सुनै सुनावै जो जन सोई॥
तिन कौं तुम व्यापो मति कोई॥ ऐसे कहत चले समझाय॥ धर्मराय ए

व्याहन जाय ॥३०॥ दोहा ॥ चले धर्म व्याहन जहां वीर ब्रह्म के गेह ॥ नग्र सुरस्यारा नग्र है जहां होत परवेस ॥३१॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेदके पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे धर्मराय व्याको नाम सैतालीसमो ध्याय: ॥४७॥ ॥जैमुनि योवाच॥ सोरठा ॥ जनमेजय सुनि वात ॥ धर्मराय व्याहन चले ॥ ऐसी लिये वरात ॥ नग्र सुरस्ता के गए ॥१॥ चौपई ॥ नग्र सुरस्ता मंडप छाए ॥ धर्मराय नहां व्याहन आए ॥ भयो व्याह राजा सुष पायो ॥ रिष नारद जब व्याह करायो ॥२॥ नारद कंव ऊ दछिना दई ॥ स्वस्ति वचन कहि के वन लई ॥ धर्मराय राजा सौं कही ॥ राजा वात कहत हौं सही ॥३॥ थोरे दिन मैं मीच तुम्हारी ॥ तुम जिन मानहु रूप हमारी ॥ ताते तुम हम सौं कछु लहिए ॥ वर मांगो नृप हम सौं कहिए ॥४॥ तबै वीरब्रह्म यों कही ॥ हम तौ तुम को कन्या दई ॥ सोह

मतु मसों कै सैम ॥ तुम सौं लयें दोष वहो लागै ॥५॥ अरजमातको लेनजकोई ॥ सदा नर्क भुगतत है सोई ॥ त्यै तु म्हारी गति नाही ॥ यह जानौं अपने मन मांही ॥६॥ तव जम कहीसुनत हो राजा ॥ ऐनो सव मानवके काजा ॥ हम हैं देव सकल हमे जानें ॥ हमकौं समृत वेद वषानै ॥७॥ हम सो लिएं दोष न हि लागै ॥ राजा कहीकहन हौं तुमसों ॥ जो तुम प्रसन्न भए हो हमसों ॥८॥ सोरठा ॥ जो अतिकरि हो ग्रेह ॥ तो कीजे जम राज यह ॥ तव छूटै मम देह ॥ ता दिन कल्ल मिलाई ए ॥९॥ चौपई ॥ तव मम देह छूटि धर लेटै ॥ ता दिन हम अरु कल्लहि भेटै ॥ अरजम सौं भेटा न हि होई ॥ यह वर मांगौं और न कोई ॥१०॥ तव जमु कही भली सो करिहै ॥ तुम हि अकेले ह मन ही धरि है ॥ ऐसे वचन कहे जमु राई ॥ सुरछा डिगृं तन न हि जाई ॥११॥ श्रीकल्लोवाच ॥ सो० ॥

233

जै॰ग्व॰
११७
234

अर्जुनयह जमग्राहि॥ तुम सखो रनक्र रत है॥ सबको ढीहै जहि॥ फोज यह मारी देषिहु नि॥ १२ ॥चौपई॥ ऐसे अर्जुन सौ रमनावै॥ ...छे की फोज वता वै॥ पीछे वीर डंडक आवत॥ जापी छे सेना वही धाव त॥ १३॥ अव तुम सावधान किन होई॥ अपनी ठौर सजो सवकोई वडे जोध राजा सह कहिए॥ ताते ...धान कै रहिए॥ १४॥ दोहा तव लग वाजे होत है॥ तव लग रा... आय॥ ... अर्जुन सौ कहत है॥ अव किन जुध कराय॥ १५॥ सोरठा॥ वीर ... होअर्जु न संग्रामि॥ मै जीते ... धाव होन॥ अव हू कै इहि काम॥ अव मै तुम कौं जीति हौं॥ १६॥ दोहा॥ वहीरि कही श्रीकम ... सावधान तुम होउ॥ मै आयो समर समै॥ कौन गहाते लोह॥ १७॥ चौपई॥ यो कहि नृपको मन मकरी धोरे॥ सात बान अर्जुन के मारे॥ सायक सात

मेनपैसारे ॥ वडे वडे जोधा सव मारे ॥ १८ ॥ सोरठा ॥ न्रपसो के सत वा
न ॥ मयूरधुज मारे महां ॥ वडे वडे जोधान ॥ वीरब्रम मारत भयो
१९ ॥ चौपई ॥ मयूरधुज राजा है भारि ॥ मारे सकल जोध सरसादि ॥
फिरि न्रपसो के वान हजारा ॥ ॥ २० ॥ श्रीकृस्न तहां
सकुतन नहि परे ॥ वीरब्रम जैसो जुध करे ॥ वीरब्रम जे ते सर सारे ॥ अ
र्जुन काटि सकल तोडारे ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ कहै कृस्न समझाय ॥ अर्जुन
को जुध करत तहो ॥ एसे मर मै राय ॥ तुम्हारे मारे ना मरे ॥ २२ ॥ चौपई ॥
तव श्रीकृस्न कही हनवंता ॥ तुम सेजोध कौन उनमंता ॥ या राजा को
रथ अरु अव रूपटो ॥ अपने नाथ लंगूर हिलपटो ॥ २३ ॥ अरलै जाय स
मंद्र हि डारो ॥ सो हनवंत यह काज तुम्हारो ॥ तव हनवंत पूछ लपटा
ई ॥ राजा को रथ लीयो मगाई ॥ २४ ॥ लपेटि लंगूर संधको चल्यो ॥

जै. स्व.
११८
236

सुरलोकआगेहूपठियो॥कहीवीरअभिमानव[illegible]सैं॥हनवंततुमेवूझि
एऐसैं॥२५॥हमकौंकहांलयेतुमजात॥ऐसीतुमेवरजिएवात॥
जोतुमजोधावडेकहादो॥तौकिनहमसौंजुधकरावो॥२६॥वडे
जोधताठेकिनरहो॥गदाएकमेरीतुमसहो॥ताठेभएवीरतवसारे
तवहनवंतगदासोमारे॥२७॥तवहनवंतताठेथहराई॥आगे
कछूचल्योनहिजाई॥तुवदौरेश्रीहनूमतगरि॥लातवीरअभिमा
केमारी॥२८॥तवैवीरअभिमानगिरिपरे॥कृष्णचरनहिरदेमेधरे॥व
हुरिउठ्योनवहीततकाला॥परिपायनमेटेततकाला॥२९॥श्रीकृष्ण
देवकेपायनपर्यो॥कहीअनूमोकारिजसर्यो॥कहीह[illegible]तुमीच
हमारी॥सोअनुपदभेटतहोटारी॥३०॥मैजुतुम्हारेछीवतआय॥ताते
मोलगसकततनआय॥जैसेपदअनुभेटितुम्हारे॥सकलदोषमिटि

गए हमारे ॥ ३१ ॥ तब बोले श्रीकृष्ण गुपाला ॥ वर मांगो अब कछु नुवा
ला ॥ अंत्रया होय सु करो प्रकासा ॥ सो मांगो सो पुरवों आसा ॥ ३२ ॥ राजा क
ही कहा वर मांगो ॥ तुम्हारे चरन कवल अनुरागों ॥ तुम्हारे चरनमार
न मे आउं ॥ ऐसो वर कैसो कहां पांउं ॥ ३३ ॥ इन उपरांत ओर कहा मां
गे ॥ अर अब मागत हूं प्रभु आगे ॥ जो जन ऊपरि अति हित करिहो ॥
तो मम उरते कहूं न टरिहो ॥ ३४ ॥ अरु तुम अपनी भक्ति हि देहु ॥ अ
रमो कों अपनों करि लेहु ॥ सदा तुम्हारो हर मन कीजे ॥ प्रभु यह मांगे
हों सो दीजे ॥ ३५ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ तब श्रीकृष्ण कहत हो राजा ॥ म
म भक्तन के करिहों काजा ॥ मम भक्तन उरते न हि टरिहों ॥ जो मम
भक्त कहै सो करिहों ॥ ३६ ॥ पर मम भक्त मेरे अधिकारी ॥ मैं भी वुनको
अग्याकारी ॥ मैं भक्तन वसि रहूं सदा ही ॥ भक्त द्रोह सो मारो जाही ॥ ३७ ॥

जै॰स्व॰ इतनीबातकहतहरिआए॥ राजासुकियोप्रनाम॥ दैकरराजासं
११९ मिले॥ बहुरिसुरत्ननग्रकोधाम॥ ३८॥ राजानग्रलिवायैं॥ नवश्री
238 कृस्नग्रमेंआए॥ सातदिनानग्रमेराषे॥ राजादीनवचनवहुभा
षे॥ ३९॥ अरजनकीबहुविनतीकीनी॥ राजासातसुंदरीदीनी॥ एक
हजारअस्वदेसाथी॥ दोइहजारमतहाथी॥ ४०॥ दीएतीनसहस्र
तुरंगा॥ चलिहैराजबाजकेसंगा॥ अैसोभक्तिप्रतापवषानै॥ जेहरि
भक्तिहृदैमेंआनै॥ ४१॥ दोहा॥ अैसोभक्तिप्रतापहै॥ सुनहुराजप्र
वीन॥ भक्तिहेतहरिहैंसदाभक्तनसोंआधीन॥ ४२॥ इतिश्रीमहा
भारथेअसमेदकेपर्वववनेनेजैमुनिजनमेजयसंवादेराजावीर
ब्रंमामिलापनोनामअठतालीसमोध्यायः॥ ४८॥ ॥ दोहा॥
फिरिजैमुनिरिषिकहतहे॥ सुनिजनमेजयराज॥ नग्रसुरत्नाछा

239

डिकै घरे कौन लिप्यवाज ॥१॥ चौपई ॥ कोई वाज चलत है गैसे ॥ मानु वाम्व हत है जैसे ॥ कै नलपुर आए वे वाजा ॥ जाके चंद्रहास है राजा ॥२॥ अर्जुन षोज करत हां जाई ॥ अरु सब सेना पीछे धाई ॥ अर्जुन वाज सकल दिस देषे ॥ नारद मुनि आवत तहां पेषे ॥३॥ सोरठा ॥ करि दंडवत प्रनाम ॥ नारद कौ पूछन लगे ॥ अहो गुसांई राम ॥ वाज कहो देषे तुमे ॥४॥ चौपई ॥ करि प्रनाम व्रुत है सारे ॥ तुम कहुं देषे वाज हमारे ॥ देषे है तौ देहु वताई ॥ कहां गए सो कहो गुसांई ॥५॥ नारद उवाच ॥ सोरठा ॥ तव नारद कह दीन ॥ कोनलपुर घोरा गए ॥ वहो व षान प्रवीन ॥ चंद्रहास ताके न्रपति ॥६॥ चौपई ॥ तव नारद जू ऐसे भाषी ॥ फिरि अर्जुन व्रुत है साषी ॥ चंद्रहास रिष कहो कहां के ॥ सकल वतावो भेव जहां के ॥ फिरि वोले नारद रिषि देवा ॥ अर्जु

जै॰च॰
१२०
240

नतोहिसुनाउँमेवा॥कौंतलपुरकेराजाकहे॥जैसेराजचंद्रहैलहे॥८॥
अर्जुनकहीसुनौरिषराई॥बहुरिवातहीजेसमुझाई॥विधिपूरब
सोसवहीकहो॥मोमनसकलसंदेहनदहो॥९॥नारदउवाच॥
चंद्रहासमूलनमेभए॥पिताराजदेकैवनगए॥दएराजनृपवन
मैगए॥कितेदिवसआरन्यमेरहे॥१०॥तववनकीनुंजागअभ्यास॥
तज्योसरीरछाडिअभ्यास॥इहिप्रकारकेतेदिनवीते॥तहांग्रोरनृ
पचलेनचीते॥११॥देसग्रानवनराजनफेरी॥चंद्रहासकीनगरीघेरी॥
राजनकीसंक्यावहोमानी॥चंद्रहासलेभागीरानी॥१२॥दोहा॥भा
गीकोंतलपुरगईचंद्रहासलैगोद॥गयोराजभिषकभई॥तज्योसकल
मनमोह॥१३॥चौपई॥वदनमलीनहीनताभाषै॥घरघरकहेतकौ
नमोहिराषै॥ज्योंज्योंराजपाटसुधिग्रावत॥तासुषदुषहेहिवहोत

सनात्त ॥१४॥ ता दिन आनंद विषाद निमई ॥ कारि पतिसोक तहां मरि गई ॥ चंद्रहास तहां रहत अकेलो ॥ बिछुरो मात पुत्र को मेलो ॥१५॥ घरि घरि फिरत लग्यो वेहाला ॥ अति कोमल आवत नहि चाला ॥ ताके ग्रह हर जाय तठि होई ॥ दया करै देषत सव कोई ॥१६॥ सो पावै कौं भोजन देई ॥ चंद्रहास हाथ न सौं लेई ॥ ऐसे करत नगर मे रहे ॥ तव तहां वर्ष पांच के भए ॥१७॥ दोहा ॥ फोलनदार वान यकोः धृष्टवुधि सो नाम ॥ एक दिना नौं तेडु तेः द्विज रिषि अनु धाम ॥१८॥ तहां रिषी सु जीमन गए ॥ चंद्रहास जाय तठि भए ॥ चंद्रहास हू वन हि जिमायो ॥ देषि रिषिन सव ही हित लायो ॥१९॥ रिषि सव देषि सीस कर दीनं ॥ धृष्टवुधि कौं रछन कीनं ॥ काके पुत्र कहा है नामा ॥ मात पिता कौन ग्रह ठामा ॥२०॥ धृष्टवुधियोवाच ॥ ना जानिए कौन के वाला ॥ ऐसे व होत फिरत कंगाला ॥ तवै रिषिन सव

241

जै० स्व०
१२१
२५२

ऐसे भाषी। यह बालक हनी कैं राषी॥ २१॥ अडिल॥ कही रिषन यह बालक रे षो भाय है। इनतें तुम पुत्रन की रक्षा होय है। यामें चह रक्षा। षन सब ही राज रे॥ सकल सा जिहै राव तुम्हारे काज रे॥ २२॥ चौपई॥ यह कहि कीयो रिषन सवगवना। गए सकल अपने निज भवना॥ धृष्ट वुधि मन माहि विचारी॥ चंड्रहास मारन की धारी॥ २३॥ तब अपने चांडार वुलाए। हेरे धृष्ट वुधि पै आए॥ तब वन में सो ऐसें कह दीनी॥ हमया कौं मारन दाकीनी॥ २४॥ तुम बालक वन मैं ले जावो॥ वेहड माहि मारि कैं आवो॥ बहुत दर्व दे हुं तुम आयें॥ बालक वेगि हि कैरो आये॥ २५॥ तब चंडाल बालक कौं ले गए॥ वेहड मैं मारन कौं जए॥ तहां बालक लरकन कें संगा॥ खिलत हुतो नहीं सुधि अंगा॥ २६॥ बालक एक विप्र को आयो॥ श्रीमालि ग्राम चुराऐं लायो॥ मरति चंड्रहास कौं दीनी॥ चंड्रहा

समुखमैधरिलीनी ॥ २७ ॥ सोमूरतिमुषमाहीराषे ॥ सेवाकरैवीन
तीभाषै ॥ तवचंडारकाननिठुराई ॥ मारनकूंतरवारिउठाई ॥ २८ ॥ चंद्र
हासकैंमारनलागे ॥ तेगतापतेकइंनभागे ॥ चंद्रहासवहैसंकाबादी ॥
हरिमूरतिवमुषमैसुंकाठी ॥ २९ ॥ वहैअस्तुतिकरननवलागे ॥ जीव
दानप्रभुआगेमागे ॥ अहैप्रभूदीननकेनाथा ॥ अवकिनमेरौपकरौ
हाथा ॥ ३० ॥ श्रीसालिग्रामस्यामवपुधारयौ ॥ संकटसोप्रहलादउधारयौ ॥
धूकीरध्याकरीमुरारी ॥ पैजद्रौपताकीतुमपारी ॥ ३१ ॥ तेसेहीतुममो
हिउवारौ ॥ तुमसबजनकेकारजसारौ ॥ मोहिराषिलीजैजगनाथा ॥
मारौकहाचंडारनहाथा ॥ ३२ ॥ तवचंडारकैउपजीमननैमे ॥ आईदया
डरेनिजतननैमे ॥ तववनकेमनउपज्योग्याना ॥ तवएकहनलगेभ
गवाना ॥ ३३ ॥ एरवजनमपापहमकीयो ॥ तोयहपापकर्मपुनिलीयो ॥

243

जै॰अ॰ १२२ २४४

ऐसी दया उपजि तहां आई ॥ तव तहां कीनं ... पाई ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ तव वालक के पाव की ॥ छोटी अगुरीया काटि ॥ ... दिषाई राज कों ॥ गई मकल मन आंटि ॥ ३५ ॥ चौपई ॥ और कही हम वालक मारे ॥ ए आए चंडार तुम्हारे ॥ धृष्टवुधि मारे सुनि वाला ॥ तव मन भयो व होत षुस्याला ॥ दो॰ ॥ ३६ ॥ पंचम हो राजा ... दई ॥ चंडारन कों जाय ॥ और व हो तसुष पाइयो ॥ निज मंदिर में जाय ॥ ३७ ॥ इति श्री महाभारथे अस्समेद के पर्वयने नेजैमुनि जनमेजय संवादे वालक रख्या वर्ननो नाम गुणंचासमोध्यायः ॥ ४९ ॥ ॥ जैमुनि वोवाच ॥ सोरठा ॥ हो जनमेजय राय जो मे भाषत हौं कथा ॥ जो नारद जे आय ॥ अर्जुन सों भाषी ऊती ॥ १ ॥ नारद उवाच ॥ चौपई ॥ हो अर्जुन तव वे चंडारा ॥ वे हइ मे छाड्यो वन वारा ॥ मारन को वन माहि पठाए ॥ अगुरी काटि छाडि वे आए ॥ २ ॥ अगुरी कट

तदरदवउ जाग्यो ॥ बालक वनमै रोवन लाग्यो ॥ पीर अंगुरीया ज्यौं ज्यौं
करै ॥ ज्यों ज्यों वनमै रोवत फिरै ॥ ३ ॥ तब तहां वनमै रोज सुनायो ॥ बन
के मृग जहां चलि आयो ॥ करिहै पीर अंगुरीया काटी ॥ सो वन मृग अ
निकै चाटी ॥ ४ ॥ अरु जे वनमै पंछी छिते ॥ सो बालक पै आए जिते ॥ ति
न उहक निसं छाया कीनी ॥ प्रद्युम्न पपैने सिर लीनी ॥ ५ ॥ अरु बन
कौ हाथी चलि आए ॥ सूंडि न संभरि पांनी पाए ॥ अरु वन के सु वे चलि
आए ॥ ते वन फल षेवे कौं लाए ॥ ६ ॥ वन के जीव आनि षटए ॥ ऐं बाल
कौं राषन भए ॥ कुलंदम नाम एक है राजा ॥ रहै है सिरछ्या के काजा ॥
॥ ७ ॥ प्रभु बुधि ने तहां पठाए ॥ मैंडे की रछ्या कौं आए ॥ सो मैडे कौं थां
नादारा ॥ वा बन माही करत सिकारा ॥ ८ ॥ ज्यों ही देस करत है फेरा ॥
ऐं वा बनमै करत अहेरा ॥ बालसाष के लोगन देष्या ॥ कुलंदम सौं

जै॰ऽम्र॰ जायकहीवसेषा॥९॥ काह्कोएकवालकरोवै॥ अंगुष्ठ व्याहसकल
१२३ तनधोवै॥ कहुं अंगुरीयाकाटीजाकी॥ रेषलदयाहोत है ताकी॥१०॥
246 कुलदमसुनततहां चलिआये॥ जायवालढिगठाढेभये॥ कही
कौनकेवालकवोलो॥ काकेपुत्रइहां तुमडोलो॥११॥ वालककै
हीसुनौमममाता॥ मेरेकहुपितानहीमाता॥ मातापिताश्रीमालि
गराम॥ और नकोई मेरेकाम॥१२॥ और नमेरैकोई नाही॥ कारछाक
रिहैवनमांही॥ मातपिताकोंमैंनहिजांनूं॥ श्रीसालिग्रामपिताकरि
मांनूं॥१३॥ नवकुलदमलेगोदउठायो॥ अरु अपनेग्रहकोंचलि
आयो॥ कुलदमवहोतमोदमनकीयो॥ चंद्रहासआर्येघरलीये॥१४॥
तहांहुतीकुलदमकीभांमा॥ रानीमेघवतीसोनामा॥ वालकताहि
आनिकैदीयो॥ लायोगोदमोदमनकीयो॥१५॥ अपनीसुतकरिपाल

त भए॥ कुलदमव है आनंदित रहे॥ चंद्रहास वैठा रेमाला॥ संग पढत केते बाला॥ १५॥ पांडे नौं सिधांन पढावे॥ चंद्रहास मन मैं न हिलावै॥ तब बालक कौं पांडे कही॥ सीधौ क्यौं न पढत हौ नही॥ १७॥
चंद्रहास कहि दियो वीवेक॥ रामनाम जानत है एक॥ तब पांडे कुल दम ढिंगि आयो॥ राजा कौं विरतंत सुनायो॥ १८॥ कुलदम कही विषमु निलीजे॥ चंद्रहास को त्रास न दीजे॥ बालक हमै दयो श्रीराम॥ ने वे कहे करी सो काम॥ १९॥ जैसे रहे रहन दो ज्यों ही॥ चंद्रहास सुष पावे क्यौं ही॥ वर्ष आठ को बालक भयो॥ कुलदम जव वे जने उदयो॥ २०॥ दोहा॥
संशर न विद्या पढी: वहे कुलदम सुष पाय॥ यौं प्रकार रहन न लगे: नारद कही सुनाय॥ २१॥ इति श्री महाभारते अश्वमेद के पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे चंद्रहास आगमनो नाम पचासमोध्याय:॥

जै॰अ॰
१२४
248

॥५०॥ ॥चौपई॥ यहां कथा जे मुनि रिषि भाषे॥ राजा जनमेजय सौं भाषें॥ अर्जुन नारद सौं कहदीनें॥ ज्यों बहु अनतु मह मसों कीनें॥१॥ अर्जुन उवाच॥ हो नारद तुम धन्य गुसांई॥ चंद्रहास की कथा सुनाई॥ धनि वह नग्र धन्य वह देसा॥ चंद्रहास हे तहां नरेसा॥२॥ धर्म भक्त हरिजी को प्यारो॥ तातें अति हित वह्यो हमारो॥ फिरि नारद कों छ्रनलागे॥ फिरि हूं कथा सुनत हे आगे॥३॥ अर्जुन उवाच॥ दोहा॥ नारद जू तुम धन्य हो: चंद्रहास धनि सोय॥ चंद्रहास की और हूं: कथा सुनावो मोहि॥४॥ चौपई॥ अजहूं मम आतम सुष पायो॥ चंद्रहास की कथा सुनावो॥ तव बोले रिषि धर्म विसारद॥ फिरि हू कथा कहत हे नारद॥५॥ नारदोवाच॥ अर्जुन चंद्रहास नहार रह्यो॥ तहां वर्ष षोडस को भयो॥ तव वन जाय पिता सों कही॥ हम को कछू न आग्या दई॥६॥ अहो

पितातुमग्रग्यावाउं ॥ तौकहुंदिगविजयकौंजाउं ॥ कुलदमकहीपुत्रसुष

दाकर ॥ हमसत एकग्रामकेठाकुर ॥ ७ ॥ हमारोधृष्टवुधिहै राजा ॥ ग्रौ

रनसंकछुनाहिनकाजा ॥ कोनराजकौनपुरग्रामा ॥ तिनसौंनहीह

मारोकामा ॥ ८ ॥ हमतौह्यांकेथानादार ॥ चाकरधृष्टवुधिकैलार ॥ तौ

हिग्रकेलौकहांपठंउं ॥ परिहैभीरतहांमेजाउं ॥ ९ ॥ कालेचंद्रहा

सतुमजावो ॥ ग्रवकैतौकछुमोहिपठावो ॥ कुलदमकहैसुनहुसु

तमेरे ॥ जोग्रैसीग्रछ्यामनतेरे ॥ १० ॥ मेडेकेराजाहैकोई ॥ हमकौंदेत

वहौतडुषसोई ॥ कुलदमकहीतहांतुमजावो ॥ वनकौंजीतिवेगितु

मग्रावौ ॥ ११ ॥ तवतहांचंद्रहासचढिचले ॥ ग्रौरपांचजोधासंगमि

ले ॥ तहाजायनृपकिएनचीत ॥ सवमेडेकेराजाजीते ॥ १२ ॥ तिनपै

डंडलेरघरग्राये ॥ कुलदमततवैवहौतडुषपायो ॥ ग्रैसेचंद्रहासस

जै०प्र०
१२५
250

षदेवा॥ मातपिताकीकरिहैसेवा॥१३॥ एकादसीव्रतकौंपाले॥ सदासुमा
रगहीकौंचाले॥ बर्त्तकरैमकुछाकरवावै॥ कीरंतनकरिकैसुषपा
वै॥१४॥ भोजनकाहूकौंनहिदेई॥ एकादसीपालिव्रतलेई॥ कुलधर्मक
हीहमारेराजा॥ धृष्टबुधिनीरेहैआजा॥१५॥ सोगारीकंचनकीभरे॥ व
परेवहोतभांतिकेथरे॥ अरतहांबहोतसुगंधिपठाई॥ मेवाधरितहांब
होतमिठाई॥१६॥ अपनीवहौबिनतीलिषिदीनी॥ सकलसौंजसेवक
सगिकीनी॥ सोजसाजिसेवकसवचले॥ धृष्टबुधिराजासौंमिले॥१७॥ धृ
ष्टबुधिबोलेतिहिवारा॥ हेकोउइहांरसोईदारा॥ अवतुमसीघ्रसोईजा
वो॥ इनसेवककौंआनिजिमावो॥१८॥ सेवककहेअंनहिसैहे॥ हरि
वासरदिनकछूनलेहे॥ हमारेनाथपुत्रइकपायो॥ ताकेउछैसोवर्त्तच
लायो॥१९॥ एकादसीवर्त्तवहपाले॥ सीलसुभावसुमार्गचाले॥ हम

हूं ताहि वर्णकोधरै॥ तातें अब भोजन नहि करै॥२०॥ सोरठा॥ कही रसोई यन जाय॥ धृष्टबुधि आगें तबे॥ सेवक अन्न न हि षाय॥ करे वर्त एकादसी॥२१॥ चौपई॥ वोले धृष्टबुधि हम जांनै॥ ए सेवक आए गर्व आनै॥ अरकुल हम गर्वाने सुनही॥ सो अब पकरि मंगैहूं वनही॥२२॥ सेवक वोले सुनहु गुसांई॥ हम गर्व नेक वहूं नांही॥ और हम आरे ठाकुर कहिऐं॥ उनके गर्व कहुं न हि पईऐ॥२३॥ हम ठाकुर कै वेटा आयो॥ तिन सव कौ यह वर्त वतायो॥ ताही हम साधत है राजा॥ तातें अन्न न षैहै आजा॥२४॥ रजनी गई विहानुं भयो॥ धृष्टबुधि राजा लष गयो॥ कही राज की अग्या पाउं॥ मदनावती नग्र कै आउं॥२५॥ दोहा॥ कुल हम षानाराद रहै॥ नहां जात हो राज॥ तिही वुलाए वेगि हूं॥ तहां हमारो काज॥२६॥ चौपई॥ नव राजा सब आय समपायो॥

251

धष्टबुधि आपनै घरि आयो ॥ कंन्या एक धष्ट कैं धामा ॥ ताकौ कहियत विष
या नामा ॥ २७ ॥ विषया न हां पिता लष आई ॥ आय दिता सैं वात चलाई
आजु पिता हम अंबल गाए ॥ फल न लगे ना के फल पाए ॥ २८ ॥ यह सु
नि धष्टबुधि मुडं गोयो ॥ पट मुष नाषि नैन ढकि सोयो ॥ अरय हकही
सुनत हो मेवा ॥ विषया कौं लै दीजो मेवा ॥ २९ ॥ दोहा ॥ राजा सं अग्पाल
ई धष्टबुधि तव जाय ॥ इजै दिन मदनावती: नगुपह्रुच्यो आय ॥ ३० ॥
चौपई ॥ कुलदमकु तेत हां सुनि पाए ॥ कुलदम चंद्रहास चलि आए
सुनमुष चंद्रहास तहां चले ॥ धष्टबुधि आगे जाय मिले ॥ ३१ ॥ और
आपनैं ग्रह लै आए ॥ धष्टबुधि तव वचन सुनाए ॥ हो कुलदम मय
ह सछन आयो ॥ ऐसो पुत्र कहां तुम पायो ॥ कुलदम कही सुनु षत
पालक ॥ हम पायो वहडमे वालक ॥ वेहडमे यह रोवत फिस्यो

वालकआनिहमेंआदस्यो ॥ ३३ ॥ पुत्रहेतकरियाकौंल्यायो ॥ सोअ
वपायतुम्हारेंआयो ॥ कुलरमऔसीवातवतानी ॥ धृष्टवुधिअपनै
मनिजानी ॥ ३४ ॥ यहवालकवाहीहैंगांहि ॥ मारनकह्यौचंडार
नजाहि ॥ सोचंडारनमास्यौनांही ॥ सोयहआनिरह्योयामांही ॥ ३५ ॥
कोटिअगुरीयामोहिदिषाई ॥ मेरेंनवेसोचमनआई ॥ अवमेंया
कौंदेहिमराय ॥ अपनैवेटानिकटपठाय ॥ ३६ ॥ अपनैवेटापासिमरा
ऊं ॥ वनकेहाथहलाहलप्याऊं ॥ ऐसौमनमेंमतोउपायो ॥ चंद्रहास
तवनिकटवुलायो ॥ ३७ ॥ धृष्टवुधिउवाच ॥ चंद्रहासएककारिज
कीजे ॥ मदनकवरकूंपातीदीजे ॥ यहजोकाजकह्योममजीकौ ॥ तु
महीगएंहोतहेनीको ॥ ३८ ॥ पातीदेउमदनकेहाथा ॥ औरनसौंवा
तोजिनगाथा ॥ चंद्रहासवोलेहमजैहे ॥ राजाहुकमतुम्हारोपैहे ॥ ३९ ॥

जै॰अ॰ १२८ 254

दोहा ॥ चंद्रहासबोलेनृपति जहां पठावौ मोहि ॥ राजकाज अब मारिहौं ऊकमरावरो होहि ॥ ४८ ॥ इति श्री महाभारते अश्वमेधकेपर्वववनेजैमुनिजनमेजयसंवादेधृष्टबुधिवाकिनोनाम ईक्यावनुऽध्यायः ॥ ५१ ॥

॥ चौपई ॥ जैमुनि जनमेजय सो भाषै ॥ अहौ राजनवनारद आषै ॥ अर्जुन सो भाषी वन ऐसे ॥ तुम कौ कथा कहत हौ जैसे ॥ १ ॥ नारदोवाच ॥ धृष्टबुधि दुरबुधि विचारी ॥ चंद्रहास मारनकी धारी ॥ अपने सुतकों पाती लिषबै ॥ पाती माहि पुत्र कों सिषवै ॥ २ ॥ सुत्ति श्री तु निमदनकुंवार ॥ धृष्टबुधि के सुन ऊ विचारा ॥ आगे चंद्रहास इहिं वारा ॥ इहै तुम्हारो दावारारा ॥ ३ ॥ इनकौ रूपन सील विचारौ ॥ जो तुम राषो कहो हमारो ॥ इनकौ एक घरी जिन राषो ॥ और बात मन मैं जिन आषो ॥ ४ ॥ यह है तौ कछ्यो हमारौ कीज्यो ॥ चंद्रहास आवत विष दीज्यो ॥ यो पाती लिषि

षंभाकरी॥ ते होंदनायथेली मैंधर्यो॥ सो लै चंद्रहासत्र्रबत्र्रायो॥ लैयह

पत्र मदन लघ जायो॥ मारगमाहि विलंब जिन कीज्यो॥ पातीमदन

हाथ तु मरी ज्यो॥६॥ चंद्रहास बोले अब जै हौं॥ राजतुम्हारी त्र्रग्या पे

हौं॥ चंद्रहास पाती ले चले॥ चलती बेर मान सौं मिले॥७॥ जननी त

हां तिलक घसि दीयो॥ चंद्रहास मारग पग दीयो॥८॥ दोहा॥ चंद्रच

ल्यो दिन ती लग: तजि मदना न ती ग्राम॥ कोंतिलपुर के गोरवैं: वैठि

कीयो विश्राम॥९॥ चौपई॥ वैठे तहां ताल एक आयो॥ तहां जाय त्र्रम्ब

पांनी पायो॥ त्र्रौर त्र्रापकी नीं [illegible] मा॥ छुजन लगे तहां भगवाना॥१०॥

कवल पहौ पनी रे तहां जाय॥ श्री गोव्यंदजी पहुंचे त्र्राय॥ त्र्रौर मान वैचेवैकों

दीयो॥ सो तिवैर का छि कै लीयो॥११॥ श्रीगोविंदजू कों भोग लगायो॥ त

व प्रसाद करि त्र्रापन पायो॥ बांध्यो वाज ह्हजी डोरा॥ त्र्रापन पौढि र

जै॰ अ॰ हेतिहि बारा ॥ १२ ॥ विषया ध्रष्ट बुधि की जाई ॥ सषियन सहत बाग मैं
१२८ आई ॥ षेलत कुंती सषिन सगि पागी ॥ तवे तहां फल तोरन लागी ॥ १३
256 देषि चंद्रहास तहां सोवै ॥ पोढे देषि सकल तन जोवै ॥ विषया कौं उ
पज्यो अभिलाषा ॥ सषी सकल वोली यह भाषा ॥ १४ ॥ सुंदर पुरष क
हा हैं कोई ॥ ऐसो तुम भरतार ज होई ॥ वोली सषी सांच यही कहिए ॥ य
ह वर होय कहूं कहा चहिए ॥ १५ ॥ ऐसे कहत सषी सब भागी ॥ आप
स मैं षेलन सब लागी ॥ मंजन करत षेल के मूल ॥ तोरि तोरि कमल
न के फूल ॥ १६ ॥ दोहा ॥ करि हासी दासी सकलः कमल पुस्प कर लि
न ॥ करि मंजन षेलन लगी ॥ आप आप मैं दीन ॥ १७ ॥ इति श्री महाभा
रते अस्समेद के पर्व वर्नने जैमुनि जनमेजय संवादे विषया हासि
वर्नने नाम बावनमोध्यायः ॥ ५२ ॥ ॥ जैमुनिरुवाच ॥ चोपई ॥

राजान वश्रर्जुनयों भाषी॥ हो रिषि वडुरि मुन. वो साषी॥ यह गाथा मो
हि नी की लागे॥ कहो गुसांई फिरि हू आगे॥ १॥ नारदोवाच॥ हो अर्जुन
तव विषया निकसी॥ सषि यन मे संग आवत विगसी॥ चंद्रहास सो वत है
जहां॥ विषया निकसि गई चलि तहां॥ २॥ विषया गई तहां मंदर मंदरा॥ दे
ष्यो पत्र रू गे के वंधा॥ आई नारि चंद्र को घनी॥ पत्र वंध्यो वागे की तनी॥
३॥ विषया वहो चतराई करी॥ चंद्रहास सो पाती हरी॥ विषया वांच्यप
त्र तिहि ठांव॥ तामे व च्यो मदन को नांव॥ ४॥ तामे लीषी कवरय हकी ज्यो॥
चंद्रहास कों तुम विषदी ज्यो॥ तव विषिया जे सी तहां जांनी॥ काजर की
कजे रोटी आंनी॥ ५॥ कजरोटी सूं काजर काढ्यो॥ विषअक्षर सूं विषिया
मां ड्यो॥ यों विष सूं विषया करि दीनी॥ महीर षांभ वे सी ही कीनी॥ ६॥
जै सी ही जैसी धरि दई॥ विषिया वडुरि आप घरि गई॥ अरु सव सषी वि

चारतचली। यहजो बात होयसोभली॥७॥ चंद्रहासतहांजा
गे। जलसोंमुषपरछालनलागे। मुषपरछालिभएअसवारा। च
लिगएधृष्टदरबारा॥८॥ जायमहलतिंजितहांभए। तवैपौरियाॅ
नीतरिगए। जायकहीमुनिमदनकवारा। चंद्रहासआएदरबा
रा॥९॥ धृष्टबुधिनृपरहांपठाए। तातेचंद्रहासयांआए। नगय
हमुनिकेकवरसिधाए। चलिकेचंद्रहासपैआए॥१०॥ देष्योचंद्र
हासतहांठाढे। हितप्रीतिदोउनअतिवाढे॥ चंद्रमदनदोउह
सिमिले। पानिपकरिभीतरिलैचले॥११॥ अरपुनिपुनिपूछतनकु
सलात। कहोचंद्रकछुनीकीबात। अंकहिमिलतमहसुषपाए।
अरकहीकोनकाजतुमआए॥१२॥ चंद्रहासोवाच। हमआएतु
मदरसनकाजा। मेज्योमोहिधृष्टबुधिराजा। तातेहमकोंतलपुर

आए॥ भए सुनायदरसनु वपाए॥१३॥ ऐसी वात होत उनमैं भई॥ पत्री

काढि मदन कर दई॥ अरु कही वन तें मोहि पठायो॥ तातें मैं नु मढि

ग चलि आयो॥१४॥ पाती सकल सभा में वाची॥ देषत सकल धरी म

न सांची॥ पाती वचीसकल के आगे॥ सव ही पाती वाचन लागे॥१५॥

सो पाती मैं ऐसें लिषिया॥ चंद्रहास कौं विषिया॥ घरीयें करा

षो मति कोई॥ जो हम लिषी करोगे सोई॥१६॥ ऐसें सव मै पत्र वचा

यो॥ सुनत वात सव ही सुषपायो॥ कहन लगे नीकी विधि भई॥ चंद्र

हास कौं विषिया दई॥१७॥ यह तो हम मैं विचारत सव ही॥ अरु पुनि प

त्री आई अव ही॥ अरु पुनि चंद्रहास ह्वां आए॥ यह सव ही विधि जो

ग वनाए॥१८॥ अरु यह वात महल मैं आई॥ कहूं सवन कों जाय सु

नाई॥ यही वात विषिया तव सुनी॥ श्रीमहादेव सुमिरन मन गुनी॥१९॥

जै. अ. १३० 260

श्रीसंकरपार्वतीरजे॥ कहीआपविनऔरनइजे॥ जंरूकमनिकीकरीसिहाई॥ जंअवमेरीकरौनआई॥२०॥ तुमसिधिकीयोमनोरथवनकौ॥ अवअनुरागिलेऊमोपनकौ॥ औरसबीविषियाकीजती॥ विषियापैचलिआईजिती॥२१॥ कहतआजदिनआयोनीकौ॥ विषियाकेसुषआनजीकौ॥ सोअपनेंमनमाहिविचारी॥ जोईहोतअवेवलिहारी॥२२॥ विषियासुनिकेवहोनलजानी॥ सकलसषीनमिलिहासीठनी॥ औरसषीकहननयौंलागी॥ तुमविषियादेषीवडभागी॥२३॥ दोहा॥ सकलसषीमिलियोंकहेंसुनुसषीएकेंवात॥ सोसवमनधारतऊतीःसकलहोतहीजात॥२४॥ इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्वनेजेमुनिजनमेजैयसंवादेविषियाआनंदनोनामत्रेपनमोअध्यायः॥५३॥ ॥जैमुनियोवाच॥

चौपई॥ जैमुनिजनमेजयसौंकहे॥ वऊरिकथासुनिराजायहै॥ महावाऊनारदजुआगे॥ पानजोरिफिरिपूछनलागे॥१॥ अर्जुनोवाच॥ वऊरिकहाकीनोदिषिदेवा॥ सवहीमोहिवतावोभेवा॥ मदनतहांतवकैसीकरी॥ विषियाचंद्रकौंनविधिवरी॥२॥ नारदोवाच॥ सुनितहांमदनमहासुषपाए॥ पत्रवांचिजोतगीवुलाए॥ वहींपडितआए वडवोध॥ कहीअवकरौलग्नकोसोध॥३॥ तुमविवाहकोलग्नधरावो॥ याविषियाकोव्याहकरावो॥ विषियाव्याहकियोहमचाहे॥ वहोचंतावाटमनमाहे॥४॥ पंडितकहैआजदिननीकौ॥ वहोसुभलग्नसदासुषजीको॥ गोधूलकआंथेतेदिना॥ धरोलग्नआवततवधैना॥५॥ नीकोदिनकहियतहैआज॥ साकछुकरोव्याहकोसाज॥ जोकछुकरोसोअवहीकरो॥ सकलसौंजआगेंआय

जै. भ.
१३१
262

धरौ ॥ ६ ॥ विषयाकौ उवटनाकरौवौ कीलीय न्हानकौ धरौ ॥ चंद्रहा
सहू कौं सपरावो ॥ ओर वेगि मंडप लै छावो ॥ ७ ॥ मदनतवै मंडप
मै आए ॥ विषिया चंद्रहास वैठाए ॥ विषया सौं हथजोरी कीनी ॥ गठ
जोरी करि भांवरि दीनी ॥ ८ ॥ अर नहो कीनं कं न्यादान ॥ विप्रनकौं की
नौ सुनमान ॥ हथलेवै वहौ दीनी दासी ॥ अरथ दर्वं वहौ घोरे हाथी ॥
९ ॥ व्याह भयौ तव भयौ विहान ॥ मंगनजनकौ दीये दान ॥ भाट वि
षारी जो कोउ आए ॥ ते समधी के वार सिधाए ॥ १० ॥ तिनकौं हाथी घो
रा दिये ॥ दर्व देय अपनु जस किये ॥ अरस वसौं ज व्याहकौ दीनूं ॥ विषि
या व्याह मदनकौ कीनूं ॥ ११ ॥ भयौ व्याह सवही सुष पायौ ॥ विषिया
चंद्र महल मै आयौ ॥ विषिया चंद्र महल मै रहे ॥ वहौ आनंद कौ न
ह भए ॥ १२ ॥ अरस वसषी महल मै आई ॥ वारवार वोलत सवनराई ॥

कहैश्याजिदिननीकोश्रायो॥विषियाचंद्रहासवरपायो॥१३॥दोहा
चंद्रहासविषियामहल॥रहनलगेतिहिठांम॥अतिउछवश्रानंद
भयोःकौतहलसुषकाम॥१४॥इतिश्रीअस्वमेदकेपर्ववर्नेनेजै
मुनिजनमेजयसंवादेविषियाव्याहवर्ननोनामचवनोध्या
यः॥५४॥ ॥जैमुनियोवाच॥सुनिराजाइमतकेश्रैना॥नारदजू
बोलेफिरिबैना॥अर्जुनधष्टबुधितलषै॥मदनावतीनग्रकेविषे॥१॥
धष्टबुधिनेकुलदमकह्यो॥वहोहीपिताचंद्रकोरह्यो॥धष्टबु
धिनिठुराईकीनी॥भांतिअनेकसासनादीनी॥२॥तातेनेलनसौहि
रकाए॥कुलदमतहांवङतदुषपाए॥श्रोरकहीरावनहोसर्व॥करिहे
चंद्रहासकौगर्व॥३॥श्रोरहमारेकाटेहाम॥तातेकियेसकलएकाम
बांधेतालबावरीबाग॥तहांतुम्हारोकछुवनलाग॥४॥ताकैंगर्वइता

जै॰स्व॰ १३२
264

वेए॥ सो अब कहौ कहां ते गए॥ ऐसे मिनि उरत बनत तहां कीए॥ भां
ति अनेक सासना रीये॥५॥ छ॰ बुधि कौ नलपुर चले॥ जे को उ लो
गवाट में मिले॥ जो जु मिले ते करत जुहारा॥ तब ही कहत ब्याह
व्योहारा॥६॥ अबै ब्याह वि षिया को भयो॥ ऐसे मिले व टोहि
न कह्यो॥ और कही अछो वर पायो॥ मदन भलौ ही ब्याह करा
यो॥७॥ छ॰ बुधि महलन नल पग आए॥ आनंद कौ न हल हीपाए
और तहां वही वटनव धाई॥ ऐसें देषि क्रोध जीय आई॥८॥ छ॰
बुधि छीतव ऐसें॥ यह आनंद होत है कैसे॥ तव लोगन मि
लिक ह्यो उछाह॥ अबै भयो विषिया को ब्याह॥९॥ अव छूटन है
तिन कौ कनं॥ यो जे व धाई बाजे गगनं॥ इती सुनत तव भीत रिगि
यो॥ देषन तहां क्रोध वस भयो॥१०॥ चेइ हां स विषिया एक जुटे॥

देषतवनकौकं ग जछुटै॥ औरत्रैयासवमंगलगावै॥ हसिहसि
हर्षमोदउपजावै॥११॥ ऐसोदेषितमासोजस्यो॥ औरवहोतम
नमेदुषभस्यो॥ तवहीअपनोपुत्रवुलायो॥ कहतीवेरमदनच
लिआयो॥१२॥ आयमदनतवपायनपस्यो॥ राजाक्रोधवंतमुषकस्यो॥
नवैकहीतुमअंतहजावो॥ तुममोहिअपनोमुषनदिषावो॥१३॥
मदनोवाच॥ मोतेकहाचूकयहपरी॥ तुमजलीषीसोहीमैकरी॥ आ
छोयहांव्याहहमकीयो॥ तीकोदेषिदायजोदीयो॥१४॥ औरतुम्हा
रीआग्याआई॥ तामेदेषोसवकरवाई॥ छछवुधिवोलेफिरिजहां॥
देषैंपत्रधस्योहैजहां॥१५॥ तवैमदनवहपातीआनी॥ देषीवांचित
येमनमानी॥ देषोमैकछुकस्योविचारा॥ यहकछुभयोओरव्योहा
रा॥१६॥ तवकछुओरविचारनभयो॥ महापापजियमैधरिलयो॥

जै॰ग्र॰
१३२
266

कोयभांतिकरियाहिमरैहूं॥ याकौंमारिजीवसुषपैहूं॥१७॥यहकंन्यारंडाजोहोऊ॥मेजविचारीकरिहूंसोऊ॥याकौंमारैविनानरहहो॥ यहम्रपजसग्रपनैंसिरिलैहो॥१८॥दोहा॥ग्रैसीमनहिविचारिकैः वोलिलएचंडार॥ तिनउनमेमारयोहतो॥ सोग्राएतिहिवार॥१९॥इतिश्रीमहाभारनेग्रसमेदकेपर्ववनेनेजैमुनिजनमेजयसंवादेपचावनोग्रध्यायः॥५५॥ ॥जैमुनियोवाच॥चौपई॥जनमेजयराजामुनिलीजै॥कहूंकथानीकेचितदीजे॥ग्रर्जुनसोनारदजूकहे॥मुनिमुहावाऊपर्मसुषलहै॥१॥नारदोवाच॥होग्रर्जुनचौथोदिनग्राए॥ध्रष्टवुधिचंडारवुलाए॥ग्रोरकहीमुनिरेचंडारा॥पहैलेतुममारयोनहिवारा॥२॥दयाकरीतुमवनमेछाडेउ॥तौपहव

याआयमोहिवाठो॥ तैरयाअवेजिनकरो॥ सोमकाटिमोआगेधरो॥ 267

३॥ अवकेवेगिमारितुमआवो॥ तौकछुवहोतवधाईपावो॥ वह

चंडारकोनविधिमारै॥ यहजियसंसेभयोहमारै॥४॥ अवतौवहवा

लकयहनांही॥ महाजोधहमकोंदरसांई॥ वडौसुभटसवसकामा

नैं॥ याकोंमोसकोनविधिभानै॥५॥ जाविधियाकोमारनकीजे॥ सो

हमकोंआपकहदीजे॥ धप्पवुधितवऐसेकहे॥ देवीतहांचंडि

कारहे॥६॥ मंदरहैनग्रतेन्यारो॥ जामरहोलागितुममारो॥ मैंज

पठाउंपूजाकारन॥ तवतुमकरोचंदकोमारन॥७॥ योंकरिकैचंडा

रपठाए॥ वेतौथानिचंडिकाआए॥ चंडलागिषंभनसारहे॥ फिरित

वचंदहासमुंकहे॥८॥ चंदहासतवनिकटवुलाए॥ तवहीचंद्रपु

छपेआए॥ राजावहौरिकहीतवऐसे॥ महाप्रीतिकेवायकजैसें॥९॥

छ॰ षत्रुघोवाच ॥ अवतुम षथा नि चंडि साजावो ॥ लेन ई दे दर्श जिकैं गा
वो ॥ यह देवी कुलश्रुजि हमारे ॥ इनको इष्ट सवै हम धारे ॥ १० ॥ चंद्र हा
स बोले महाराजा ॥ ले जाउं श्यामा कों साजा ॥ कुकम मभयो अव ही मै
जाऊं ॥ देवी पूजि महल मैं आऊं ॥ ११ ॥ तव ह्यां कौंतलपुर केराजा ॥ कों
त नाम तिन कों बड साजा ॥ तिगालाय रषि कों वूझै ॥ कही गुसांई
तुम कों सूझै ॥ १२ ॥ देही की चेष्टा वषांनु ॥ जो तुम कहो सांच करि मा
नु ॥ तव गालारिषि स्वर कही ॥ राजा सुनऊं सुपन की सही ॥ १३ ॥ कौं
तन मौंन राजा तुम देष्यो ॥ निसा माहि कैसे करि पेष्यो ॥ राजा कहै
सुनु रिषिराया ॥ विनासी न देषी मम छाया ॥ १४ ॥ गालारिषिवोवा
च ॥ जो इन मै रहस्य न मैं जांनै ॥ सो नर अपनी मीच पिछांनै ॥ अरजे
मांन वहै इहि घाट ॥ देषत्त ओरा वतिको वाट ॥ १५ ॥ सुकहीं नजाको

उदेषै ॥ अरु धनी त्रीया न ही पेषै ॥ ऐसे चिह्न मनि षजो धरई ॥ तेनरए

कवरसमैमरई ॥१६॥ भूतपिसाचरगंधपरूपै ॥ एतेलषैनग्रकैविषैसो

वनफूलफलतेदेषै ॥ वृछसकलसोवनमेयपेषै ॥ १७ ॥ ऐसेतेनरल

षैतमासा ॥ तेनरमरैमानसवसामा ॥ अरमैडकीपरेवागिध ॥ अपनै

सीसलषैतेवीध ॥ १८ ॥ ऐसेसुपनलषैजोकोई ॥ ताकीमीचमासषट

होई ॥ अरजोतिलअरसीमाही ॥ जलमेदेषैअपनीछांही ॥ १९ ॥ अपनी

छांहलषैविनमाथे ॥ तेनरएकमासमेंजाथे ॥ गोवरकीचमाहिजो

कोई ॥ जोनरदेषैघोअटकोसोई ॥ २० ॥ ऐसेजाकोसुपनेआई ॥ एकमास

मैजमपुरजाई ॥ अरडरांवनकारेकारे ॥ मानसुनषथरनषसुमारे ॥ २१ ॥

एजुसुपनमेदेषैआव ॥ पंद्रहदिनलौंताकीआव ॥ ऐसेईहराजजो

पावै ॥ तेनरअपनीमीचवतावै ॥ २२ ॥ तातेतुमेअहोनरईसा ॥ अपनी

जे॰ष॰
१२५
270

छांहलषीविनसीसा॥सोनृपकीजेकह्योमैंहमारो॥अवआपनपोवे
गिसम्हारो॥२३॥ऐसेरिषराजासोआषी॥गालवरिषिसोरजामाषी॥
अवमेअपनोकरिहोंकाजा॥चंद्रहासकोंदैहूंराजा॥२४॥औ
रकहीमेकंन्यादैऊं॥अवमैंकरनेंतपस्याजेऊं॥करिहूंतपगंगाके
तीर॥जोगधारिकैंतजौंसरीर॥२५॥इतैराजलघमदनकवारा॥
राजाज्ञकमकियोतिहिवारा॥वोलेमदनचंद्रहैकेहो॥चंद्रहास
हैजावेजहो॥२६॥चंद्रहासकोंवेगिवुलावो॥जहांहोयतहांवेगहि
जावो॥तवहोमदनलेनकोंचले॥चंद्रहासमारगमेमिले॥२७॥
मदनकहीतुमराजवुलाए॥वेगिचलौनृपमोहिपठाए॥वोलेचं
द्रहासहूंऐसेहूं॥अवतौदेवीपूजनजैहूं॥२८॥धृष्टवुधिह्यांमोहि
पठयो॥तातैंचल्योचंडिकाआयो॥मदनकहीआएइहिकाजा॥

वेगिचलौ बोलतहैराजा ॥२९॥ मोहिपठायोसीग्रहीचलौ ॥ वेगिजा यराजासौंमिलौ ॥ चंद्रहासबोलेफिरिग्राउं ॥ अवतौदेवीपूजनजा उं ॥३०॥ मदनकहीएजाकौसाजा ॥ मोहिदेषिजाबोलघराजा ॥ मे तौदेवीपूजनजाउं ॥ तुमजाबोजहांमेजपठाउं ॥३१॥ सोरठा ॥ ल योमदनकौबाजचंद्रहासतहांचढिचले ॥ कोननामतहांराज गएचंद्रततकालक्ष ॥३२॥ ऐचंद्रलिहिवार ॥ रिषिराजाबैठेहु ते ॥ करिडंडौतजुहार ॥ मालारिषअरराजसौ ॥३३॥ राजोवाच ॥ राजाकहीअबैहमकीनी ॥ तुमकौमेरीकंन्यादीनी ॥ अरसबदयो हमारौराज ॥ सकलसाजदीयेगजबाज ॥३४॥ दयोराजअबहीतु मलीजे ॥ पिरजापौंनिसकलसुषदीजे ॥ संगासनबैठारेग्राय ॥ त बहीमस्तगछत्रफिराय ॥३५॥ कंन्यादैचंपकमालनी ॥ चंद्रकियेन

जै०म्व०
१९९
272

श्रीके॥ राजआए गंगा के तीरा॥ तहां आंय वन तजो सरीरा॥ ३६॥ राजा
करिकै जोग अभ्यास॥ जाय कियो बैकुंठ निवास॥ चंद्रहास पायो
सब राज॥ कौतलपुर घरनी गड बाज॥ ३७॥ अरु तहां मदन सो
जस वलीऐं॥ देवी के मंदिर पगटी ऐं॥ भीतर पैठ बोलि कि वारा॥
तहां षंभन सौं लगे चंडारा॥ ३८॥ वन तो आत मदन नहि आयो॥
काटे षड्ग सीस लै भायो॥ चंद्रहास संगि सेना घनी॥ लै आए चं
पकमाल नी॥ ३९॥ तहां मुसर कै धाम सिधाए॥ चलि कै अर्धराति
ही आए॥ धृष्टबुधि कों कियो प्रनाम॥ कही विचित्र ही भयो सकामा॥
॥४०॥ चंद्रहासोवाच॥ मैं तौ देवी पूजन चल्यो॥ मारग माहि
मदन मोहि मिल्यो॥ और कही पूजा को साजा॥ मोहि देउ पूजे पातु
म काजा॥ ४१॥ मो सों कही राज लघ जावो॥ बोले राज सित ताव पठो

बो॥ तातें मैं राजा ठिग गयो॥ राजा मोहि राज सब दयो॥ ४३॥ औ
रन पति वडु रुष हे की नी॥ चंपक मालनी कंन्या दीनी॥ धृष्टबु
धि जा नी मन माही॥ मदन कवर जीत वकडुं नाही॥ ४३॥ दोहा
कहा करौं अब मैं मरौः करौ कहां लग दौर॥ मैं जु विचारी और ही
प्रभु करी कछु और॥ ४४॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेद के पर्व वर्ने
ने जैमुनि जनमेजय संवादे चंद्रहास राज प्राप्तनो नाम छपनो
ध्याय:॥ ५६॥ ॥ जैमुनि यो वाच। चोपई॥ हो राजा तब नारद क
ही॥ अर्जुन वडु रिकथा सुनि ए ही॥ धृष्टबुधि रजनी उठि धायो॥ चल्यौ
चंडिका मंदिर आयो॥ १॥ रोवन कर कूटत है आप॥ चल्यौ जात वहो
करत विलाप॥ आय नगर के गौं डै देषै॥ भूत पिसाच फिरत वहो पे
षे॥ २॥ भूत पिसाच फिरत हे अनेका॥ वन हू मन मैं कियो वबेका॥

जै.ग्र.
१३७
274

तिनहौंकहीधष्टवुधिग्राने॥सुनतसकलहीभूतडरानै॥३॥ग्ररजु
कहीयहवडोविसासी॥देविसवासकरनहेफासी॥करिविसवास
मारिहेसोई॥याकोजिनपतियावोकोई॥४॥तातैंयाकोमुषजिनदे
षो॥याग्रक्रमकोकहनलेषो॥सवकोचीहजरतएकनहो॥धष्ट
वुधिचलिग्रायोजहां॥५॥तहांदेषिजरवेकोगयो॥फिरितहांए
कविचारतभयो॥पहलपुत्रमुषदेषनकहं॥पीछेंग्रायचीहजरि
महुं॥६॥तवैंग्रायमंदिरमेंग्रायो॥मंदरमेंमदनपस्योहीपायो॥ल
याउठायधाहदैरोयो॥हायहायसवेंसहीषोयो॥७॥मंदरमेंएक
वडौसथंभा॥ग्रष्टधातकोकहिएखंभा॥मदनउठायभोमिमेधस्यो
मूंडफोरिखंभासोंमस्यो॥८॥रजनीगईविहानौंभयो॥सवाकाजए
जागिगयो॥देषतहीपडातहांधायो॥चंद्रहाससौंजायसुनायो॥९॥

पंडाकहीसुनहुमहाराजा॥आजिभयोअचिरजकोसाजा॥मंत्रीपित्ता

पुत्रहोउमो॥आयोदेषिदिवालेडेरे॥१०॥तुम्हारेराजहोतइहभई॥

ऐसेजायविप्रनहांकही॥तवबहविप्रवोलसुनिलयो॥चंद्रहास

उहितनछोभयो॥११॥विषयाअरचंपकमालनी॥कहनलगीजुभ

लीहीवनी॥महाराजआपनहिजईए॥वहजुआपनुंकपीकहिए

॥१२॥वहजमहौसोहैअपराधी॥ऐसेकहनभहैतवनसाधी॥

चंद्रहासवनकीनहिमानी॥लाषकहीपैएकनमानी॥१३॥चं

द्रहासमंदिरकोंचलेो॥मंत्रीसुभटऔरसंगिमिल्यो॥सवमंत्रि

नेमिलिवहौसमझायो॥मानीनाहिदिवालेआयो॥१४॥देषेजाय

मरेहीपाए॥तवेचंद्रहवहौविप्रवुलाए॥होमरच्योदेवीकिणाना॥चं

द्रहासकोनांअसलाना॥१५॥तवलीएतिलघ्रतमगाई॥औरवहोत

275

जै.अ. १३८ 276 रा

सामग्रीआई॥ बैठिनहांइठगासनरीनूं॥ अससंकल्पदेहकोकीनूं॥१६॥
करतहोमजबज्वालाजागे॥ नवअपनंसिरकाटनलागे॥ तबेचं
डिकापकरेहाथा॥ कहीजइनकोकरिहोसाथा॥१७॥ तुम्हरेहैंअ
पनेपापि॥ मारेनाहिंआपहीआप॥ तुमइनकेकाजेजिनमारो॥
दीयारामजेकिनकरो॥१८॥ अरहमप्रसंनभईहैंतुमसो॥ चंद्रहा
सकछुमागोहमसों॥ सोतुममागोसोहीदेऊं॥ चंद्रहासबोलेकह
लेऊं॥१९॥ रहभक्तिहरिकीहियमाहीं॥ मांगोंयहेऔरकछुनाही॥ भ
क्तिदेऊमेऔरनमागों॥ रामलछ्महियमेअनुरागूं॥२०॥ हाथजोरिके
बोलेबाता॥ श्रवणमरेजीवाबोमाता॥ हाथजोरिकेऐसेकही॥ जोतु
मकृपाकरनहोमही॥२१॥ सोरठा॥ देवीभईकृपाल॥ कहीजाऊहरि
भक्तिदी॥ होयपुत्रअनंतकाल॥ दोयहहोंरानिनके॥२२॥ चौपई॥

औरभक्तिहरिहीयमैधरिहो॥ तातेतुष्टकसनकोकरिहो॥ सखीरहो इहैभाई॥ ओतेरेमनऐसीआई॥ २३॥ औरकहीजोतेरीकथा॥ कहैसु नैजैसीविधिजथा॥ वहौनहेतकरिसुनैसुनावे॥ तेनरसहीभक्तिपद पावे॥ २४॥ वहोपुनिहोयपुत्रफलपाले॥ औरसंकटकेनिकरनआ वे॥ सुषीरहैनहरिसंग्रासक्ता॥ ताकेश्रीगोविंदकीभक्ति॥ २५॥ चंडीक हैचंद्रसोंवेना॥ फिरिवोलीअवमदोनैना॥ चंद्रहासचषमुद्रतरहे॥ पितापुत्रदोउठाढेभए॥ २६॥ देवीकेछीगेंउठिचले॥ तवहीचंद्रहा ससोमिले॥ औरकहीहरिजीकीमाया॥ मरेजीवंसोकोनउपाया॥ २७॥ ऐसेंकरिकेवहांजिवाए॥ चलेचलेअपनेग्रहआए॥ अपनोंसुसर संगिलेआयो॥ चंद्रहासतवहीसुषपायो॥ २८॥ अर्जुनउवाच॥ ए कवाततेरेमनआई॥ सोभीहमसोंकहौगुसांई॥ कुलदमकहाकरत

तवभयो॥ धष्टवुधिरनोडुवदयो॥२९॥ नारदोवाच॥ तवकुलदमको पकरनकीयो॥ अपनोधनविप्रनकंदीयो॥ औरकरनलागेअपघाता तवसवहीनजायपकरेहाथा॥३०॥ कुलदमतोमरवेकोंकीयो॥ लोगन तहांमरननहिंदीयो॥ वहोसुंसुतकोराजसुनायो॥ तवकुलदमअन हदसुषपायो॥३१॥ चंद्रहासतिनराजाकह्यो॥ तिनपहराजवह्यो तकछुदयो॥ चंद्रहासतवपितावुलायो॥ तवकुलदमकोतलपुर आयो॥३२॥ दोहा॥ कुलदमकोतलपुरगए लष्योपुत्रकोसाज॥ कुलदमधष्टरचंद्रमिलिःकरतभएसवराज॥३३॥ चोपई॥ पुत्रए कविषियाकैभयो॥ ताकोनाममकरधुजभयो॥ एकैजनमैचंपक मालनी॥ दोउपुत्रअतिसोभावनी॥३४॥ पदमाछिधरयो हेताकोना म॥ एदोउपुत्रभएनाधांम॥ इहिप्रकारकीनोसुभकांमा॥ कोंजिन

२जे सालिगराम ॥ ३४ ॥ सालिगराम सुष नै राषे ॥ अरजिन मुषते कृष्न भाषे ॥ हरिजी और न आन्यो ग्यांन ॥ ताते भयो सकल कल्यान ॥ ३५ ॥ तिहि प्रताप ते ऐसे भए ॥ चंद्रहास आनंदपद लहं ॥ ताते भक्ति सब न ते सांची ॥ वडभागी भक्तन ही आची ॥ ३७ ॥ भक्ति प्रताप सब ते वडो ॥ ताकी सुरति लागै सारठो ॥ ताते भयो सकल सुष साज ॥ वरस अनेक कीयो इन राज ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ ताते अर्जुन कहत हैं: होय सकल सुष धाम ॥ भली भांति सौ पूजिए: अरि व प सालिगराम ॥ ३९ ॥ चौपई ॥ सालिगरांम विप्र कों दीजे ॥ ताहको फल अव सुनि लीजे ॥ मानद्रु पृथ्वी दई अनेक: सालिगरांम देतही एक ॥ ४० ॥ यह फल होत सकल कल्यान ॥ होइ हरि भक्ति होई धन मांन ॥ ऐसे फलदाता श्रीकृष्न ॥ अरवहौ होय भक्त सो प्रश्न ॥ ४१ ॥ कृष्न सारिषि वंधु नाही ॥ एकादसी व्रतन के माही ॥

जै॰ अ॰ गंगासमतीरथनहिकोई॥ पत्रनहीतुलसीसमहोई॥ ४२॥ नेतुलछीह
१५० रिजीकोप्यारी॥ तातैंहैसवमैंअधिकारी॥ ऐसीकथाकहीहमसारी॥ ना
280 रदजूवैकुंठपधारी॥ ४३॥ सकलकथासुनिकैंतवयही॥ अर्जुनसवराज
नसौंकही॥ चंद्रहासतहाराजकहाए॥ सबचलिकैंकौतलपुरआए॥
४४॥ यहांकथाजैमुनिरिषिभाषे॥ राजाजनमेजयसोंआषे॥ यहक
थासुनैसुनावैकोई॥ ताकोअवहोतपुण्यफलहोई॥ ४५॥ अरतेपावैमु
क्तिअनेका॥ कहैसुनैकरिवुधिववेका॥ कीरतिहोयलोकयामांही॥
मरनकालजमभैनांही॥ ४६॥ दोहा॥ सुनैकथायहलोकमैं॥ ताकीकी
रतिहोय॥ मरनविषैवैकुंठमैं॥ सदावसैनरसोय॥ ४७॥ इतिश्रीमहा
भारथेअसमेदकेपर्ववर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेचंद्रहास
राजवरननोनाममतावनमोध्यायः॥ ५७॥ ॥जैमुनियोवाच॥

जनमेजय राजा सुनि अवही ॥ कहुयकरही कहत हौ सबही ॥ भयो विहानु वाग मैं गए ॥ चंद्रहास दोउ सुत लए ॥ १ ॥ कवर गए षेलन कै काजा ॥ देषे चरत तहां दोय वाजा ॥ सो लरकन वह घोरा गहे ॥ चंद्रहास आगै आय कहे ॥ २ ॥ तव माथे कौ पत्र वचायो ॥ सुनि कै चंद्रहास सुष पायो ॥ यह आए पंडवन के वाजा ॥ छोडे तिनहि जगि के काजा ॥ ३ ॥ अरघोरे के पीछे आए ॥ अर्जुन अरश्रीकृस्न सिधाए ॥ चंद्रहास पुत्रन सों कहीं ए घोरा एगतहम सही ॥ ४ ॥ तुम इनकौं पकरौ जिन कोई ॥ हम सों इनकी पूजा होई ॥ ऐसे कही सुनु सुषदायक ॥ ए तौ वाज रुजिव लायक ॥ ५ ॥ काहू कौ नहि कियो अकाजा ॥ तौ अव कैसें पकरै वाजा ॥ सो अव घोरें दैहै पठाई ॥ ज्यों अर्जुन देषो त्यों आई ॥ ६ ॥ चंद्रहास वेरु जे घोरा ॥ दे पठए अर्जुन की वोरा ॥ अर्जुन हरि कौं वचन सुनावे ॥ चंद्रहास मिलिवे कौं आवे ॥ ७ ॥ ऐसो

281

छत्री धर्म न होई ॥ ताथी फो जा मिलै जो कोई ॥ तव श्रीकृष्ण कहत हैं वे
ना ॥ भक्ति वछल भक्तन सुषदैना ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णोवाच ॥ अर्जुन मम
भक्त जो कोई ॥ तिन ही सो ऐसी विधि होई ॥ भक्तन को हृछीए ऐसे ॥
चंद्रहास आवत है जैसे ॥ ९ ॥ ताको पुंन्य कहत हौं सोई ॥ सो कपिला ही
ए को होई ॥ अर्जुन रथ ते उतरे जाय ॥ चंद्रहास सौं भेटे जाय ॥ १० ॥ चंद्रहा
सोवाच ॥ हम तौ पहल जुध कों ठाढे ॥ अरु हम संगि सेना व हौ वाढे ॥ हम
जानी अपने मन निते सैं ॥ जगि विधुंस होत है ऐसें ॥ ११ ॥ तातैं जगि विधुंस
न होई ॥ ऐसें तुम सौं मिलनुं होई ॥ अरु यह भयो मिलन को साजा ॥ श्रीकृ
ष्ण देव दासनके काजा ॥ १२ ॥ श्रीकृष्ण दरस करि भए न चीत ॥ अरु हम
तुम सौं वाढी प्रीत ॥ हो अर्जुन राषो निज धर्मा ॥ मेरै तो हरि को आसर्मा ॥
१४ ॥ अरु काहू को सरन न होई ॥ विन श्रीकृष्ण होय किन कोई ॥ तवै चंद्र

हरिपायनपरिहैं ॥ वहैमेहरिजकीअस्तुतिकरिहैं ॥ १४ ॥ सवकोनअलि वोंऐंलाए ॥ प्रभुपरनमिसवनदरसाए ॥ सवग्रहकोसंपतिलेअ्रा नी ॥ दोउवाजअरवेसवरांनी ॥ १५ ॥ अरदोउपुत्रमहासुमारे ॥ एस वहरिकेंपायनपरे ॥ अपनौंराजसकलसवसाथा ॥ सवहीदयो कृस्नकेहाथा ॥ १६ ॥ तवेकृस्नजूकियोउपाय ॥ चंद्रहाससुतनि कटवुलाय ॥ अपनोंहाथसीसधरिलयो ॥ उलटिराजपुत्रनकोंद यो ॥ १७ ॥ कृस्नचंद्रनवभएसुनाथा ॥ पकरेचंद्रहासकेहाथा ॥ देष्यो चंद्रहासयहमेरो ॥ मैजकरौभक्तनकोहेरो ॥ १८ ॥ अरअर्जुनसंभे सेंभाषी ॥ सुनोधनंजयइनकीसाषी ॥ वालपनातेमोकोंध्यावे ॥ तौप रसिधिकोंनमोहिपावे ॥ १९ ॥ चंद्रहासकीकथासुनावे ॥ तेनरसहि भक्तनरपावे ॥ अरयहकथासुनैजोकोय ॥ श्रीगोविंदभक्तिनितहोय ॥ २०

283

जै॰ अ॰
१४२
284

दोहा॥ सदा वसै तै कुंड नर ॰ ॰ कथा सुनै जो कोय॥ गंगा मं छुयाए जे मक॰ लः महा पुन्य फल होय॥ २१॥ इति श्री महाभारथे अश्वमेदके पर्वे वनेनेजैमुनिजनमेजेसंवादे चंद्रहास श्रीकृष्ण मिलापनो नाम अष्टावनो ऽध्यायः ५५८॥ ॥जैमुनियो वाच॥ सुनि राजा अव क॰ हत हो ः कथा सुनो दे कान॥ चंद्रहास वन कों गए ः ताको करौ वषान॥ १॥ चौपई॥ विषिया सुत कौं दीनो राजु॥ आपन गए तपस्या काजु॥ अ॰ रवे घोरे पछिम गए॥ फिरि पीछे उत्तर कौं भए॥ २॥ घोरे जाय उदधि मे पैठे॥ तव अर्जुन देषत ही वैठे॥ अर्जुन आदिक हते सव राजा॥ कैसें कृष्ण सुधरि है काजा॥ ३॥ कहो वाज कैसी विधि पावे॥ या समद्र सों कैसें आवे॥ वोले कृष्ण गए अपवज हां॥ पंच जनन की है गम नहां॥ ४॥ साची कहै और को नाही॥ उतरै कौन उदधि के माही॥ हंसधुज राजा

एकनाम॥ औरतहांअर्जुनकौकाम॥४॥ दोहा॥ मयूरधुजग्रमेचलें चलौ हंसधुजमें॥ ववुवाहंनअरजनचलौ औरनकीनहिगम॥५॥ श्रीकृस्नआपपांचौजन॥ मिले॥ अपनेअपनैरथचढिचलेतेववनजायसमहहिदेष्यो॥ तामैएकरषीस्वरपेष्यो॥७॥ अरवहतपआपनैहाथा॥ लयेंपुरानुवरकौपाता॥ लागिरहेमकरीके जाला॥ एसववोलेदेषिहवाला॥८॥ नमसकारपांचोमिलिकियो॥ तहांरषीस्वरआदरदीयो॥ वैवगदालिरषीस्वररहे॥ वडेतपस्वीतिनकोकहैं॥९॥ वैठेरहैपातकीछाया॥ तिनकौंकछूनकरिहैमाया॥ तवअर्जुनवूझीछिनमाय॥ केतेवर्षरहएरिषिराय॥१०॥ घरनवंनावतकहैगुसांई॥ वैठेएकपातकीछांई॥ तापरपंछीरहतअनेकमकरीकियोजालतहांएक॥११॥ अंघनमेदोइउठेपरास॥ तिनमैं

285

जै॰स्व॰
१४२
286

वहीपंछिनकोगाय॥ अत्रीनमहंतरहतमवपंछी॥ करिहैकेलि सकलमनअंछी॥१२॥ आगेयाछेरहततुम्हाये॥ नहाेरहतहैजीवपु पारै॥ महंनेनदेषितहांबोले॥ नवबगदालिरिषीसुरवोले॥१३॥ वगदाल्योवाच॥ अहेअर्जुनतुमहमसोसुन॥ अस्त्रीकिएहोत दुषघन॥ श्रीपरमेश्वरसुपरिहैवीच॥ तातेइनकीसंगतिनीच॥ १४॥ काहेतेमोतुमसोंकहैं॥ एत्रकलित्रमोहिमनरहैं॥ पुनिनाही सुधरतयहलोक॥ तामेरहतसुषनकोसोच॥१५॥ दोहा॥ तातेघ रनाहिनकरे॥ रहेंपातकीछाह॥ थोरेजीवनजानिकें॥ यहअवन मनमाहि॥१६॥ चौपई॥ फिरिअर्जुनपूछीरिषिराय॥ केतेकल्पभएइ हिभाय॥ अहोगुसांईजह्यांवेठे॥ केतेवषवेकिएतुमपेठे॥१७॥ भईकि तेकल्पनकीआव॥ सोहमसोंभाषोरिषिराव॥ तववगदालिरिषी-

सुरकही॥ तुमसौंकहौंश्रावकीसही॥ १८॥ मैजुश्रावकीकछुनजांनं
बवरीभईसोतुमहितठांनं॥ मोकौंश्रावतनकसीलागै॥ ब्रह्मावी
समएमोश्रागें॥ १९॥ च्यारंजुगबीततहैतवहीं॥ तवएकचोककहैत
हैसवही॥ ग्रेसेचोकवहतरिहोई॥ एकइंद्रश्राउषासोई॥ २०॥ सत्रच
श्रटमजुगविलानें॥ ब्रह्मादोयजांमकरिमानें॥ ग्रेसेदिनबीतेतव
तीसा॥ मासदोयदसहोयवरीसा॥ २१॥ ग्रेसेवर्षएकसतवीते॥ तववे
कालविरंचिहिजीते॥ ग्रेसीतुगतेब्रह्मासोई॥ फिरिवहब्रंचकाल
वसहोई॥ २२॥ दोहा॥ तवएकब्रह्माहोतहै:सुनऊधनंजयवात॥ म
हाप्रलयतवहोतहै:एकरूंषरहजात॥ २३॥ चोपई॥ वाकोरूंषरह
तएकहां॥ श्ररमवप्रलेहोतहैजहां॥ तामेएकस्यामसीमूरति॥ वालक
एकरहतवहोसूरति॥ २४॥ लरोंदाहनेपावश्रंगूठा॥ मुषमेधरेपावतहै

जै·स्व· १८०

२८८

इठा॥ अपनोंपावअगणनारूषे॥ सोवालकरीषेवारूषे॥२५॥ सोश्री
कल्लषडेहैंग्याही॥ हमअतषिजानतहैंनाहि॥ तुमअतहितठहैहौ
आय॥ अवकेंमेंतुमरहोडुराय॥ २६॥ अहोकल्लजूसुनियोवाता॥ तु
मजवरहेहछकेपाता॥ नवतुमपेकछुमाग्यो नाही॥ तुमलोठेपात
नकेमांही॥ २७॥ धनसंपतिकछुमागीनाही॥ अवमागतहोमोम
नमांही॥ अवेग्रकेलोमागतएऊ॥ अवमोहिआयमालंघनदेऊ॥ २८॥
अवतुममोहिभेटिकिनमिलो॥ अपनेनगमोहिलेचलो॥ अपनी
अलीअहदिषावो॥ मेमांगीमोमोंहितलावो॥ २९॥ मुक्तिरूपहेंश्री
याजाकें॥ घरवेकुंठहोतहैताकें॥ सोअवमोहि[illegible]लहलजोतु
मभएदासपेप्रल्ल॥ ३०॥ ताकेकाजतपस्याकीनी॥ घरनहिकछोति
यानहिलीनी॥ अर्जुनमेंइनसोंयोंनाते॥ याहीपाततेरैदिनकाटे॥ ३१॥

289

वगवानोवाच ॥ तवै कृस्न सौं वोले वैना ॥ मै देषे अपनै निज नयना
ऐसौ ही तुम देषे यहा ॥ प्रले स्यंध मे देषे जहा ॥ ३२ ॥ वैसे के वैसे तुम
देषे ॥ देषो तुंम्ह तव होत हमपे षे ॥ मो आगे भए ब्रह्मा वीस ॥ तुम वैसे
ही हो जगदीस ॥ ३३ ॥ तैसे तव तैसे ही अवै ॥ देषत गर्व गयो मम
सवै ॥ अहो गुसांई जू श्री कृस्न ॥ परमदयाल प्रीति सो प्रस्न ॥ ३४ ॥
व क्यो गर्व मे मो जिय आन्यूं ॥ सवत्ते वडौ आपकौं जान्यूं ॥ ब्रह्मा वी-
स भए मो आगे ॥ ताते गर्व वहोत माहि लागै ॥ ३५ ॥ हूं जे वडो ही भयो
अचंभा ॥ मो देषत वीते के उ ब्रंभा ॥ मै हूं वहोत दिनन कौ भयो ॥ मेरो
गर्व सकल तुम षोयो ॥ ३६ ॥ तुम हो सव मै वडे गुसांई ॥ तिनके नाम
लेत अघ जांई ॥ ए वातै रिषि हरि सौं आषी ॥ वहोरि वात अर्जुन सौं भा
षी ॥ ३७ ॥ वगवानोवाच ॥ अर्जुन वात सुनत अव मो सौं ॥ अगली

जै॰स्व॰ कथाकहतहोतोसो॥ एकवेरब्रह्माउठिधाए॥ चलेचलेमोआश्रमआ
१८५ ए॥३८॥ मोसुंकहीपुत्रतुमऐसो॥ कहापानकीछायावैसो॥ तुममोसों
२९० कछुकवरमांगो॥ मेंआयोममपायनलागो॥३९॥ तैमैंवहु.रिब्रह्मसो
कही॥ तुमब्रह्माआएहोसही॥ पैतुममोहिकहावरदैहो॥ मोआ
गेतुमहीचलिजैहो॥४०॥ तुमतेब्रह्मामेरेआगे॥ कितियकगएर
हतइहिआगे॥ केतेवृंदआवकहिगए॥ केदेषतकेतेह्वभए॥४१॥
ऐसेंकहतउदुहमदोउं॥ अर्जुनकथाकहतहोमोउं॥ उडनरूपउप
रिकोदेष्यो॥ वहोपंछिनकोवासापेष्यो॥४२॥ उमरिमाहिजातहे
चले॥ जीवजानिआगेवहोमिले॥ बाउंमरिमेंहमचलिगए॥ देषत
एकअचंभारहे॥४३॥ जैसेब्रह्माआएइहां॥ ब्रह्माएकऔरहूवहा
वाकेदेषेआननआठ॥ वेठनहांकारनहेपाठ॥४४॥ दोहा॥ वनजक

हौतुमकौनहौः त्यांग्राएकहिकाम॥कहानुम्हारोनामहैः रहौकौ 291
नविश्राम॥४५॥चतुनंनग्गेसेकहीःब्रह्मलोकममधाम॥हमया
एसतलोकतेःपरमजोनिहैनाम॥४६॥चौपई॥एजुहमारेकहि
यतसिष॥नामतासवगरायलरिष॥तवग्रष्टानन्नबोलेसोई॥तुम
दोउमेरेशिषहोई॥४७॥मेरेढिगरहवोकिनकरौ॥ठौरठौरकाहे
कौंफिरौ॥एकसिषपानीकोजावो॥एकपावपषारनारीलावो॥४८॥
ग्रष्टाननयहवचनसुनायो॥तामेएकमगूरागायो॥तामेहम
तीतुंउढिगए॥दोउसमुषब्रंभाढिगरहे॥४९॥वनकहीकौनक
हातेग्राए॥तवहमवनकौंनामवताए॥एनोब्रह्माकहियतग्रहि॥
हमवगदालिकनामहैनाहि॥५०॥सोरठा॥सुनिग्रष्टाननएकदी
स॥उडेचवहमजातहे॥जाकेमुषवतीस॥ताब्रंह्मकैढिगगए॥५१॥

जै॰ष्व॰
१४६
292

दोहा ॥ तव वोले वतीसमुष ॥ तुम च्यास्युं कहो कोन ॥ तव ब्रंह्माने इह कही ॥ वहोरि गहो तिन मोन ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ तव कछु एक भग्रूग्राए ॥ तामे पांचो ब्रंह्म उडाए ॥ चोसठि मुष ब्रंह्मा लग गए ॥ सो भी इन कौ रूछ न भए ॥ ५३ ॥ ऐसे उडत फिरे वहु तमा ॥ पायो नही कछू विश्रामा ॥ ऐसे उडत तहां हंस आए ॥ सहस्र मुष ब्रंह्मा तहां पाए ॥ ५४ ॥ सकस नंदन सेवा करे ॥ तिन की वहु अस्तुति उचरे ॥ सहस्र मुषी ब्रंह्मा यं भाषी ॥ तुम नीकें हो यं मुष भाषी ॥ ५५ ॥ तुम सव ही नीके हो भाई ॥ कोंन भाति तुम ह्यां चलि आई ॥ ५६ ॥ ऐसेव वन सहस्र मुष कहे ॥ अंतरध्यान करत ही भए ॥ गए कछु तें ब्रंह्मा ते सव ही ॥ देष ता हंस कल मिलित व ही ॥ ५७ ॥ तव इन ही कोगर्व गुमाए ॥ तव चलि आपने लोकन आए ॥ आए मैं ह्यां को ह्यां ही रहो ॥ सो विस्तं तं कहत नाहि कै

293

ह्यो ॥ ५८ ॥ तातें अर्जुन गर्व न भलो ॥ गर्व तजौ निगर्व ह्वै चलो ॥ तव
यह कथा सकल सुनि लीनी ॥ अर्जुन तवै डंडवत कीनी ॥ ५९ ॥ दो
हा ॥ कथा सुनत आनंद भयो लषैं तहां दोउ वाज ॥ घोरा गहि
आगें किए संगि चले रिषराज ॥ ६० ॥ इति श्री महाभारथे अस्वमे
द्के पर्व वरननो जैमुनि जनमेजे संवादे वग दाल्भ्य वाकि नोना
म गुण महिमाध्यायः ॥ ५८ ॥ जैमुनियोवाच ॥ फिरि यह कथा सु
नो हो राई ॥ वहुरि कहूं तुम सों समझाई ॥ अहो राजन तव कौतें धाए ॥
जे हय देस तहां चलि आए ॥ १ ॥ दोहा ॥ जे हय कों वेरा करौ ॥ हंसीला
ता की माय ॥ करि अपने दरवार मैं वेठे सभा वनाय ॥ २ ॥ षटपद ॥ वे
ठे सभा वनाय हंस ध्वज आए जाने ॥ अरु अर्जुन है संगि सुनन ही अति
हरषाने ॥ वैठे हो गिरि परे सभा सव देषि हवाला ॥ संघासन पै वैठि

जै॰ स्व॰
१४६
294

आनछाडेनतकाला ॥ समामाऊ अचिरजभयोकोनभांतिकीनीदई ॥ संग्रामसनपैगिरे तहांदैरिदुसिलागई ॥ ३ ॥ चोपई ॥ दुसीलाउवाच ॥ अहोपुत्रतुमकैसीकीनी ॥ अपनीमोचमोहिकिनदीनी ॥ तुम तोयहेअवस्थाधारी ॥ कोरछ्याअबकरेहमारी ॥ ४ ॥ मेदुसीलाही दुषअतिभई ॥ हेप्रभुअबऊकैसीकरी ॥ एकपुत्रसोऊयहमसो ॥ मेरोसबसर्वसहीहरो ॥ ५ ॥ तबदुसीलाअर्जुनलेआई ॥ तहांजायि यहबातजनाई ॥ तबैऊनसोंकियोप्रनाम ॥ कहीप्रभुमेरोएकैकाम ॥ ६ ॥ हेप्रभुमोकोंडरतेराषो ॥ मोदुषबहैतहरिकरिनाषो ॥ मोकोंडरतेलेऊउबारी ॥ मेआईप्रभुसरनतुम्हारी ॥ ७ ॥ मेअर्जुन कीफूफीआहि ॥ मेरेसबदिनदुषमेजाहि ॥ तबअर्जुनसुनिपाय नपरे ॥ पानिजोरिबऊविनतीकरे ॥ ८ ॥ अर्जुनउवाच ॥ कीनूं

॥ वमारथमैवात॥ हमतेवहोतमयोग्यपराध॥ सोऽस्ववकसोहम

कोएडु॥ आरितत्वकेहाथीलेडु॥९॥ डुमीलावोच॥ हाथीतेरे

लेकहाकरिहं॥ तोउतापतेवडुडुषमरिहं॥ तोउतापतेरंडा

मई॥ मत्होपुत्रअवसवहीगई॥१०॥ तोहूतोहिलाजनहिआई

फूफीइतनीवातसुनाई॥ इतिकहतनवरोवनलागी॥ दीनव

चनमुषसोवहोपागी॥११॥ तववाकोंअसोडुषदेषि॥ तवैकल्ल

जेकहीवसेषि॥ श्रीकल्लउवाच॥ होडुसीलातुमरोवोनाही॥

तेरीदयालगीमनमांही॥१२॥ तहांचलोनहांपुत्रतुम्हारो॥ अ

वतुमदेषोमंत्रहमारो॥ तहांगएश्रीजाडुराई॥ डुसीलापुत्र

लषेतहांजाई॥१३॥ डुसीलाकोवालकतहांमस्यो॥ देष्योसंगा

ननमेपस्यो॥ तवैकल्लजअपनेंहाथ॥ छीयोवहोरिकहीयहवात॥

295

जै०स्व०
१५८
296

१४ हो बालक तुम अवडर छाडौ। मेरे कहे होउ उठि ठाडौ। बात कहत उठि ठाडौ भयो। रोगि लोक लजै के पद लयौ। १५। औरलो गहाके सब कोई। करि है हरि की अस्तुति सोई। हे प्रभु तुम्हारी कहा अचंभा। राषे धर अंबर बिन थंभा। १६। शेन वंद्र करु नाम यह देवा। तुम्हारी को इन पावै भेवा। तुम्ह अदैत अनंत अविनासी। मुक्ति सदा तुम चरनन दासी। १७। सब मिलि ऐसी अस्तुति कीनी। अरु हरि को परदछिना दीनी। हरि दुसीला को पुत्र जिवायो। सुनि यह बात सबन सुष पायो। १८। तब बनग्राम बधाई। दुसीला आनंद उर न समाई। अर्जुन दुसीला को ले चले। तब वह हथनापुर को पिले। १९। दोहा। दुसीला को ले संग तब चले नागपुर जाय। सो अब आगें कहत हो सुनि जनमेज

यराय॥ ८०॥ इतिश्रीमहाभारथेअस्वमेधके पर्ववर्नने जैमुनिजनमेजेसंवादे अर्जुनहस्तनापुरआगमनोनाम साठिमोध्याय ॥ ६० ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ सोरठा ॥ हो जनमेजैयराज ॥ बरसदिनासव भोमिपे ॥ फिरी जगिकोवाज ॥ संगिफिरे श्रीकृस्नजू ॥ १ ॥
दोहा ॥ हथनापुरकेबागमें गए नकुल सगिसेन ॥ तव अर्जुनसों कहत हैं बहुरि कृस्न सुवेन ॥ २ ॥ श्रीकृस्नउवाच ॥ तुम अर्जुन ह्यांहीरहौ हमजे हैं पुरनाग ॥ सवराजनकी संगितुम रहियोआगें आग ॥ ३ ॥ षवरिकरी श्रीकृस्नजू हथनापुरमेंजाय ॥ द्वारपालदोरे तहां गएराजढिगधाय ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ अजजुधिष्टरराय कहीजु आए कृस्नजू ॥ अवकछुमोजनदिवाय ॥ अर्जुनआए संगिवहु ॥ ५ ॥
चौपई ॥ सुनिराजा उठिठाढौ भयो ॥ दौरिकृस्नजूकेढिगगयो ॥ आगें

जै॰च॰ हायलैनकौंत्र्याए॥ त्र्यायकुसलकोदरसेनपायो॥६॥आयकुसलसौंकि
१५६ योअनामा॥यूंकहिसुफलफलेसवकामा॥तवैकुसलजुधिष्टरेकही॥
298 राजात्र्यर्जुनत्र्याएसही॥७॥त्र्यरत्र्याएहेनीवाकेराजा॥तिनकेसंगि
त्र्याएवहोराजा॥वनकोनामकहतहैंत्र्यवही॥वडेवडेराजनकेस
वही॥८॥छंदपधरी॥त्र्याएहेराजाहंसधुज॥तिनवाजसंगिवहो
कियेहेजुज॥त्र्याएनृपकुंभेकमोरधुज॥तिनभक्तिकरीममधारिगु
ज॥९॥त्र्याएनीलधुजएकराजजानि॥तिनगहोवाजवहोजुधठा
नि॥त्र्याएसलिचलेत्र्यर्जुनसुसंगि॥रहेसमरमाहिवहोजीतिजंग
॥१०॥त्र्याएवीरउंनएकराजसोय॥तिनसंगिपुत्रतहांपंचहोय॥त्र्या
एजोवनासराजासुवेग॥तिनवहोतसमरमेकाधितेग॥११॥त्र्याएचं
द्रहासराजप्रवीन॥तिनिवालत्र्यवस्थाभक्तिकीन॥नामरधुज

299

ग्राएसुभटसूर॥ तिनजुधकियोवहोहमहजूर॥ १२॥ दुसीलासुत

ग्राएराजजांनि॥ तिनततजेप्रानवद्धसंकमांनि॥ वद्धवाहनग्राए

श्रीतनपाल॥ तिनसेसमहतजीत्योपताल॥ १३॥ नामरथुजस्याएसुत

ऊराज॥ एकसावकरनसंगिइहजबाज॥ प्रदमनिस्राएरुकमनिक

नार॥ अनुरधआएसुततासलार॥ १४॥ स्राएहषकेतसुतकरनए॥

क॥ तिनिसमरजीतिजोथाअनेक॥ तिनवडीतपस्याकरिहेजांनि

तेआएरिषिवगदालिनाम॥ १५॥ अरआएहैएकसोमरिष॥ अपने

तिनकेसंगिवहोतसिष॥ एसवहीहमदीएवताय॥ अवआगेंकैली

जैलिवाय॥ १६॥ चोपई॥ ऐसेंकहीकृस्नतवमिले॥ तवप्रभुअंततहे

पुरकोचले॥ कुंतीमाकौंकियोप्रनामा॥ वहुरिचलेरुकमनिके

धामा॥ १७॥ भीमसेनकीपकरीवांही॥ ऐसैंमंदिरकौंलैजांही॥ तहां

जै. अ.
१५०
300

रुकमनी वैठी धामा ॥ अरु आपन वैठी सति: भामा ॥१८॥ आवतें देषे
श्रीजदुराई ॥ उठि वैठी तव सा म्हो आई ॥ आय कुसल सों कियो प्र
नामां ॥ फिरि हरि कै वोली सतिभांमां ॥१९॥ तुम अर्जुन र
धाए ॥ तातें सवडणमी फिरि आए ॥ कितेक कवारी करी ॥ कहु
न मिली एक वादरी ॥२०॥ ऐसे वचन कहे सतिभांमा ॥ निठुर व
चन हासी के कामा ॥ तवै कृस्न जु फिरि जु आगे ॥ भीमसेन सु
षहे रन लागे ॥ तुम कछु या मै समझे नांही ॥ हम जानी अपने मन
मांही ॥ एथुं कह्या कहत कछु पायो ॥ तो लौं राज वुलावो आयो ॥
२१ ॥ दोहा ॥ तव हरि राजा लघगाए: मनो करत नरनाह ॥ सवै
वुलाए नग्र के: लेन चले महा वाहु ॥२२॥ छंद भुजंगी ॥ कही
रावू सव नग्र मै देऊ हेरा ॥ पर दार सव नाग पुर करऊ फेरा ॥ सवै

नागपुरहर्षेसुनिसब[illegible]धाए॥ योंकहतधनिजोंममहावाङ्ग
गाए॥२४॥ तक्रुवस्त्रअनमोलसबनअछाए॥ वहोहीरजुहारवा
जारलाए॥ जहांरतनमनिजटितजौंहारजालं॥ सबधांमहीधां
मकरिवंद्रमालं॥२५॥ संगारिसबधरेंहवेलीहवेली॥ मनुलाल
मुनिपंक्तिगावेंसहली॥ तहांबाजिअनहदछतीसबाजा॥ तहांच
लेसबरायकेसंगराजा॥२६॥ वहोभीरबाजारमगनांहीपावत॥ ते
नगरकीनारिसबचलीहैंगावंत॥ कितेनारिनरआपनिजद्वारिठा
ढे॥ तेलऐंकरिआरतीमोदबाढे॥२७॥ अरचलीसबराजमगिस
ङ्गिमारी॥ बारंगनाऊरनततहांनृतकारी॥ तहांनामपुरगुनीजनक
लखाये॥ तिनहीरजौंहारवहोदांनपाये॥२८॥ चौपई॥ वंदीजन
वहोतेनहांधाए॥ अरतहांबाजावहोतबजाए॥ ऐसोराजभयोउ

301

जै॰अ॰
१५१
302

छाकु। लैन चले सब ही महा बाकु ॥२९॥ ओर त्रिया आइ व हो राजा बगदायल दरसन के काजा। अर सब हिन मुनि कै सुष पायो। अति आनंद सौं अर्जुन आयो ॥३०॥ दोहा ॥ चले नागपुर लैन सब: सभा सहत नरनाह। कहिन जात आनंद की: घरि घरि व हो त उमाह ॥३१॥

इति श्री महाभारथे असमेद के पर्वे बने ने जै मुनि जनमेजय संवादे नग्र पवित्रनो नाम इकसठिमो ध्याय ॥६१॥ ॥जैमुनि योवाच ॥ छंद वेषरी ॥ मुनि राजा अब कहत है: सब सुन मुष आए ॥ मंगल गावैं मंगलाव हो कलस बंधाए। सुन मुष ध्याये धर्म सुत: सब हिन दरसाए। अपने अपने अरथ सब राजा नम गाए ॥१॥ अर्जुन अपने अर्थ चढि राजा सब मारे। अपने अपनें अर्पै पै सब ही अस वारे। महा बाजु राजा त वै मिलि नुजा प मारे। ओम स हत्त सब सों मि

303

लेआनंद उरधारे ॥ २ ॥ तिआए राजा नरवग हा वाकु वनावै ॥ सबके लै

लै नाम गांम राजाहि मिलावै ॥ तैसे मिलवैधर्मसुन नत्यं हीसुषपावै ॥

करत वीन नारीन के वहौप्रीतिवढावै ॥ ३ ॥ ऋ के चलेन्टप नग्र कौ

कूरऐग्रसवारे ॥ किते नाग गजा गै चले नीसान फरारे ॥ स्न नह टवा

ताबाजिए वकुसर सन नगारे ॥ किते वाजराजान के वहौ साज संगारे

॥ ४ ॥ किते गयं दमतं गवहै मे घाडंवारे ॥ कित्तेमतंगमातेमरस

जिम स्याम पहारे ॥ साजस्यंगारे मरव: उज्जल दंतारे ॥ स्यं घघ

टाजुमेघकी: वुगउठतउजारे ॥ ५ ॥ गुन गंधर्फ गांवै सरस: व

जुराग उचारे ॥ नाचत है वारंगना: वहो रतनचारे ॥ कलसपता

का धाम धाम घर घर हीसारे ॥ रतन जटित वहो हीरचीर: वाजारसं

गारे ॥ ६ ॥ चढि चढि मंगल गांवही: महले वाजारे ॥ कंठ को किलासु

जै॰ अ॰
१५२
304

रसरसतिनहूं तें प्यारे॥ देषिसकलसंपतिन्रपतिहथनापुरवारे॥
ते आए राजा न सब: सक्के अवगारे॥७॥ अब आवत अहै राजा के: स
वही न्रपलारे॥ घरिघरि लै महावाडु पै: आरती उतारे॥ और लषत
है न्रप सिकल आए ते सारे॥ एक बतावे सब कों कोउ जानन हारे॥८
ए आए न्रप हंसधुज हाथी असवारे॥ ए नीलधुज आए है: न्रप मांड
ववारे॥ ए आए न्रप मोरधुज: नाम्रधुज लारे॥ रतनपुरी तजि के इहां
जगि माहि पधारे॥९॥ ए बब्रुवाहन आय है: इन जीति पतारे॥ मेन
पुरी धर थंभ ए: जो धानु जभारे॥ चंद्रहास आए न्रपति: इहे हरि ध्या
रे॥ कौतलपुर के राज है: अति ही हरि प्यारे॥१०॥ वीरब्रंभा आए अबै
देषो किन सारे॥ नग्रसुरस्ता छाडि के: सुत सहत सिधारे॥ ए आए न्र
प जोवनास: रसु वेग सिधारे॥ अर्जुन संग सिधारिए: मङ्गावती वारे॥११

रिषवगदायलग्राइहेः देषोकिनसारे इनग्रागेकेतेविरंचिःकीए ग्रवमारे एसोमनरिषग्राईः संगिसिषहेसारे करौदरससवही नकोः तपतेजग्रपारे १२ एहषकेतपधारिएः राजावहोप्यारे एथरमनिग्राएइहांरुकमनीकवारे ग्रनुरथग्राएसंग्रहीःदेषोए वारे ऐसेसवजवताबहीवहोजांननहारे १३ दोहा ग्रैसेसव ग्राएनगरिःसुनऊंराजपरबीन सवहिनकोंडेरादएःसमाधान वहोकीन १४ चौपई ग्रर्जुनकुंतीमासोंमिले नेनप्रवाहदोउदि सिचले घोरावावाधग्रानिवहांही ग्रागेंवेधेऊत्तेतहांही १५ स वराजनकोंडेराहीनुं समाधानसवहीकोकीनुं रातेवद्रोपतीवुला ई वेरनलगीतहांचलिग्राई १६ द्रोपतिसोंगठजोरीकीनी जगि सोंजसवहीयरिलीनी उजरेउजरेवैलमगाए कंचनहरसों-

जै.स्व.
१५२
306

मोमिजुताई ॥१७॥ नववगदालिरिषीसुरआए ॥ वनहिआदिरिष सवैवुलाए ॥ च्यारिच्यारिईटैधरिलीनी ॥ तिनकीजोत हांवेदीकीनी ॥ आठआठतहांद्वारवनाए ॥ जैसैंजोनहांमंडपछाए ॥ गरतहांवंदरवारवंधाई ॥ लीएआठकुंडकरवाई ॥१९॥ ओरसोंज कछुजगिकीहोई ॥ राजासकलमगाईसोई ॥ पलासकेकीनेष टषंभा ॥ कीएपांचवीलकेथंभा ॥२०॥ ....ववहेराकेतहांधरे ॥ सवेगाडिकैमंडपकरे ॥ आचारजव्यासजूकराए ॥ ब्रह्माइसवहीरिषआए ॥२१॥ ओरतहांवगदालेयेधरे ॥ व्यासदेववासेह करे ॥ गौतमअत्रीआएतहां ॥ परसरामभारद्वाजजहां ॥२२॥ जमदग्नि कौडंन्यमासुरी ॥ सुमतओरकौडंनडुंकरी ॥ जातिकरनअआलाय सिधाए ॥ सोमरिषिलवकुसचलिआए ॥२३॥ रनतोसवरातीज

307

गधरे॥ ज्वालमालअछनमिलिकरे॥ बोलेब्यासराजमुनिलीजे॥ त्रीया
पुरषगठजोरीकीजे॥२४॥ चौसठिकलसगंगाजलचहिए॥ सोअब
त्रियापुरषमिलिजइए॥ गंगोदिककौंएरिषचले॥ अत्रेयअरुरव
सेहमिले॥२५॥ क्रस्नरुकमनीकरिगठजोरी॥ चलेगंगोदिकमन
नकमोरी॥ अर्जुनओरसहोद्राकीनी॥ भीमहरवसीकौंसंगिली
नी॥२६॥ ब्रषकेतवब्रवाहनजाय॥ अपनीअपनीत्रीयाबुलाय॥
हंसधुजमोरधुजराजा॥ एभीचलेगंगाजलकाजा॥२७॥ अपनी
अपनीत्रियानकोरी॥ सवराजनकीनीगठिजोरी॥ कंचनकलस
लिएंनिजहाथा॥ सवहीचलेएकसमसाथा॥२८॥ तवनारदएक
वातवषांनी॥ सुनंएकसतिभामारांनी॥ रुकमनिसौंगठजोरीकी
नी॥ तुमकौंक्रस्नसंगिनहिलीनी॥२९॥ नारदसौंवोलीसतिभांमां॥

जै॰ स्व॰
१५४
308

बैठे कृस्न हमारे धांमा ॥ नारद गए सत्या के धांमा ॥ देषि कृस्न कों करी प्रनामा ॥ ३० ॥ नारद जामोती लग जाय ॥ एही बात तै धरी वनाय ॥ तिरी कृस्न ग्रव ज्ञा कीनी ॥ रुकमनि गांठि जोरि संग लीनी ॥ ३१ ॥ जामोती उतर यह सारैं ॥ श्रीहरि वैठ धाम हमारैं ॥ नव जामोती के ग्रह श्री ए ॥ तहां कृस्न वैठे ही पाए ॥ ३२ ॥ कालिंद्री के नव हां तें आए ॥ ऐसे फिरि औरन के धाए ॥ पुरिष फिरे सकल ग्रह मांही ॥ विना कृस्न ग्रह कोई नांही ॥ ३३ ॥ वहौरि ज्ञांनि देषै जोज हां ॥ पानी लेन जात है तहां ॥ लीने संग रुकमनी रांनी ॥ तिन मेष भुजा तहे पानी ॥ ३४ ॥ नारद बसिष्ठ सव रिष आए ॥ गंगोदिक सवही भरि लाए ॥ और तहां वाजंत वहौ वाजा ॥ आए तहां जुधिष्ठर राजा ॥ ३५ ॥ द्रोपति सों गांठि जोरा कीनै ॥ कंचन कलस हाथ मै लीने ॥ ले गंगोदिक धोरा पापे ॥ गंगोदिक

309

(लै) हीसोमपरायो॥३६॥दोहा॥गंगोदिकहाथमैं:लीन्हौंवाजन्ह
वाय।अवैकक्रंन्रपहोमकी:सुनियोहैनलगाय॥३७॥इतिश्री
महाभारथेअसमेदकेपर्ववर्ननेजेमुनिजनमेजेसंवादेज
गिवर्ननोनामवामठिमोध्याय:॥६९॥ ॥दोहा॥वहोरिकथा
अवकहतहो:सुनिजनमेजयराय॥रायजुधिष्टरजगिमैं:धरी
सौंजसवलाय॥१॥सोविधिहोनलगीन्रपत्ति॥करतसकलरिष
राय॥जाजगिमेश्रीक्रस्नजू:भएटहलवाआय॥२॥चौपई॥अ
र्जुनभीमअरुश्रीक्रस्न॥भयेटहलवाजगिकेप्रस्न॥सोएटहल
करतजगिमांही॥रिषिजनकोंडंडोतकराही॥३॥अरुश्रीक्रस्नक
रतसतभाव॥सवरिषिजनकेधोएपाव॥अरुडंडोतसवनकोंकरी॥
सवकेआगेपुजाधरी॥४॥राजाकरिसवकोसुनमानदैनलगेस

वहीनकोंदांन॥ओचहियतसोहीनपदेन॥घोरेहाथीग्रैसमेत॥
५॥ऐसीभांतिदानदेकवके॥भएमनोरथपूरनसबके॥तवैजुधि
ष्टरवाजमगाए॥सावकरनदोउलैआए॥६॥वाजन्हवायजगिमें
लीए॥चउंतरेलगिगाठकीए॥तवघोरेकोंइधपिवावै॥तवबैरू
पनैसीसहलावै॥७॥तववहतातपजेमनमान्यों॥नकुलतहांरू
पनैजियजांन्यों॥पूछीतवेजुधिष्टराई॥घोरेकहाकहतहेंभाई॥८॥
नकुलोवाच॥नकुलकहीअवसुनिएराजा॥ऐसेकहेंजगिमेंवा
जा॥वैकुंठसुषहमचाहतनांही॥ऐसेवाजकहतमनमांही॥९॥
जाजगिमाहिकुलजपरसन॥ताकोअवस्यकरिएदरसन॥घो
रात्रौरकहतहेदेषो॥मोहिकुलसुनमुषहोयपेषो॥१०॥औवेवा
जराजयौंसही॥ऐसीवातनकुलनैकही॥तोलौंअसुरछ्यासुनि

लीनी॥ तौलैं रिषन और विधि कीनी॥ ११॥ तवव्रन रिषन आपनैपा
न॥ चाप्यौ अमुकौ वाउ कान॥ कानइध की धारा चली॥ वानयहै अ
चिरज की मिली॥ १२॥ देषि भयो अचिरज को साज॥ सवै रिषन नत व
ए ज्यौवाज॥ भीमसेनितवनिकट बुलाए॥ षड्ग हाथमे लीऐं आ
ए॥ १३॥ धूम रिषी सुरवृन कौं कही॥ अश्व मारन की अग्या दई॥ क
ही भीमतुम मारौ वाज॥ अव आयो या अश्व को काज॥ १४॥ सोरठा॥
भीमसेन तिहिं ठांइ॥ आय वाज कौं मारियो॥ पर्यौ वाज जगि मांहि॥
अनहद वाजा वाजिए॥ १५॥ सर्व रिषिन मिलि आय॥ करत लोम
सो वीनती॥ कही जगतपति राय॥ यह अचिरज देष्यौ नही॥ १६॥
चौपई॥ सव न कही जाइ पति नाथा॥ अवलौं मुनीन देषी वाता॥ य
ह अचिरज सव हिन कै भयो॥ वडु रिस कल मिलि ऐसैं कह्यौ॥ १७॥

जै॰च॰
१५८
312

दोहा ॥ तातैं यह श्रीकृष्ण जू ॥ तुम पठ ताप नसोय ॥ तुम बिन सहृ ग्रास स्र जेउ प्रभु ॥ कहै कोन पे होय ॥ १८ ॥ चौपई ॥ तबै कृष्ण जू थै से कहो ॥ राजा को जगि पूरन भयो ॥ तव घोरा मारयो होत हं ॥ निकसी जोति बाहरी जहां ॥ १९ ॥ तहां देषि है सब रिषि राई ॥ जोति कृष्ण मुष मा हि समाई ॥ औरवाजकौ इतौ छंटौ रा ॥ सर्व कष्ट भयो तिहि वेरा ॥ २० ॥ सोरठा ॥ होय गयो तिहि वेर ॥ सव ही रामि कष्ट की ॥ तवै रि षन सव लेर ॥ वह कष्ट रहो म्यो तहां ॥ २१ ॥ व्यासोवाच ॥ चौपई ॥ अव तुम सुन हु जुधिष्ठर राजा ॥ रिषि ग्राए ग्राइ तिके काजा ॥ सो अव इन कों ग्राकु ति दीजै ॥ सुन सहत सुरपति की कीजै ॥ २२ ॥ ईछा इहां इंद्र तुमि आए ॥ सकल संग रिषदेव सिधाए ॥ प्रायइं इकोट रसन की जे ॥ ओर सल हिन कों लषि लीजै ॥ २३ ॥ वहु रिव्यास रिषयन कों

ग्राषे॥ श्रोरसकलराजनसौंभाषे॥ ऐसोजगिकुवोनहिहोई॥ 313
ऐसोजगिकुवोयहसोई॥ २४॥ ऐसोजगिकियोकऊंनांही॥ तैसो
भयोनागपुरमांही॥ सोतुमहीसवराजादेषो॥ ग्रपनेनैननहीमुं
पेषो॥ २५॥ दोहा॥ वहोरिव्यासऐसेकही:सुनऊनृपतिएकवात
याजगिकोधूमरलगत:सवपवित्रहोजात॥ २६॥ चौपई॥ सोतुम
सकलपवित्रभेए॥ ऐसेवचनव्यासजूकहे॥ ग्ररसंतुष्टभयेगोपा
ला॥ याजगितेंतिऊंलोकरसाला॥ २७॥ तुष्टहोयकेतवहरिकह्यो॥
राजाजगिसंपूरनभयो॥ जगिसंपूरनभयोतुम्हारो॥ ग्ररग्रन्तऊ
भयोसम्हारो॥ २८॥ केसोग्रन्तसोग्रवकहे॥ जोकछुसामाजगिकीर
हे॥ जगिकरिकेकीजेग्रस्नाना॥ ग्रोरवचीसामग्रीनाना॥ २९॥ तेसामा
लेसवेलुटावे॥ ताकोग्रन्तनामकहावे॥ चलोराजकीजेग्रस्नान॥

जै॰ष्व॰
१५९
314

रिषअरराजाचलेसवग्रान ॥ ३० ॥ करिअसनानसवनयहकीनी
नवकरहकीग्राकुतिदीनी ॥ जथासक्तिसवहिनकोंदयो ॥ जोक
छुहोमकरनवचिरह्यो ॥ ३१ ॥ सोसवहिनकोंदयोप्रसाद ॥ सवहि
नलयोराजरिषग्राद ॥ राजामकीग्रस्तुतिकरी ॥ कहींकामनास
वहीसरी ॥ ३२ ॥ देवेग्रादिग्रस्तरीनती ॥ करैजाकीग्रस्तुतिजेती ॥
वहौरिजहांश्रीकृस्नसिधायो ॥ राजाकोंग्रागैपहरायो ॥ ३३ ॥ ग्रोरदीये
ग्राभूषनसारे ॥ वहुरयोंसिंगासनवैठारे ॥ सवराजनकीपूजाकरी ॥
वहोतमोंजतिनग्रागेंधरी ॥ ३४ ॥ वहुरिव्यासकीपूजाभई ॥ संपूरन
दीनी
प्रथिनवरई ॥ तवैव्यासराजासोंकही ॥ जोतुमहेमकोंमहीं ॥ ३५ ॥ य
हपथमीलेतुमहीराखो ॥ हमनुहइकछुग्रोरनभाखो ॥ कंचनमै
ररतनकेहेरा ॥ ग्रानिकिएजगिमैंतिहिवेरा ॥ ३६ ॥ सोसवहीवि

नकौंदीए ॥ औरकहतहैसोदतकोरे ॥ एकएकरथएकएकहाथी

दसदसघोराहीए साथी ॥ ३७ ॥ दसदसनारहेमकेहीए ॥ सेरपचीसमा

रएककीए ॥ सोसौगउसमीपसहोती ॥ चरनहांसेरअकाईमोती ॥ ३८ ॥

औरसंगिदोयदोयदासीकोनी ॥ दछिनाइतीएककौंदीनी ॥ सहस

बीसकौंदीयोदाना ॥ सबकोएकयाहीउनमाना ॥ ३९ ॥ हैवरसहंस

एकसौहाथी ॥ कोटिमुहोरदीनीवनसाथी ॥ राजनकेमुहुंआगें

धरी ॥ पहरावनीसकलकीकरी ॥ ४० ॥ इनतेलीएदुगनुंसाजा ॥ ज

बजनकोंपहराएराजा ॥ द्वारवतीसोंजाइंआए ॥ तेराजासवहीपह

राए ॥ ४१ ॥ रूकमनिआदिसकलतेआई ॥ राजासवहिनकौंपहराई ॥

श्रीकृस्नदेवकीपूजाकरी ॥ सकलसौंजतिनआगेधरी ॥ ४२ ॥ बाम्हं

घनपहरासाथि ॥ जगिफलदयोकृस्नकैहाथि ॥ राजजुधिष्टरसो

जगिकीयो॥ताकोफलहरिजीकोंदीयो॥४३॥नवग्राकासदेवस
वहरषे॥पहोपनकीवर्षावहोवर्षे॥घोरडुंदभीवाजेवाजा॥जै
सोजगिकियोमुनिराजा॥४४॥अरयहकथासुनेजेकाई॥ताकेपाप
हरिसवहोई॥अरतेकोईसुनेसुनावै॥तेनरमनवंछितफलपावे॥
४५॥अस्त्रीपुरुषसुनेजोकोई॥सुनिकेकीसरधाजोहोई॥तेसवही
पुत्रफलपावे॥सरधासोंजोकथासुनावै॥४६॥दोहा॥याअसमेधा
जगिकी:कथासुनेजोकोय॥तजेपापपगापुरषकोः महापुन्यफलहो
य:॥४७॥इतिश्रीमहाभारथेअसमेदकेपर्ववर्नेनेजैमुनिजनमे
जयसंवादेजगिसंपूरणोनामत्रेसठिमोध्यायः॥६३॥ ॥जैमु
निरुवाच॥चोपई॥यहीकथातवजैमुनिकही॥मुनिराजाअव
जोकछुरही॥सवराजनकोपरजाधरी॥सवकाभीमवीनतीकरी॥१

सबहीरिषजनकेपायलागे॥सुनमुषभएकमलकैंआगे॥अरतेरिष

राजासबआए॥तिनसबहिनकौंतहांजिमाए॥२॥तबजेमुनिवरअरु

रिषराए॥कोनभांतिसोंराजजिमाए॥जेमुनिकहैराजयनसुनु॥जी

मनकीविधितुमसोंगुनुं॥३॥कंचनषंभकेमंडपछाए॥चंदमाल्ल

मुकतनकीलाए॥भोमिसुगंधनतेछिरकाए॥अरचंदनकेपटाम

गाए॥४॥वैबैठनकोपटाबिछाए॥अरकंचनकेथारधराए॥साथिसा

छिकंचनकेवेले॥एकएककेआगेमेले॥५॥एकएकतहांझारीधरी॥

सीतलकरिगंगोदिकभरी॥अरउजासकौंदीपगकरे॥दीयदीयरत्त

मे नननतिनधरे॥६॥उनरतननकौनयोउजारा॥आएभीमपरोसनहा

रा॥पहलपरोसनलागेभात॥पीछेषीरपरोसतजात॥७॥पहनपरो

सिपरसेवरे॥चारिभांतिकेकीएघरे॥भांतिभांतिकेषाटमीठे॥और

317

घरपरे कोरे चीर ॥ ८ ॥ वहां रिपरोसी हेम गोरी ॥ और मनोहर गहरि क
सोरी ॥ फिरि आई सव ही तरकारी ॥ मिइरी मटकी दूरी सारी ॥ ९ ॥ तुर
ई और चैचंडा आए ॥ करेराय ताके ला लाए ॥ माडे लो धरि और करे
ला ॥ ३ नम घीत धरे भरि वेला ॥ १० ॥ वरा पुरी माडे लाल डवा ॥ फेनी
और जलेवी कछुरा ॥ और पुरी सी सवै मिठाई ॥ भांति भांति की तिसव
आई ॥ ११ ॥ दही इ थरूरा सव थरी ॥ वासुंदी रप डावरि करी ॥ भांति भां
ति की कढी वनाई ॥ सो सव ही तिन कौं पुरसाई ॥ १२ ॥ भांति भांति के
धरे अचारा ॥ आनि परोसे किते अपारा ॥ याविधि की पुरसाई करी
तव सव हिन कौं अग्या दई ॥ १३ ॥ ऐसी विधि नृप विप्र सवे जिमाए
जो कोई वाज गि मे चलि आए ॥ चारि वरन के कहिए कोई ॥ जीमे
जगि आए ते सोई ॥ १४ ॥ मंदिर मे सव वैठे भराए ॥ तहां दोय द्विज लर

गए॥ तव ऐसे वे विप्र कहाने॥ न्याव हमारौ राजा जाने॥ १५॥ राजजु धिष्ठिर लघे हम आए॥ न्याव हमारौ राज कराए॥ राजा कही कहो द्विज भेवा॥ वग दाय लवैठे रिषि देवा॥ १६॥ अरु वैठे सवही रिषराव॥ तहां करत आए तुम न्याव॥ अव तुम कहो सकल विरतंत॥ तातें होय न्याव को अंत॥ १७॥ तवे विप्र एक ऐसे कही॥ सुनीयो सवै कहत हुं सही॥ इन द्विज पहैलै कीनों हेत॥ मोहि जोतिवा दीयो षेत॥ १८॥ मै जोतत एक भांडौ पायो॥ मैले अपने धाम धरायो॥ सो यह मो सौं भांडो मागे॥ तातें मोहि न्याव सो लागे॥ १९॥ सो या को भांडो नहि होई॥ या को षेत कहत दे सोई॥ तव राजा द्विज सं भाषी॥ अवे विप्र तुम अपनी आषी॥ २०॥ सोरठा॥ विप्र कही सुनि राय॥ मेदीनी धर जोतिवे॥ र्दवलहो इ नजाय॥ सो वह कहि ए राज को॥ २१॥ चौ०॥ तव श्री कृष्ण कहत है सोई॥

319

जै॰ स्व॰
१६०
320

सोयहन्यावआजनहिहोई॥ चुकिहैन्यावतीमरैरहैंना॥ अवनहिचुकैओरविधिविना॥२२॥ तवएहोईब्राह्मनलरिहै॥ चोरीगहिगहिमंडउघरिहै॥ आपआपमैमंडफोरिहै॥ तवेइहांकोंवहोरिहोरिहै॥२३॥ होईदिजतवऐसेंमेवो॥ तवतुमइनकोन्यावचुकैवो॥ आधोआधोइनकोंद्यावो॥ ऐसेंइनकोंन्यावचुकावौ॥२४॥ तवश्रीकृस्नवहोरिकैकही॥ अवकलिजुगआवतहैसही॥ देषेराजापुनिपाषंड॥ धर्मकर्मकरैनवषंड॥२५॥ विप्रआचारधर्मनहिकरिहै॥ तजिसुकर्मकर्मविसतरिहै॥ धर्मातमाहोयजोकोई॥ अरतेसांचकहतहैसोई॥२६॥ इनकोंसवहीदोषलगावै॥ राजाऐसेंकलिजुगआवै॥ तेपापीपाषंडीआहि॥ कलिजुगपुरषमानिहैताहि॥२७॥ जवाषेलतनकरतअनीति॥ ताकोंसवकरिहैपरतीति॥ याकलिमे

यह अधर्म वाढै ॥ मह है तारी की अग्या छाडै ॥ २८ ॥ तिन कौ वस्त्र एक न हिलावै ॥ बिसां वी दस्नी पहरावै ॥ कन्या की विक्री तव करिहै ॥ द्रवि लेय अपने घरि धरिहै ॥ २९ ॥ सोरठा ॥ सुनि कलिजुग की बैन ॥ रिषि राजा सबही डरे ॥ श्री लल्लक हे ऐ वैन ॥ सुनत अवै कांपन लगे ॥ ३० ॥ चौपई ॥ राजा जुधिष्ट्र तब तहां आय ॥ बगदाय लश्कै रिषिराय ॥ पिता पुत्र कब हूं जुध भयो ॥ बगदायल फिरि वन सों कह्यौ ॥ ३१ ॥ राम चंद्र सुत लव कुस भये ॥ ते वन मांहि विषै मे रहे ॥ तिन तौ वाज जग्य कौ लीयो ॥ तब वन पिता पुत्र जुध कीयो ॥ ३२ ॥ राम चंद्र लव कुस जुध भयो ॥ सव जानत मैं सो न वकह्यो ॥ त्रेता माहि जुध वन ठांन्यो ॥ तिहूं लोक कंप्यो भय मान्यो ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ तब जैमुनि रिषि कहत है हो जनमेजय राय ॥ कथा सुनत सरधा सहत ः पाप सकल तिहि जाय ॥ ३४ ॥ इति श्री

321

महाभारथेअश्वमेदकेपर्वेवर्ननेजैमुनिजनमेजयसंवादेचौसठिमोध्याय॥६४॥ ॥जैमुनियोवाच॥ सोरठा॥ सुनिजनमेजयराय॥ सवजगिसंहरनभयो॥ तवएकन्योराआय॥ कहनलग्योवाजगिमै॥१॥ चौपई॥ न्योराएकओमितैनिकस्यो॥ आयजगिमेवातनअकस्यो॥ अर्धेसरीरहेमकोकह्यो॥ आधोचर्ममेदकोरह्यो॥२॥ तवराजाकीसभामझारी॥ कहनलग्योन्योराउरमारी॥ तववैठेतहांसंकनहिमांनी॥ न्योरासवमेवाततवषांनी॥३॥ न्योरावोवाच॥ अहोराययहजगितुम्हारौ॥ कौंनकांमकोभयोहमारो॥ कहाजगिकीयोतुमकैसो॥ सोमैताहिसराहूंजैसो॥४॥ अैसैजगिकोंनिंदतभयो॥ कहीअंगमाग्रैमोरह्यो॥ सवजगिमैलेटनतूंफिर्यो॥ पैकंचनवपनाहिनथर्यो॥५॥ सववित्रनकीझूठिनमांही॥ हेमसरीरभै

मोनांही ॥ फिरिन्योरातवगैसेकहै ॥ राजासुनैंजगिकीयहै ॥ ६ ॥ जगि
भयोसुकनप्रस्तविप्रकेरौ ॥ तासरभरह्वैनहितेरौ ॥ राजाकहीकीं
नयहन्योरा ॥ मोजगिकोंनिंदतइहठौरा ॥ ७ ॥ तवसवविप्रनन्योरा
वूझ्यो ॥ जेसोजगिनेहिनहिसूझ्यो ॥ सुकनप्रस्तजगितेंजुस
राह्यो ॥ यहजगितामनमेनहिआयो ॥ सुकनप्रस्तविप्रकोंहेंआ
हि ॥ रहनकहांसोहमहिवताय ॥ न्योराकहीसुनुरिषसवै ॥ ताकी
कथाकहतहेंअवे ॥ ९ ॥ दोहा ॥ विप्रएककुरषेतमेंः रहेंतपस्याका
जे ॥ ताकीगाथाकहतहेंःसुनोंसकलरिषराज ॥ १० ॥ त्रियापुरुष
घरपुत्रहेंः औरपुत्रकीनांमः करततपस्यारमदमेःसुकनप्रस्त
हेनाम ॥ ११ ॥ चौपई ॥ किरषीषेततवेलुनिजाय ॥ वकुरिचुंगस
मीचुगिजाय ॥ पीछेआसोवीननजैहे ॥ कनकाकनकातवचुगि

जै॰स्व॰
१६२
324

लैहै॥१२॥बीनतबीनतजायपषवारो॥षेवेजोगिहोतहैसारो॥
तबैभूंजिकेसततवाकरै॥तबवैपांचहिंसाकरिधरै॥१३॥आरि
हिंसातोवेमिलिषैहै॥पंचमहिंसाऔरकोछैहै॥ऐसीभांति
वहोतदिनरहे॥करततपस्यावनमेभए॥१४॥एकदिनाभोज
नकीवारा॥जीवनवैठेमिलिपरिवारा॥श्रीहरिविप्रकोरूप
बनायो॥वनकेसतदेषनकोआयो॥१५॥तबवनआदरकरिवै
सारे॥अपनीपर्मकुटीलेआए॥पदपरछालिजत्तनवहोकी
यो॥पचवाहिंसाबांनकौंदीयो॥१६॥सतवाषायवैठिकेरह्यो॥
तवैरिषीसुरऐसैंकह्यो॥कहोगुसांइसतवाषायो॥वनकहीमे
नांहिअघायो॥१७॥तबवनहिंसाआपनोंदीयो॥वहुरिविप्रकोप्र
छनकीयो॥अबसंतुष्टभएमनमांही॥बोलेविप्रकहीमेनांही॥१८॥

तबब्रनदयाहिएमैंआंनी॥अपनोंहिसादयोरिषरांनी॥एछीए
रनभएगुसांई॥कहेअघाएव्रनकहिनांही॥१९॥रीनोंपुत्रआपनुं
हिसैं॥एछतननवैवैसकौवैसो॥ऐसैंहिसापांचहूखाए॥नवरा
छीतवकहीअघाए॥२०॥अवसंतुष्टहोयकछुपायो॥नववा
लेमैवहौतअघायो॥नवगोविंदतहांव्रहकीयो॥धर्मरूपहो
यदरसनदीयो॥२१॥अरवनकीअस्तुतिवहोकीनी॥वहोरिवा
तवनसौंकरिलीनी॥मेंहूधर्मइहांचलिआयो॥तुम्हारोसत
देषनकौंआयो॥२२॥वहोतसकतदेष्योतुममाही॥तुमसेदा
ताकोउनांही॥ऐसीवाातविप्रकौंकही॥वर्षोपहौपाविप्रपैमई॥
२३॥च्यारिविवांनचहूंकौंआये॥सुरगलोककौंविप्रसिधाये॥
सहतकुटंबसुर्गकौंगयो॥मनवंछितफलपावतभयो॥२४॥

325

जै.श्व.
३२६
326

सुकनप्रस्तकीकथासुनाई॥आगेकहुंसुनुरिषराई॥तवमेवीलुमाहतेनिकस्यो॥जीमनठौरजायकेअकस्यो॥२५॥तहांजहांवनजीमनकस्यो॥तहांतहांलोटतफिस्यो॥तहांतहांलग्यौजूठिकोपांनी॥कंचनदेहभईतवजांनी॥२६॥आधोअंगचर्मकोरह्यो॥आधौकंचनकोह्वैगयो॥अहोराजअबसोजगिहोई॥ऐसोऔरकरैनहिकोई॥२७॥सोयाजगिमेलोटतभयो॥सिरकेरोमटूटिसवगयो॥पैकंचनकोनाहिनभयो॥तनवैसेकोवैसोरह्यो॥२८॥सोयहवातन्यौरनेकही॥सकलसभाचककतहैरही॥तवअपनेविलमाहीगयो॥जगिकगर्वसकलहरिलयो॥२९॥दोहा॥कहीगर्वकोउनाकरौः कहूवातकोकोय॥कहतभयोन्यौरातहांः गर्वनहीथिरहोय॥३०॥इतिश्रीमहाभारथे

इ॰ मरकंडेपुरानेजैमुनिजनमेजयसंवादेन्पोगयाकिनोनामपैंसी
मोध्यायः ॥ ६५ ॥ ॥ जैमुनियोवाच ॥ दोहा ॥ मुनिनृपइकअचिरजअधि
कउत्तिमचरित्तमहेत ॥ भयौसभामधिधर्मकेमुखअवसानसमेत ॥ १ ॥
चौपाई ॥ संतोषेविधिवतमहिदेवा ॥ ज्ञातिबंधुसंबंधिसमेवा ॥ दीनअंधअरुक्रप
णादिकजेते ॥ कियेमनोरथसफलसमेते ॥ १ ॥ कीरतिसबदिसअधिअ
धिकाई ॥ नभतेंसुमनवृष्टिसुरलाई ॥ नवदर्पिनऊयधर्मनरेशा ॥ पुरयौमम
मुखकाजअशेषा ॥ बिलतेंनिकसिनकुलइकतवही ॥ अंगअर्धकंचनजगम
गाही ॥ वज्रसमाननादतिनकीनो ॥ द्विजनरपतिनत्रासवऊदीनो ॥ मनु
जवाकउइमिकह्योसुजाना ॥ नहिमुखसक्तुप्रस्थसममाना ॥ उंछाहत्तिव
सिकुरुषेतं ॥ विप्रसक्तुमुखकीनमहेतं ॥ मुनिइमिवचननकुलकेतवते ॥
अचिरजवऊतआविद्विजसवते ॥ मिलिद्विजवरविस्मयचितलाई ॥ १ ॥

नमयेनकुलछिगजाई ॥ विप्रऊचुः ॥ इहमखमध्यकहांतेआयो ॥ कव
नेपरमफलतवमनभायो किहंप्रकारहमतोहिसुजानैं ॥ जोतुव
हममखनिंदवखानैं ॥ वेदविहितमखकीनअशेषं ॥ विविधिविप्रवर
न्यायविशेषं ॥ निगमागमविधिविज्ञपुराना ॥ हजेहव्यसहितमनमा
ना ॥ मंत्रसवन्हिहोमविधिकिन्हिय ॥ श्रद्धासहि[illegible]गान[illegible]दरिन्निय ॥
विप्रवर्ग्यवित्तदानसंतोषे ॥ क्षत्रियजुद्धशास्त्रविधिपोषे ॥ शूद्रापित
रपालनविधिवनिजं ॥ शूद्रवाममनकामनिजनिजं ॥ आवाहनवि
नशानप्रकारा ॥ तोषेसबजननसहपरिवारा ॥ ज्ञातिबंधुसंबंधिस
माजा ॥ कीनेतुष्टविनयकरिराजा ॥ सुंदरहविषपुण्यविधिदेवा ॥
मरणगनरक्षाकरिसेवा ॥ कहऊनरनरहहजइविधाना ॥ विप्रसभा
मधितजिअभिमाना ॥ सत्यवचनबुधिवंतमरूपं ॥ दिव्यसरीरविलो

329

क्रिअनरूपं विघन मैं मन संग्रतिपाई॥ कहहु तत्व तैं जो ग्यस भाई॥ या
प्रकार सखों न हैं विप्र॥ बोल्यो नकुल ह सत ग्रतिछिप्र॥ नकुल उवा
च॥ यम याली यह सुषान होई॥ कहीन मैं कछु गर्वित जोई॥ जो मैं कह्यो
सुसब तुम जानो॥ सुन्यो तुम न कछु मषान मानो॥ सो न रे मन नव जाग विधा
ना॥ मत्तु [illegible] कनिं नहिं समाना॥ कुंछेहर तिकुरुछेत्र निवासी॥ ग्रतिथि
भक्त प्रभु पद विश्वासी॥ चित उदार द्विज चरित उमंसा॥ वरनं कुं सुन
उ विप्र ग्रसंसा॥ मै निज ग्रनुभव करि इग देषो॥ उत्तम ग्रहु तरूप वि
शेषो॥ धर्म्मशील द्विज वहु तनिकेतं॥ उत्तम धर्म्म भ मिकुरुछेतं॥ कुंछ
हेतिह इक द्विज तह है कोऊ॥ हृतिक पोतक रत निते सोऊ॥ जाया सहित पु
त्र सुत जाया॥ करत तप स्यास त्य सुभाया॥ इंद्रिय जित द्विज रह छि द्विज सा॥
सुब्रत दिवस षष्ट ग्रव शेसा॥ सहित कुटुंब सदैं इक वारा॥ भोजन कर

जै०ख०
१६५
330

नअतिथसनकारा॥ एकुसमैदुरभिक्षदुरंता॥ नहिसंचितभोग्यनतुंगा॥
औषधिलताहीनतिहंदेशं॥ द्रुमहीनद्विजभयोनिवेशं॥ वासरषट
भोगअवसाना॥ विनभोजनकसनतुविकलाना॥ द्विसकंध्रलइकव
स्यजवनकौ॥ दीकौसिसविभागसवनकौ॥ भोजनकरततहांद्विज
एका॥ आयोकोउअतिथिकेभेषा॥ करिपूजाविधिवतसनमाना॥
बोल्योवचनप्रियसमाना॥ विप्रउवाच॥ अवमेधर्मअनुग्रहकीनौ॥
अतिथिसमैंतुमदरसनदीनौ॥ नवआगमममसुदसुधिकायो॥ जि
मिनिदाघश्रमजलवरसायो॥ द्विजवरतवआगमममगेहं॥ कियै
सनाथमोकुटुंवसदेहं॥ कुटियपवेसकरियमहिदेवा॥ करौंजथा
रथतवपदसेवा॥ तेगहगेहवंनशुभसाजा॥ जहांअतिथिनुमस
रिससमाजा॥ मारगश्रमितकरतविश्रामं॥ निजगृहमेसिसक

लसुषधामं। अतिसभागपने गेहि विधाना। विनाइच्याहृ सहसन
माना। प्रतिदिन अतिथि सेवजे करंई॥ विधिवत अर्घपाद्य अनुसरं
ई॥ आसन भूमि उदक सह मानं॥ मधुर वचन मनहुन सुखदानं॥
सतपुरूषन केगेह व संता॥ मिलत सदा अतिथ्य नुरंता॥ आरत श
रणश्च मित मग श्रामन॥ तृषित उदक छुधवंत सुभाशन॥ हग म
न मधुर वचन उत्थानं॥ अनुगमन पकी जियअरचा नं॥ नकुल
उवाच॥ दोहा॥ कहि इमि वचन द्विजाति तव विधिवत करि तिहिं
सेव॥ निजविभाग प्रमुदित दयो लखि निन इइ महिदेव॥ विप्रपति
कमन नुछुधित अस्थिचर्म अवशेष॥ कंपत है इत तपस्विनी
इमि कहि वचन विशेष॥ ब्राह्मणउवाच॥ चौपई॥ उदासीन
कि मिधर्म सुजाना॥ विद्यमान सकु सुपियप्राना॥ अतिथि

जै०ख०
१६६
332

सुरत्रिहेन मम भागं ॥ हो जियमहितभक्ति अनुरागं ॥ विप्र उवाच ॥ कीट पतंग मृगादिक जेते ॥ सुंदरि कानन वासि मम तेते ॥ नेहत्रिय पालन अनुकूला ॥ करुन वचन जेहि निपट निकूला ॥ धर्म अर्थ कामादिक सारे ॥ सुरष्या कुल तनु धारे ॥ तिय अधीन स्वर्गादि निवासं ॥ निज स्वातनम पितृ लोक विलासं ॥ तातें भोजन सकुसु कीजे ॥ नहिं आगम कछु चित्त धरीजे ॥ मम निहं शापा यक लाली ॥ काहु कथित सुंदरि ममवाणी ॥ जो नर अधम न पोषन वाला ॥ लहेन जग कीरति विशाला ॥ नरक शापि अब सान क देहक ॥ नहि मम बचन मानि संदेहक ॥ ब्राह्मण्युवाच ॥ धर्म समान विधान विधाता ॥ रचे जगत नर पति विख्याता ॥ तातें धर्म बाध नहि कीजे ॥ जगत मसजन्म सफल करि लीजे ॥ नारिन के पति ही परधर्मा ॥ भरता परम देव शुभ कर्मा ॥ पतिही

परमबंधुपरधामा॥ पतिहीपरलोकगतिकामा॥ धर्मअर्थजसकामना
कगति॥ होतअसन्नखामिनिस्चयमति॥ जोतियमनवचकायपतिस्र
त॥ करतसेवबडभागनिपतमत्त॥ इहजसपावतसोसरकामा॥ अंत(
हिदेवलोकबिश्रामा॥ तुमतैंअथमभोजनहिंकीनो॥ कबहुस्वामिय
हहकुतनलीनो॥ जानिनेममकीजेराया॥ देहुसकुद्विजसत्वसुभा
या॥ नकुलउवाच॥ दोहा॥ सुनिद्विजइमितियकेवचनदियेशक्तुमिन
आनि॥ अतिथितिन्हैंकरिभक्षतभआनमतसिनहिमानि॥१॥ पेखिद
रितद्विजवरतनयधर्मविज्ञानतगात॥ बोल्योवचनविवेकयुतनअमु
दितमननिजतात॥ विप्रपुत्रउवाच॥ चौपई॥ अतिथनभिहेतममम
भागा॥ दीजिजनकसहितअनुरागा॥ अतिथिआसकरिजिहघरआवै॥
केनिरासफिरिउलटिसिधावै॥ निसफलतहैंग्रहस्थकेकर्म्मा॥ बिनसत

सकलजन्मकृतधर्म्मा ॥ अन्नदानहरिहितजोदीजै ॥ आतमदुःखदेतअ
भलीजै ॥ तेभगवंतलोकविश्रामं ॥ पावतपुनंअमरपतिधामं ॥ संचितवि
त्ततेदृकिहैंकाजा ॥ हृषितचित्ततपस्यासाजा ॥ विनसतकारअतिथिजिहं
घरतें ॥ अतिनिहतनिजमगअनुसरतें ॥ तेनिजपातकदैकरिजांई ॥ ता
सपुंनजोआपगहांई ॥ क्षुधितत्रषितपथश्रमकिनजुआवै ॥ अतिथिसुम
जितहिगतिपावै ॥ यातेनिजविभागतजिलोभा ॥ दैंकुअतिथहितलहि
हैंसोभा ॥ अन्नदेयजोअतिथिमहेतं ॥ सोउत्तिमगतिलहतसमेतं ॥
पितोवाच ॥ आयुवर्षशतयद्यपिहोई ॥ तद्यपितममबालकसोई ॥ बाल
ककोंबुधवऊतसतावै ॥ भोजनविलंबपुत्रकौंलावै ॥ सुतकरिउर्द्धलो
कगतिपावै ॥ श्रुतिपुरानमतिबुधसमुझावै ॥ तवपालनममउचित
सुतातें ॥ बुधरक्षितसंततनतनुजातें ॥ वऊततपस्याविधिवतसाधी ॥

च

ग्राकृतिमंत्रवक्तिग्राराधी॥ संततिनसुतममसुभ॥ वामा॥ मोहिन
ग्रावेसत्तुकौत्रासा॥ पानकवंतग्रसजनजे है॥ डरपतमत्तुत्रास
तैंनहैं॥ जेकृतेकृत्यपुरुषजगमांही॥ थिपवतमत्तुत्रासकछुनांही
पुत्रउवाच॥ दोहा॥ बालपसीपालनपितासुतहिकहतइमवेद॥ ३
मेरवगसुनजनककौंदीजेसकलुग्रखेद॥ नकुलउवाच॥ कथितराम
द्विजसकुंगहिग्रतिथिहितकियदान॥ भोजनकरिसर्वसुतिन्हहेद्वि
जनतुष्टिसनमान॥ १॥ द्विजसुतपतनीमुदितसबसुखशुरहिवचन
कहंत॥ ममविभागवडभागयहदीजियग्रतिथिनुरंत॥ श्वसुरउवा
च॥ चौ०॥ बालवधूसिसुतपतनिसधर्मा॥ करसितनतनब्रतनियमस
धर्मा॥ वंसवस्तृतिहेतहितवंती॥ पालनजोग्यपुत्रिपत्तिवंती॥ गुरुप
रिचर्योमनवचकाया॥ नियमपतिव्रतसत्यसुभाया॥ तुहिसुखमलि
नदेखिसमहदयं॥ दुखितहोतउतिदिवसग्रतिशयं॥ पुत्रवधूवाच॥ तु
ममसस्वामीकेस्वामी॥ देवदेवनववरननमामी॥ गुरुगौरवसबवि

दोहा

जै.भा.
१६८
336

धिसुषरागा॥ कहहुनरापिवचनविकलाना॥ रह्योजोगपइमिचिं
तिगुसांई॥ नवपरमुहहुभक्तिअधिकाई॥ हेडुशक्तुभगावंतसपे
मा॥ दीनसमुक्तिमुहिकरियेछेमा॥ नकुलउवाच॥ तवैसकुद्दि
जवरलैरीमै॥ अतिथिलैरितिनभोजनकीनै॥ हद्दतपसीमह
परिवारा॥ हितमान्योमनभोनविकारा॥ धर्मकर्मनियतानमह
पं॥ अंतरशुद्धभावहिजजान्यो॥ अतिथिडीतिनवह्मचनवषान्यो
अतिथिरुवाच॥ मैद्विजरूपीअतिथद्विजेमा॥ आयोनोहिपरिछु
विशेषा॥ इंद्रियरमनतपस्यादानं॥ रह्योशोचअतिथसनमानं॥ स
त्यष्ठमारुज्ञानविज्ञानं॥ ममममतिनगविदितप्रधानं॥ तानेशुद्ध
भावधरिचितं॥ रह्योडुष्टहत्रिअन्नसमितं॥ अवनुमसकलसहि
तमनमोदं॥ चतुराननपदलहहुविनोदं॥ दिविसवदेवअप्सर
ऋषिजेहै॥ हानअसंसतविस्मिततेहैं॥ अहाकरियनिजनिज
भागं॥ सक्रप्रस्थाजागअनुरागं॥ तातेभयोपहुमिजसख्यातं॥ सार

दरं अधिक उपमातं ॥ आज्ञा निबड़ि वेदन पसेवा ॥ सफल यज्ञ अमुदि
त सब देवा ॥ जिहि नरनै इमि भाव सु पायो ॥ सर्व्व जंतु मधि सम दरसा
यो ॥ नकुल उवाच ॥ दोहा ॥ ताही समय नरेंद्र वर कहत धर्म्म इमि भे
व ॥ द्विज मस्तक पर सुमन शुभ बरषे सुर मग देव ॥ १ ॥ देषि सु मन वर
षा अति थिर बोल्यो पुनि इमि बैन ॥ भयो कृतारथ द्विज वर सुलह उ
त्तम पद ऐन ॥ चौपई ॥ तेज प्रभाव बुधि बल धीरज ॥ नाशन छुधा शक्ति
तन वीरज ॥ अजित ताहि जो जीतै कोई ॥ जीतै स्वर्ग अवसि द्विज सोई ॥ जा
या सुत सुत जुवतिसने मं ॥ आन मत था सुद्ध सत्य जपे मं ॥ धर्म्म ग्रंथ हि नये
नुम त्यागे ॥ जिमि लक्ष्मण अति थिर प्रीति अनुरागे ॥ विविध वित्त दानादिक
साधे ॥ धर्म्म न तुझ मंत्र आराधे ॥ न्याय लब्ध धन करि जिमि मोदं ॥ हो
त सुधर्म्म समस्त विनोदं ॥ श्रद्धा विरह कलुष परकासं ॥ श्रद्धा करि पात
क कुइ नासं ॥ श्रद्धावंत त्याग अघ करिहै ॥ जीरण तुचा सर्प्प परहरिहै ॥

जै० अ०
१६६
338

श्रद्धारहितयज्ञनाविनदानं॥ कहतनष्टसबवेदपुरानं॥ श्रद्धासहितदी
नुअलदानं॥ अक्षयहोतस्वर्गसोपानं॥ धर्मशीलनपरंतिसुदेवा॥ स
र्वसत्यागिकरीहरिसेवा॥ श्रद्धासहितसलिलतिनदीनों॥ मत्युलोक
तजिहरिपदलीनों॥ निजशरीरआमिषशिविराजा॥ देपरहेतकीन
शुभकाजा॥ सर्वदुःखनिरहितसुरलोकं॥ प्रमुदितरह्योविमलमति
ओकं॥ देषिविप्रयहदिव्यविमानं॥ आपनतवहितनभसुरआनं॥ ग
मनकरहुदिविसहपरिवारा॥ करिहैंअमरअधिकसतकारा॥ नकु
लउवाच॥ दोहा॥ कश्योपमहरममुदितद्विजस्वर्गलोकगतिकीन॥
गमनअनंतरमैंनिकसिविलतैंवहथललीन॥ १॥ दिव्यसुमनसं
कुलसलिलसक्तुसहिततहंदेषि॥ निजअवयवलोट्यो॥ प्रवनि
आनंदहेतविशेषि॥ चौपाई॥ धर्मकणमुनिनिजप्रभाव॥ स्वर्ग
प्रसनपरसिचितचावं॥ अंगअर्धममकंचनरूपं॥ भयोतवेदे

यो द्विजभूपं॥ होयके मिकंचन अवशेषं॥ यह चिंता चित वसत वि
शेषं॥ कानन नतपती रथ जपजागं॥ भयो भूप अति यह अनुरागं
॥ बुद्धिवंत सुत धर्म नरेसा॥ अश्वमेध मख सुन्यो विशेषा॥ अधिक
श्रम करि मैं इहं आयो॥ नाहि अर्ध कंचन तन पायो॥ जैमुनि
रुवाच॥ दोहा॥ धर्म्मसभा मधि द्विजन सों कहि निज चरित
नरेश॥ गयो नकुल जिमि आगमन देषत विप्र अशेष॥ सोर
ठा॥ यह सब कह्यो चरित्र जो तुम अश्वक ह्यो नृपति॥ अचिरज
अधिक विचित्र॥ अश्वमेध मख मैं भयो॥ दोहा॥ ताते संसय
न करिय कछु भूपति जज्ञ विधान॥ बिन हू मख मुनि अस्तुचित्त
रागगये वैठि सुर जान॥ सोरठा॥ सर्व जंतु हिंन वैन॥ सत्य सरल
संतोष चित॥ इंद्रिय सकल जयंत॥ तप छिम ताथु भगति मिल
त॥ इति श्री महाभारते अश्वमेधिके पर्व वर्णते जैमिनि जनमे
जय संवादे नकुलोपाख्याने षट्षष्टितमोध्यायः॥ ६६॥

जै॰ म॰
७७०
340

जनमेजयउवाच ॥ चौपई ॥ कौंनवहैमुनिनकुलसरूपं ॥ कं
चनउत्तमअंगगअनूपं ॥ कहनभयौमानुषवतवचना ॥ कहौ
प्रश्नममकरिशुभरचना ॥ जैमिनिरुवाच ॥ चौपई ॥ सुनहु
नृपतिजोनकुलचरित्रं ॥ जैसेमानुषवचनविचित्रं ॥ पितरश्रा
द्धसंकल्पसुसाजं ॥ किएजमदग्निप्रथमऋषिराजे ॥ सुरपुर
तैंसुरधेनुसिधाई ॥ तासुछीरमुनिलीनदुहाई ॥ शिष्यनवीन
धारिहठभाजन ॥ आश्रममधियआन्योगुरुसासन ॥ क्रोधआय
पयमहिमैंडारयो ॥ मुनिपरिछनमनमांहिविचारयो ॥ त्वजमद
ग्निकोपसोजान्यो ॥ तापरंचककछुभनआन्यो ॥ प्रघटिकोपतहं
मूरतिवंतं ॥ पानिजोरिबोल्योतपवंतं ॥ भृगुवरिष्ठनुमनैंमैंजीसो
प्रतिरुष्टभृगुकुललोकप्रतीत्यो ॥ रुषावादसंसारवषान्यो ॥ मैं
नवचरितप्रभावपिछान्यौं ॥ करौप्रणतिप्रभुपदजुगतोरे ॥ क
रियेकृपाछमियअघमोरे ॥ जमदग्निरुवाच ॥ भयोप्रगटतू

ममहंगत्यागें॥ जाउकुशलममतपभयत्यागें॥ कहुनमैंतवग्रपकृति ३५१

कोपं॥ जदपिअग्याविधिकरियविलोप॥ जिनकेग्याइहेतपथ्य

ग्यानं॥ तेहपितरहैंहितवग्यानं॥ सुनिमुनीशकेवचनविनीता॥ नृ

तरधानभयोभयभीता॥ पित्रशापतेंनकुलशरीरं॥ लहोकोपतव

ग्रतिहिगधीरं॥ पितरमुदितकियकहिनिजतापा॥ किहिविधिहो

यमुक्तममशापा॥ पित्रनकहोधर्म्मनृपजागा॥ करुसमीपरुषिन

केंग्रागा॥ जायकुंछहिनिकथासुनेहे॥ नवतुशापमुक्तिकोपैहे॥ पि

त्रवचनसुनिमरवमहदेशं॥ धर्म्मविपिनथलघुण्यग्रशेषं॥ कुलद

रदशाइछ्याधरिचेतं॥ धर्म्मजज्ञग्यायोसुहेतं॥ शक्रुअस्यहतानसु

नायो॥ धर्म्मपुत्रमरवगर्हगवायो॥ शापविमुक्तभयोतवकोधं॥

देषतनृपमुनिवर्गसबोधं॥ रहचरित्रतहाभयोनरेशा॥ नकु

लरूपधरिक्रोधविशेषा॥ देषतहगहमरोति हैथानं॥ भयोतेंव

वहबंतरधानं॥ श्रीभगवंतकसपरइम्वार॥ गदाचक्रधरिशं

जै॰ म्व॰
७७१
342

सुखसुभकर ॥ संहरतिपरजंतकृपाला ॥ मख रक्षा हरिकीनविशाला ॥ दोहा ॥ महावाकुमरवा छितिकरि पांडवकृतसनमान ॥ नापुरआइतनवकुदिवसवसेमुदितभगवान ॥ इतिश्रीअश्वमेधिकेपर्वणिनकुलोपाख्यानेनामसप्तषष्टितमोध्यायः ॥ ६७ ॥ ॥ जैमिनिरुवाच ॥ दोहा ॥ तवश्रीकृस्नादिकसवैजादवविविधविधान ॥ धर्मनृपतिग्रेहेसुमति छितिपतिवकुसनमान ॥ जादवपतितवद्वारिकासहवलकीनप्रयान ॥ लहिनदेशश्रीकृस्नकोगयेनृपतिनिजथान ॥ सुखसंजुतिमहिपतिअखिलपुरवरपुहुंचेजाय ॥ धर्मराजपालितप्रजाप्रमुदितसुखसरसाय ॥ अश्वमेधपर्वसुयहेतवहितकहौनरेस ॥ सुनकुरुवैयाकेसुनेजोफललहतविशेष ॥ चौपई ॥ दशशतसुरभिकरियजोदानं ॥ विधिवतफलहोतप्रमानं ॥ सोफलसकललहतमतिवंतं ॥ अश्वमेधसुभचरि

तसुनंतं॥ ताते सत अनरस्तु भकीजे॥ महित सुरभि पुस्तक दि
जदीजै॥ कन्या गोरि विवाह विधानं॥ हषउत्सर्ज्जन सुकन
सुजानं॥ अश्वमेध अध्याइक सुनियै॥ तेविय सुकृत सहश
तागुनियै॥ जोवनहय मुख नरपति चरित्रं॥ सुनत सुनावत पु
परम विचित्रं॥ कलिकृत दोष लिपे नहि राजन॥ अनल है
सुरलोक समाजन॥ लहे विप्र विद्या वर वेदं॥ वित्तअर्थि वि
तलाभ अछेदं॥ छत्री सूरवीर संग्रामा॥ आपति होत विजय वि
श्रामा॥ पुत्रहीन सुत लहे नअनूपं॥ रोगी रोग रहित शुभरूपं॥
सकल पुरान पाठ फल जो है॥ भारत कथा श्रवन तैं सो है॥
सब भारत सुनि फल जो लहियै॥ सो फल अश्वमेध सुनि ल
हियै॥ दोहा॥ पर्व समापति समय मैं सुनि श्रुजन नरपाल॥
श्रवन पहै जिहं विधि सफल श्रीपति होत कृपाल॥ विप्र

जै॰ अ॰ १७२ 344

हेतिअंजननविविधवसनअलंकृतिमेय ॥ स्वर्णकर्षदशरचितहयविधिवतपुनितिहँदेय ॥ यथाशक्तिसोकीजिय ॥ जोविधिकह्योअशेष ॥ दानदेयद्विजवरनकोंलहनविपाकविशेष ॥ पर्वचतुर्दशशुभकहेमैंनवहितनरपाल ॥ आश्रमवासमुपर्वअवसुनियेबुद्धिविशाल ॥ इतिश्रीमहाभारतेजैमुनिजनमेजयसंवादेअश्वमेधकेपर्वर्वर्णनिनेनकुलोपाख्यानेनामअष्टषष्टितमोध्यायः ॥ ६८ ॥ ॥ मीतीमाहवदी १४ संवत १८८५ कालिषतंसीसराम ॥ श्री ॥ ॥



